पंद्रह रुपए

वर्ष : 2 अंक : 22
बृहस्पतिवार, 21 जुलाई, 2022

RNI-UPHIN/2021/79954

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार–पत्र

आजादी का 75 अमृत महोत्सव

सफ़र अभी जारी है

ऊर्जावान लेखिका : रश्मि अग्रवाल

प्रकाशनाधीन

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क
9897742814

दर्दीला गीतकार
रामावतार त्यागी

अमन कुमार 'त्यागी'

हमारी संस्कृति और हमारा पर्यावरण
(शोध आलेख)

अमन कुमार 'त्यागी'
डॉ. अमित कुमार

वृद्धावस्था
(सामाजिक अध्ययन)

रश्मि अग्रवाल

स्थापना 14 फरवरी, 2021 Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703
रजिस्टर्ड 08 जुलाई, 2021

YouTube OPEN DOOR NEWS ओपन डोर Blog-opendoorweekly.blogspot.com

आपकी किताब आपके द्वार...

प्रकाशन
ओपन डोर
नजीबाबाद

समाचारपत्र भी
पुस्तकें भी

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

पंद्रह रुपए

RNI-UPHIN/2021/79954

MSME-UDYAM-UP-17-0002703

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

वर्ष : २ अंक : २१ बृहस्पतिवार, १४ जुलाई,२०२२

संपादक
अमन कुमार 'त्यागी'
9897742814
amankumarnbd@gmail.com

प्रबंध संपादक
सौरभ भारद्वाज

प्रतिनिधि
डॉ. सुशील कुमार त्यागी 'अमित' (हरिद्वार)
उपेन्द्र सिंह (दिल्ली)
अर्चना राज चौबे (नागपुर)
निधि मिथिल (सतारा)
अतुल शर्मा (मेरठ)

कार्यालय प्रमुख
तन्मय त्यागी

सदस्यता प्राप्त करें

एक साल १००० रुपए, दो साल १६०० रुपए
पांच साल ४८०० रुपए
अंक प्रकाशित न होने की दशा में पीडीएफ मिलेगी

भुगतान करें
Ac- Name - OPEN DOOR, Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD,AC- 368602000000245, IFSC- IOBA0003686 PAN-AABAO7251R

संपादकीय कार्यालय- साई एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद- २४६७६३ बिजनौर (उप्र)

वैधानिक- समाचार-पत्र में प्रकाशित किसी भी सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी लेख/समाचार/कविता/कहानी/विज्ञापन आदि के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र नजीबाबाद होगा।

सभी पद अवैतनिक हैं

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमन कुमार द्वारा आशीष प्रिंटर्स, मोहल्ला मकबरा, नजीबाबाद, बिजनौर से मुद्रित तथा ए-7, आदर्श नगर (तातारपुर लालू), नजीबाबाद-246763 जिला बिजनौर (उ.प्र.) से प्रकाशित।
संपादक-अमन कुमार
मोबाईल नं. 9897742814
Email-opendoornbd@gmail.com
RNI-UPHIN/2021/79954

सम्पादकीय

सफर जारी है ऊर्जावान लेखिका का

भरपूर ऊर्जा के साथ वह अपने लेखन और समाजसेवा में लगी हुई हैं। इतनी ऊर्जा मैंने तो अन्य किसी महिला में नहीं देखी। वह लेखिका हैं यह बात मैं पहले नहीं जानता था। शायद वह स्वयं भी नहीं जानती थीं तभी तो जीवन का अर्द्धशतक पूरा करने के बाद लिखना प्रारंभ किया। शायद यही वजह रही कि उनके बारे में तरह तरह की चर्चा बनी रही। राष्ट्रपति महोदय के हाथों सम्मानित होने के बावजूद उनके आसपास के लोगों ने उन्हें लेखिका स्वीकार नहीं किया। यह स्वभावगत भी है। उनसे पहले स्थापित हो चुके लेखक या कवि वह सीान प्राप्त नहीं कर पा रहे थे जो उन्होंने लेखन की कम आयु में ही प्राप्त कर लिया है। अविश्वास तो आज तक बना हुआ है। कई लोगों के मुंह उनका नाम सुनकर ऐसे हो जाते हैं मानों धोखे से नमक अधिक खा लिया हो। लेकिन वो लेखिका हैं इसमें कोई दोराय नहीं है, किसी के मानने या न मानने से अब उन पर कोई असर नहीं पड़ने वाला है। एक स्थानीय कवि के माध्यम से मेरा उनसे परिचय हुआ। यह परिचय बतौर प्रकाशक था। मैंने उनकी प्रकाशित पुस्तकें देखीं उनके कुछ लेख भी पढ़े। विभिन्न विषयों पर उनकी क़लम चल रही थी। किसी लेखक के लिए विभिन्न विषयों पर थोड़ा थोड़ा लिखने से बेहतर होता है एक विषय पर अधिक पढ़ना और फिर उस पर लिखना। मेरे सुझाव पर लेखिका ने वृद्धावस्था पर काम करना प्रारंभ किया और देखते ही देखते त्रैमासिक पत्रिका 'शोधादर्श' के वृद्धावस्था विशेषांक का विशेष संपादन कर उन्होंने अपनी मेहनत का लोहा मनवा लिया। अब लोगों ने उन्हें लेखिका ही नहीं बल्कि इसी दौरान वृद्धावस्था पर वृद्धों से साक्षात्कार करने पर उन्हें बतौर पत्रकार भी स्वीकार कर लिया है।

लेखन कोई साधारण कर्म नहीं है। इसके लिए डूबकर मेहनत करनी पड़ती है। रश्मि अग्रवाल के अन्दर एक बेहतरीन लेखक अभी भी हिलोरे मार रहा है, जिसका बाहर आना अभी शेष है। उनके लगातार सक्रिय रहने और लिखने की भूख देखते ही बनती है। नए विषयों पर क़लम चलाना और बात है मगर उन्हें प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करना और बात। रश्मि अग्रवाल और उनके लेखक को जितना मैं जान पाया हूं उससे तो यही प्रतीत होता है कि वह महिला होने के बावजूद अच्छा लेखन कर रही हैं। उनके पति और बेटे का उन्हें पूर्ण सहयोग प्राप्त हो जाने के कारण उनकी क्षमता में वृद्धि हो रही है। ऐसे में एक कर्मठ लेखिका को प्रोत्साहन स्वरूप 'ओन डोर' ने निर्णय लिया कि रश्मि अग्रवाल पर एक विशेषांक निकाला जाए। भले ही यह विशेषांक उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षिप्त सा ही मूल्यांकन कर रहा है मगर इससे लेखिका को प्रसन्नता अवश्य मिलेगी। यह छोटी सी प्रसन्नता उनके लेखन को और अधिक मजबूत करने का काम करेगी। ऐसी आशा है। ओपन डोर के इस अंक के संपादन में डॉ. अनिल शर्मा अनिल जी का विशेष सहयोग रहा है इसलिए इस अंक के लिए वे ही बधाई के पात्र हैं। बाकी जिन लेखकों ने रश्मि अग्रवाल जी पर विचार व्यक्त किए हैं उनका हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं। आशा है पाठकगण भी रश्मि अग्रवाल के बारे में पढकर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करेंगे। ओपन डोर भी उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। जिन लेखको के विचार प्रकाशित होने से रह गए हैं उनसे क्षमा चाहते हैं।

अमन कुमार

अंदर के पन्नों पर

मेरी आप बीती 08

23
कुछ कविताएं
'अरी क़लम तू कुछ तो लिख' से

18
ऊर्जा और प्रकाश की कवयित्री

'अम्मा' 31

प्रस्तुत अंक के संपादन सहयोगी

उर्जावान, प्रेरक साहित्यकार हैं रश्मि अग्रवाल

डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'
धामपुर, उत्तर प्रदेश
संपर्क-९७१९०६४६३०

प्रभावशाली आकर्षक व्यक्तित्व, मृदुभाषी और शालीन व्यवहार वाली रश्मि अग्रवाल जी की पहचान राष्ट्रपति के द्वारा पुरस्कृत सम्मानित एक लेखिका या साहित्यकार के रुप में ही नहीं है,वरन,संपादन (देश की विभिन्न पत्रिकाओं के संपादन मंडल में आपका नाम शामिल हैं),समाजसेवा,शिक्षण प्रशिक्षण में सक्रिय,अभिनय, पर्यावरण संरक्षण संवर्धन,नशामुक्ति जन-जागरण,सच्ची सलाहकार,कुशल आयोजक संयोजक के रुप में भी है। इधर उनका एक नया रुप इलैक्ट्रोनिक मीडिया पत्रकार का भी सामने आया है।
कुल मिलाकर रश्मि अग्रवाल बहुमुखी प्रतिभा की धनी एक ऐसी उर्जावान प्रतिभावान लेखिका हैं, जिनका जीवन प्रेरक है।
जनपद बिजनौर के ऐतिहासिक नगर नजीबाबाद की निवासी रश्मि जी ने साहित्य, समाज, शिक्षा, पर्यावरण, जल संरक्षण आदि विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखी। इनकी पुस्तक के लिए तत्कालीन राष्ट्रपति ने इनको सम्मानित किया था। यह बहुत गौरवशाली उपलब्धि है, जो सहज ही नहीं मिलती।
आप अपनी गति से सर्जनात्मक गतिविधियों में सक्रिय रहकर समाज को प्रेरणा दे रही है।
वाणी अखिल भारतीय संस्था के माध्यम से आप विभिन्न आयोजन करके न केवल प्रतिभाओं को मंच देती है,वरन उनको सम्मानित करके प्रोत्साहित भी करती है।
टाइम मेनेजमेंट रश्मि जी के व्यक्तित्व की एक ऐसी विशेषता है,जो उनको दूसरों से अलग पहचान देती है। विभिन्न आयोजनों में मैंने
स्वयं देखा कि समय से कुछ मिनट पहले ही उपस्थित हो जाना,इनकी आदत में शुमार है।
आप समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।जिस आयु में आम भारतीय थक-हार कर घर की चारदीवारी तक सीमित हो जाता है,उस आयु में
आप सक्रिय रहकर सभी सामाजिक गतिविधियों में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।
निश्चित रुप से इसके लिए उनके परिवार के सकारात्मक सहयोग की भी प्रशंसा और उल्लेख किया जाना प्रासंगिक होगा।
विभिन्न संस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभाते हुए
सुबह आप छोटे बच्चों के साथ संस्कारशाला कार्यक्रम चलाती नजर आती है,तो दोपहर में
किसी कालेज के छात्र-छात्राओं से बतियाती,उनका मार्गदर्शन करती मिल जाती है। शाम को किसी अन्य संस्था में महिलाओं के साथ दिखाई देती है तो फिर थोड़ी देर बाद आजकल वृद्धावस्था पर अपनी पुस्तक के लिए वयोवृद्ध जन से बातचीत करती नजर आती है।
सुबह से शाम तक सोमवार से रविवार तक कोई समय, दिन ऐसा नहीं,जब सामाजिक सरोकारों से जुड़ी नजर न आएं। इस क्रम में कभी अभिनय करती, कभी भाषण देती, कभी किसी को फोन पर सलाह देती और इन सबके साथ साथ अपने लेखन के लिए भी समय निकाल ही लेती है।
इतना कुछ करते हुए पारिवारिक दायित्वों का बखूबी निर्वहन भी आप करती है। एक मुलाकात में आपने बताया था कि,अपने पोते पोती को स्कूल से घर लाने के लिए वह खुद स्कूल जाती है। यह कोई साधारण बात नहीं है।
पर्यावरण प्रेम इतना कि घर में ही बहुत सुंदर वाटिका बना रखी है। मुझे स्मरण है कि रश्मि जी के विवाह की ५०वीं वर्षगांठ के आउटर मेहमानों को रिटर्न गिफ्ट पौधे दिए गए थे।
केवल लिखने तक ही सीमित नहीं,उसको व्यवहार में लाकर समाज के सामने एक मिसाल पेश करने की कला रश्मि जी बखूबी जानती है।
ओपन डोर के संपादक अमन त्यागी जी के साथ एक दिन बातचीत करते हुए प्रसंगवश
रश्मि अग्रवाल जी का जिक्र आया तो मैंने कहा
रश्मि जी बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं।उनका जितना काम है, उसके लिए ईर्ष्यावश कोई कुछ भी बात बनाए, लेकिन उनके काम और योगदान को नकार नहीं सकता।
अमन जी ने कहा, 'तो फिर रश्मि अग्रवाल जी पर केंद्रित ओपन डोर का एक अंक निकालते हैं। इस अंक के अतिथि संपादक आप ही रहेंगे।'
'जैसा, आपका निर्णय।' मैंने भी तुरंत हां कर ही दी।
बस हो गयी घोषणा, इस अंक की।अब यह अंक कैसा बना यह तो आप ही बता सकते हैं।
लेखक प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत ओपन डोर भविष्य में अन्य उर्जावान सर्जकों के व्यक्तिव, कृतित्व पर भी केंद्रित अंक निकालेगा।
मैं आभारी हूं, भाई अमन त्यागी जी का जिन्होंने यह गौरवशाली सुअवसर मुझे दिया।
इस अंक के लिए अपना लेखकीय योगदान करने वाले सभी साहित्यकारों का, जिनके योगदान बिना यह अंक संभव नहीं था।
यह अंक कैसा लगा? अवगत अवश्य कराएं।

अमर उजाला

राष्ट्रीय कैडेट कोर
NATIONAL CADET CORPS
INNER WHEEL CLUB OF NAJIBABAD

वाणी हिन्दी संस्थान

एवं कवि सम्मेलन

पर्यावरण शोध एवं शिक्षा संस्थान, उ०प्र०
प्रकृति प्रहरी सम्मान समारोह-2016
4th
anniversary
श्री देवेन्द्र सिंह
श्रीमती रश्मि अग्रवाल

सम्मान समारोह

भारतीय राजदूतावास, काठमाण्डौ

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार
Department of Official Language, Ministry of Home Affairs, Government of India
हिंदी दिवस समारोह
Hindi Divas Samaroh
14 September, 2016

संस्कार साथी

रश्मि अग्रवाल

भारती श्री सम्मान
साहित्य कला-संस्कृति संस्थान नजीबाबाद

पर्यावरण शोध एवं शिक्षा संस्थान, उ०प्र०
प्रकृति प्रहरी सम्मान समारोह

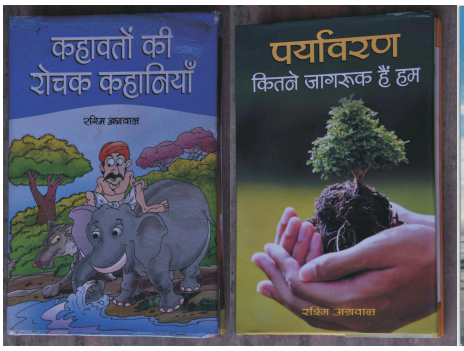

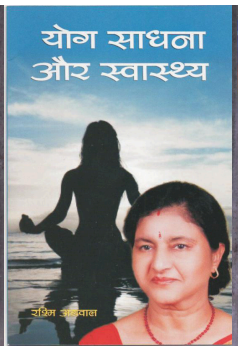

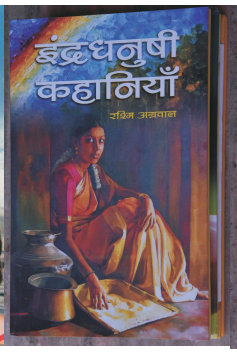

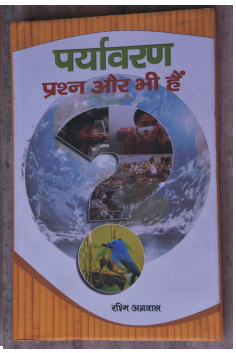

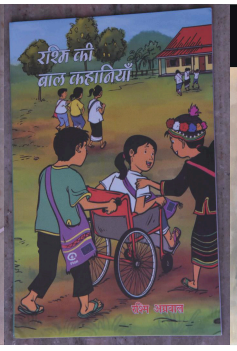

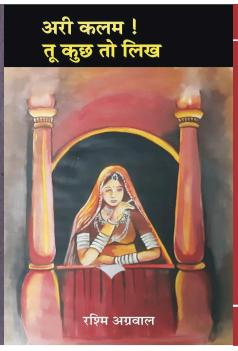

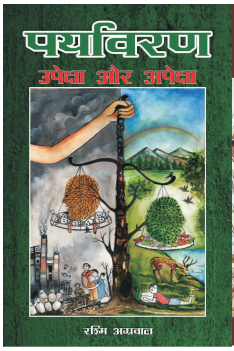

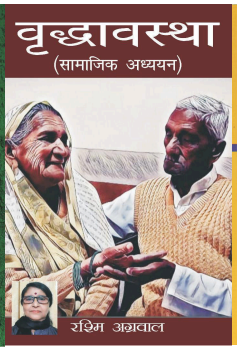

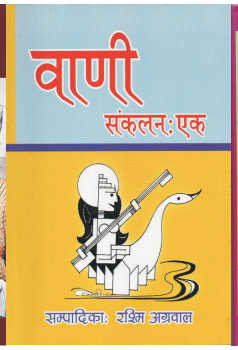

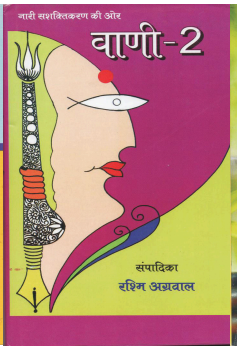

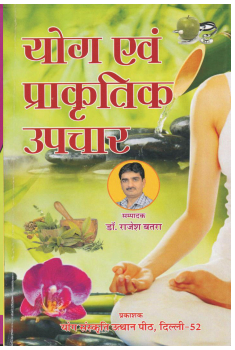

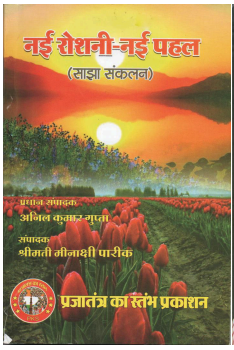

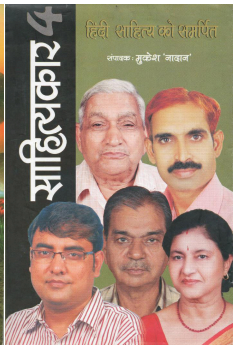

रश्मि अग्रवाल का रचना संसार

दैनिक जागरण 14 मार्च 2015 2 संगिनी

कुहासे के कैनवास पर उम्मीद का हस्ताक्षर

निराशा के गहरे कुहासे के कैनवास पर उम्मीदों का हस्ताक्षर है रश्मि अग्रवाल। उन्होंने न केवल खुद के लिए जिंदादिली की इबारत लिखी, बल्कि निराशा और उम्मीद खो चुके लोगों के मन में उम्मीद की किरन रोशन कर रही हैं। आजादी के दशक में पैदा हुई रश्मि ने करीब एक दर्जन प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में लेखन में अपनी जीवटता के झंडे गाड़े और अपने हुनर से समाज को आकर्षित करके पुरस्कारों से अपनी झोली भी भर ली। फिलहाल वह बेटी बचाओ अभियान में जुड़ी हैं। उन्होंने वाणी हिंदी संस्थान की स्थापना कर 25 महिलाओं को इससे जोड़ा।

अब तक मिले सम्मानों पर एक नजर

संस्कार सारथी सम्मान (दिल्ली), गोपरत्न सम्मान (हापुड़), शिक्षा मित्र सम्मान (मुरादाबाद), प्रकृति प्रहरी सम्मान (मेरठ), भारती श्री सम्मान (नजीबाबाद) मिल चुके हैं। वाणी हिंदी संस्थान की स्थापना की। वर्तमान में आसपास के जिलों की करीब 25 महिलाएं जुड़ी हैं। इसके अलावा निशुल्क स्वास्थ्य शिविर, स्वावलंबन केंद्र, कई स्कूलों में आगरूकता गोष्ठी का आयोजन कर पर्यावरण क्षेत्र में काम करने के साथ ही पुस्तक भी लिख चुकी हैं। सेवाभारती मातृमंडल की नगराध्यक्ष, वाणी हिंदी संस्थान की संस्थापक अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय इनरव्हील क्लब की जिला कमेटी में चेयरमैन, अग्रवाल महिला सभा की सदस्य हैं। वर्तमान में वह बेटी बचाओ अभियान में जुटी हैं।

नहटौर में 1952 में जन्मी रश्मि वर्ष 2001 तक सामान्य जिंदगी जी रही थीं। अचानक उन्हें गठिया रोग ने जकड़ लिया। पूरे घर की जिम्मेदारी उठाने वाली रश्मि अपने नितांत जरूरी कामों के लिए परिवार के सदस्यों पर निर्भर हो गईं। शरीर शिथिल और स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया। ऐसे में उनका आत्मविश्वास डगमगा गया और जीवन के प्रति दृष्टिकोण नकारात्मक हो गया। सभी उम्मीदें धीरे-धीरे ... वह हौसला भी हांफता नजर आने लगा। फिर एक दिन दृढ़ संकल्प लिया और मजबूती से कलम संभाली। इसके बाद शुरू हुआ संघर्ष। रोग, लोगों की उपेक्षा और उपहास उड़ाने वालों को रश्मि ने अपनी जिंदादिली की लाठी से दूर तक खदेड़ा। यात्रा शुरू हुई तो मंजिलें मिलने लगीं। अब वह वनिता, सखी, साहित्य त्रिवेणी, ज्ञानवाणी समेत करीब दो दर्जन पत्र-पत्रिकाओं में नियमित लेखन कर रही हैं।

जीवन के प्रति नजरिया

बकौल रश्मि उम्र और रोग शरीर पर हावी होकर मनुष्य की सृजनात्मकता पर कुंडली मारकर उसे निष्क्रिय बना देते हैं, लेकिन इच्छाशक्ति वो ब्रह्मास्त्र है जिससे न केवल इन्हें परास्त किया जा सकता, बल्कि सफलता के नये आयाम भी गढ़े जा सकते हैं।

रश्मि अग्रवाल संक्षिप्त परिचय

जन्मतिथि - ५ जनवरी, १९५२, नहटौर (उप्र),
माताश्री - श्रीमती विद्या रानी जैन
पिताश्री - श्री सन्तोष कुमार जैन
पतिश्री - डॉ. विरेन्द्र कुमार अग्रवाल
विधा - कविता, कहानी, आलेख, वार्ता, गीत, स्तंभ आदि।
पुस्तक -
१. कहावतों की रोचक कहानियाँ
२. पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम
३. योग साधना और स्वास्थ्य
४. इंद्रधनुषी कहानियाँ
५. पर्यावरण प्रश्न और भी है?
६. बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ
७. रश्मि की बाल कहानियाँ
८. अरी क़लम! तू कुछ तो लिख (काव्य संग्रह)
९. जीयो जीवन भरपूर
१०. जीवन का आधर : जल
११. पर्यावरण अपेक्षा और उपेक्षा
१२. वृद्धावस्था (सामाजिक अध्ययन)
संपादित - वाणी एक, वाणी दो, समकालीन महिला साहित्यकार
प्रकाशन - राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशन
प्रसारण - आकाशवाणी केंद्र, नजीबाबाद

सामाजिक कार्य
- वाणी अखिल भारतीय हिंदी संस्थान, नजीबाबाद में निशुल्क मंच का प्रावधान इससे ३० महिलाएं सशक्त हुई हैं।, निशुल्क स्वास्थ्य शिविर शिक्षा के माध्यम व स्वरोजगार देना।, पर्यावरण पर विशेष लेखन, कार्यशालाएँ व वृक्षारोपण

पुरस्कार एवं सम्मान -
- शिक्षा मित्र अवार्ड (मुरादाबाद) २००९
- प्रकृति प्रहरी सम्मान (मेरठ), भारती श्री सम्मान (नजीबाबाद)
- साहित्य गंगा सम्मान (सोनभद्र) २०१०
- हिंदुस्तान एवं उप्र सरकार द्वारा - नारी सम्मान (मुरादाबाद)
- संस्कार सारथी सम्मान (दिल्ली) २०१४
- गोपाल रत्न सम्मान (हापुड़) २०१४
- पुस्तक 'पर्यावरण : कितने जागरूक हैं हम' को राजभाषा गौरव पुरस्कार (माननीय राष्ट्रपति जी के कर कमलों से) २०१५
- अमर उजाला एवं उप्र सरकार द्वारा - नारी सम्मान (मुरादाबाद) २०१६
- संतोश सांधी सम्मान (अलवर) २०१६
- हिन्दी भाषा भूषण सम्मान (मुरादाबाद) २०१७
- केंद्रीय हिंदी निदेशालय मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) भारत सरकार द्वारा दो पुस्तकें 'पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम, इंद्रधनुषी कहानियाँ का चयन हुआ है, २०१७
- राधा वल्लभ उपाध्याय स्मृति सम्मान (बिसौली) २०१७
- ज्ञान रत्न सम्मान (मुरादाबाद) २०१८
- 'लेखन प्रतिभा सम्मान' नेपाल भारत मैत्री वीरांगना फाउंडेशन काठमांडू जनकपुर एवं भारतीय राजदूतावास, काठमांडू द्वारा (नेपाल) २०१८
- पर्यावरण चिंतक सम्मान, वरिष्ठ नागरिक ट्रस्ट द्वारा, शोभित यूनिवर्सिटी, (मोदीपुरम) २०१८
- वरिष्ठ नागरिक सम्मान, वरिष्ठ नागरिक ट्रस्ट द्वारा (मेरठ) २०१८
- प्रकृति प्रहरी सम्मान, प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान (योग संस्कृति उत्थान, पीठ दिल्ली) २०१८
- विद्यावाचस्पति २०१८ (विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ, भागलपुर)
- सेवा भारती गौरव सम्मान (नजीबाबाद) २०१९
- पर्यावरण भूषण सम्मान, अखंड भारत-भारती सेवा संस्थान (नजीबाबाद) २०१९
- 'नेशनल वुमेन अचीवर्स अवार्ड्स' नारी शक्ति सम्मान-२०१९ (दीप वैलफेयर ऑरगनाइजेशन एवं डॉ. विशाखा सोशल वेलफेयर फाउंडेशन द्वारा दिल्ली)
- पंचम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह के अन्तर्गत 'विशिष्ट सम्मान' (दिल्ली) २०१९
- वैलनेस केयर राष्ट्रीय पारिवारिक पत्रिका के लिए 'उत्कृष्ट लेखन सम्मान' २०१९ दिल्ली योग संस्कृति उत्थान पीठ द्वारा
- 'साहित्य वाचस्पति उपाधि' २०१९ पर्यावरण लेखन हेतु 'वीर भाषा हिन्दी साहित्य पीठ', मुरादाबाद द्वारा

संपादन -
- 'धरती बचे प्रदूषण से' पत्रिका (कानपुर) की सह संपादिका
- 'शोधादर्श' के 'वृद्धावस्था विशेषांक' का विशेष संपादन

सलाहकार- हरित पर्याय पत्रिका, मेरठ

संस्थापक -
- वाणी अखिल भारतीय हिंदी संस्थान, नजीबाबाद
- अग्रवाल महिला सभा, नजीबाबाद

संरक्षक - 'अविचल दृष्टिकोण' पत्रिका (बिजनौर), 'शोधादर्श' त्रैमासिक (नजीबाबाद)
पूर्व अध्यक्ष - सेवा भारती मातृमंडल, नजीबाबाद नगर अध्यक्षा
सदस्य - भारतीयम, साहित्य, कला, संस्कृति संस्थान, नजीबाबाद-मानद सदस्य
पता - वाणी अखिल भारती हिंदी संस्थान, बालक राम स्ट्रीट, नजीबाबाद-२४६७६३, जिला-बिजनौर (उप्र)
संपर्क - ९८३७०२८७००
E-mail : rashmivirender5@gmail.com

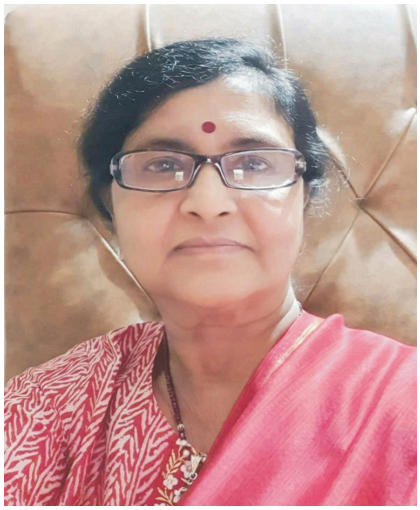

मेरी आप बीती

बेटी के दुःख ने हम दोनों को तोड़ दिया और सभी सगे-संबंधियों ने कहा बेटे को अपने पास रखकर पढ़ाओ ताकि एक संतान तो पास हो पर मैं अपने दुःख को पीछे रखते हुए, बेटे के जीवन को संवारने के लिए दृढ़ संकल्प थी, इसलिए उसे नहीं बुलाया पर हरदम आँखें भरी रहतीं छिपती-छिपाती आंसू बहाती रही। कहते हैं दुःख में ही ईश्वर याद आते हैं।

भले ही वर्तमान में मेरी १० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हों पर मेरे जीवन में एक समय ऐसा भी आया कि जब अचानक हंसती-खेलती, मेरी नौ वर्ष की बेटी 'पूजा' काल का ग्रास बन गई। पिता चिकित्सक होते हुए भी अपनी बेटी के लिए कुछ न कर सके क्योंकि हमारे छोटे से शहर में तब चिकित्सा का अभाव व बेटी की सांसों पर समय की कमी ने, हमसे हमारे परिवार की लक्ष्मी को छीन लिया। तब बेटा जो १३ वर्ष का रहा, बाहर पढ़ता। बेटी के दुःख ने हम दोनों को तोड़ दिया और सभी सगे-संबंधियों ने कहा बेटे को अपने पास रखकर पढ़ाओ ताकि एक संतान तो पास हो पर मैं अपने दुःख को पीछे रखते हुए, बेटे के जीवन को संवारने के लिए दृढ़ संकल्प थी, इसलिए उसे नहीं बुलाया पर हरदम आँखें भरी रहतीं छिपती-छिपाती आंसू बहाती रही। कहते हैं दुःख में ही ईश्वर याद आते हैं। इसलिए हम दोनों, तिरूपति जी गये। वहाँ झोली फैलाकर सिर्फ यही मांगा कि आशा तो नहीं है पर अगर कोई चमत्कार हो तो मुझे बेटी के बदले बेटी ही मिले और ईश्वर भी है और चमत्कार भी यह तब मानना पड़ा, जब २ जनवरी १९८५ को बेटी की मृत्यु हुई और १७ दिसम्बर १९८५ को पुनः बेटी 'रति' अनुपम धरोहर के रूप में मिली।

सुख की किरणें आईं पर उसके साथ एक और दुःख खड़ा था कि अचानक मुझे २००२ में गठिया रोग से पीड़ित होने के पश्चात् मैं व्हीलचेयर पर बैठ गई और मैं चलती-फिरती अचानक नितांत जरूरी कार्यों के लिए भी परिवार पर निर्भर हो गई। शिथिल शरीर, स्वभाव में चिड़चिड़ापन आना स्वाभाविक ही था। ऐसे में मेरा आत्मविश्वास भी डगमगाने लगा, जीवन के प्रति दृष्टिकोण नकारात्मक हो चला और सभी उम्मीदें धीरे-धीरे कुंद होकर जड़ता में परिवर्तित हो गईं थीं क्योंकि मैं नख से सिख तक अपंग हो चुकी थी।

तब बिस्तर पर पड़े-पड़े यह विचार आया कि क्यों न अपनी ही दशा/दिशा पर काग़ज काले किये जाएं ताकि अपंगता से उपजा क्रोध, परिवार पर व स्वयं पर न उतर कर काग़ज पर ही उतर जाये। इसी विचार ने मुझे कलम पकड़ाई और लिखने का साहस करती रही। दो वर्ष तक लिखती रही, कुछ पत्रिकाओं में रचनाएं प्रेषित भी कीं पर सकारात्मक उत्तर नहीं आने से वह हौसला भी हांफता नज़र आने लगा। फिर दृढ़ निश्चय लिया, मजबूती से कलम संभाली। इसके पश्चात् प्रारंभ हुआ संघर्ष। लोगों की उपेक्षा और उपहास उड़ाने वालों को, मैंने जिंदादिली से स्वीकार किया और व्हीलचेयर को सलाम करते हुए लेखन यात्रा प्रारंभ की और निरंतर लिखती रही, लिखती रही। अचानक एक दिन दिल्ली से प्रकाशित प्रतिष्ठित पत्रिका 'संस्कार सारथी' हाथ में आई, खोलने पर देखा, अपनी रचना, परिचय व छाया चित्र के साथ प्रकाशित की गई थी। अपनी ही नज़र पर विश्वास न कर पाई पर उस दिन से पीछे मुड़कर नहीं देखा और अन्य पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं भेजती रही, प्रकाशित भी होती रही सम्मान भी मिलते रहे।

सर्वप्रथम 'कहावतों की रोचक कहानियां' प्रकाशित हुई। पहले जो लोग मेरा मज़ाक उड़ाते व यह कहते थे कि अब रश्मि अपंग हो गई है, कैसे जी पायेगी? और यह सुनकर अपनी दशा देखकर, मैं भी स्वयं को समाप्त करने तक का सोच लेती, वही लोग, मेरी प्रथम पुस्तक को पढ़कर प्रसन्नशा करने लगे। तत्पश्चात् मुझे पर्यावरण पर कलम चलाने का सुझाव मिला और मैंने १ वर्ष के अथक परिश्रम के चलते 'पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम' पुस्तक लिख डाली, जिसके लिए २०१५ में मुझे महामहिम राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के कर कमलों से पुरस्कृत होने का सौभाग्य मिला। स्वयं की दृढ़ इच्छाशक्ति से मेरा स्वास्थ्य भी ठीक चल रहा था और फिर 'पर्यावरण प्रश्न और भी हैं' इन्द्रधनुषी कहानियां, योग साधना और स्वास्थ्य, बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ, रश्मि की बाल कहानियां, अरी कलम! तू कुछ तो लिख, जीवन जियो भरपूर आदि पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

मेरे जीवन में आई विषय परिस्थिति, जो अचानक व भयंकर रूप के साथ आई, उससे उबरने के लिए, मैंने कलम को ही हथियार बनाया... परिणाम भी सकारात्मक रहे कि मुझे साहित्य व सामाजिक कार्यों हेतु सम्मानित किया जाने लगा पर इस कड़ी में जब २०१५ में मेरे संग्रह 'पर्यावरण कितने जागरुक हैं हम' को महामहिम राष्ट्रपति जी के कर कमलों से राजभाषा गौरव पुरस्कार से अलंकृत किया गया, तब वो समय मेरे जीवन का उत्कृष्ट समय रहा व मेरे कार्यों ने और भी गति पकड़ी।

मैं तो मानती हूँ कि मैं ही क्या मेरे जैसी अन्य महिलाएँ भी अगर अपनी कला व रूचि को निखारने के लिए दृढ़ संकल्प हों तो वो मुझसे भी कहीं आगे निकल कर स्वयं के जीवन को सुंदर व सुखद बना सकती हैं, बड़े-बड़े सम्मान भी प्राप्त कर सकती हैं।

मैं सभी महिलाओं के लिए यही शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ कि वो स्वयं को सम्मान दें व प्रतिस्पर्धा की होड़ में न उलझ कर अपनी कला को निखारें।

एक दिन हमारे शहर नजीबाबाद के निवासी श्री अमन त्यागी जी ने मुझे 'शार्प रिपोर्टर' पत्रिका भेंट की। मैंने पूरी गंभीरता से उसे पढ़ा व उसके लिए भी एक आलेख प्रेषित किया जो गांधी विशेषांक में प्रकाशित भी हुआ और मेरा जुड़ाव, तब से शार्प रिपोर्टर से भी हुआ।

जीवन के प्रति मेरा नज़रिया कि आयु व विषम परिस्थितियां शरीर पर हावी होकर मनुष्य की रचनात्मकता पर कुंडली मारकर या जीवन जीने की इच्छा पर विराम लगाते हुए उसे निष्क्रिय बना देती हैं, लेकिन इच्छाशक्ति वो ब्रह्मास्त्र है जिससे न केवल इन्हें परास्त किया जा सकता है, बल्कि सफलता के नये आयाम भी गढ़े जा सकते हैं क्योंकि यह मैंने भोगा और इससे बाहर भी निकली सिर्फ अपने विचारों व दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर। आज प्रत्येक सेमिनार हो या अन्य मंच, मैं अपने इस कटु सत्य से कई युवा लड़कियों को, इस बीमारी से बाहर निकालते हुए सामान्य जीवन जीने के लिए प्रेरित करती रहती हूँ और करती रहूंगी।

रश्मि अग्रवाल
(संस्थापक-अध्यक्षा)
वाणी अखिल भारतीय हिन्दी संस्थान
बलक राम स्ट्रीट, नजीबाबाद- २४६७६३ (बिजनौर)
सचलभाष- ९८३७०२८७००,
म्ण्उंपसः तौउपअपतमदकमत५/हउंपसण्बवउ

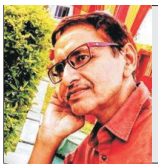

डॉ. अशोक रस्तोगी
ए-१६०२ अग्रवाल हाइट्स,
राजनगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद २०१०१७
मो० ६४११०१२०३६/८०७७६४५१४८

सतत् साहित्य साधिका : रश्मि अग्रवाल

एक ऐसा स्पंदित व्यक्तित्व जिसमें कर्मठता है, अपने लक्ष्य के प्रति अटूट निष्ठा व लगन है, जिसमें आत्मानुशासन है, संवेदनाओं की लहरें हैं, जिसमें करूणा और चिंतन शीलता है और वह व्यक्तित्व है हिन्दी साहित्य की परिपक्व व स्थापित लेखिका श्रीमती रश्मि अग्रवाल जिन्हें 'पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम' नामक पुस्तक पर महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा गृह मंत्रालाय भारत सरकार के राजभाषा विभाग के राजभाषा गौरव पुरस्कार से अलंकृत किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त भी उनका साहित्यिक आंचल ढेर सारे सम्मानों व पुरस्कारों से भरा हुआ है। सोशल मीडिया पर तो मेरा परिचय उनसे काफी पूर्व से था, परंतु साक्षात भेंट का साक्षी बना ऋषिकेश में आयोजित एक साहित्यिक सम्मेलन जिसमें उनका भी अभिनंदन किया जाना था और मेरा भी। वे नजीबाबाद से वहां पहुंची थीं और मैं गाजियाबाद से। एक बैंकट हॉल का सुसज्जित सभगार था वह, जहां मुझसे अग्रिम पंक्ति में बैठीं थी वे। मुझे तो उन्हें पहचानने में कुछ शंका व कुछ संकोच महसूस हुआ किंतु उन्होंने मुझे प्रथम दृष्टिपात में ही पहचान लिया ''यदि मेरी आंखें धोखा नहीं खा रहीं तो क्या मैं डॉक्टर अशोक रस्तोगी जी से बात कर रही हूँ?''

मैं भी तत्काल करबद्ध अभिवादन की मुद्रा में खड़ा हो गया और यदि मुझे आपको पहचानने में संशय न हो तो मैं अपने समक्ष सच्ची साहित्यधर्मी, असाधारण प्रतिभा धनी, सफल लेखिका आदरणीया रश्मि अग्रवाल जी के दिव्य दर्शन कर रहा हूँ?''

दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े जब एक साहित्यकार का किसी वेदना तथा दूसरे साहित्यकार से प्रथम साक्षात्कार होता है तो ऐसी ही आत्मीयतापूर्ण अनुभूति होती है हर्श और उल्लास दोनों के ही हृदयों में व्याप गया।

उसी समय मैंने उन्हें अपनी प्रकाशित पुस्तकें कहानी संग्रह वेदना तथा काव्य संग्रह प्रीति के अंकुर भेंट की और उन्होंने मुझे बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ तथा अरी कलम तू कुछ तो लिख भेंट की। उस क्षणिक भेंट में वे मुझे अत्यधिक संवेदनशील, करूण हृदयी, मधुरभाषिणी, आदर्श जीवन मूल्यों में गहन आस्था रखने वाली साहित्य साधिका प्रतीत हुई विनम्र आचरण की धनी और सरल कोमल स्वभाव वाली।

वाणी अखिल भारतीय हिन्दी संस्थान नजीबाबाद की संस्थापक अध्यक्ष रश्मि अग्रवाल महिला साहित्यकारों की श्रृंखला में अग्रगण्य नाम है। पर्यावरण प्रेमी नारी सशक्तिकरण के अभियान में जुटीं रश्मि जी द्वारा लिखित पुस्तक पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम पर्यावरण जगत में एक क्रांतिकारी कदम सिद्ध हुई। जिसके लिए पूर्व राश्ट्रपति महामहिम प्रणव मुखर्जी द्वारा उन्हें पुरस्कृत किया गया और पर्यावरण शोध संस्थान मेरठ द्वारा उन्हें 'प्रकृति प्रहरी सम्मान' से सुभूशित किया गया।

वैसे तो इस यशस्वी साहित्कार की सशक्त लेखनी और पर्यावरण सम्बंधी पुस्तकों के अतिरिक्त भी अन्य अनेकों पुस्तकों का सृजन हुआ है, जिनमें प्रमुख हैं योग साधना और स्वास्थ्य, कहावतों की रोचक कहानियाँ, इन्द्र धनुषी कहानियां, जियो जीवन भरपूर, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, अरी कलम तू कुछ तो लिख आदि। किन्तु मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ मात्र दो पुस्तकें पढ़ने अरी कलम तू कुछ तो लिख तथा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ। तो मैं इन्हीं दो पुस्तकों के आधार पर उनके साहित्यावलोकन का प्रयास कर रहा हूँ

रश्मि अग्रवाल जी अपनी साहित्य सर्जना द्वारा नारी सशक्तिकरण तथा पर्यावरण संरक्षण की अलख जगा रही हैं। इसी दिशा में 'अरी क़लम तू कुछ तो लिख' उनके द्वारा रचित प्रथम काव्य संग्रह है जो नारी जगत को उन्नति के अम्बर में स्वच्छंद उड़ान भरने के लिए नवल ऊर्जा, नवल शक्ति, सम्बल और नवल चेतना प्रदान करने में सक्षम प्रतीत होता है। उनकी कलम समाज व वातावरण में व्यास निराशा और सघन अंधकार के विरूद्ध जनमानस में चेतना, प्रकाश व आशा के भाव उत्पन्न कर देती है। करूणा, प्रेम, श्रृंगार, भयानक, अद्भुत आदि सभी रसों पर उनकी कलम की धार पैनी हुई है।

गहराई से अवलोकन करें तो आज के वातावरण में हर ओर विध्वंस का तांडव नृत्य होता दिखाई देता है। राष्ट्र द्रोही अराजक तत्व राष्ट्र की शांति भंग करने का अवसर तलाशते रहते हैं और लेशमात्र भी अवसर मिलते ही यत्र-तत्र आग्नेय कोलाहल उत्पन्न कर देते हैं। ऐसी आग्नेय और विषैली परिस्थितियां कवयित्री के संवेदनशील हृदय को झकझोर कर रख देती हैं। तब उनका अन्तर्मन उनकी लेखनी को ललकारते हुए कह उठता है।

अरी कलम तू कुछ तो लिख
लिखने का मन करता मेरा,
इसमें क्या जाता है तेरा?
चारों ओर दिखाई देती,
मुझको घोर तबाही।
विषय सामने, कागज भी,
और सामने स्याही भी।
ऐसे में चुप रहना मेरी,
और नहीं लिख पाना तेरी,
कायरता है।

पढ़कर हृदय आह्लादित तो हो ही जाता है, वर्तमान परिपेक्ष्य की विशाक्तता के विषय में भी बहुत कुछ सोचने को बाध्य हो जाता है। वस्तुतः वातावरण में व्यास कुहासे को चीरकर प्रकाशपुंज विस्तीर्ण करना, नारी के उन्नति पथ में बाधक झंझावतों को चीरकर अपना अलग स्थान स्थापित करना इस काव्य संग्रह के माध्यम से कवयित्री का पावन उद्देश्य है। नारी को विधाता ने अद्भुत रूप में रचा है, अद्भुत ही उसे शक्ति प्रदान की है और अद्भुत ही उसके शोणित में ऊर्जा का संचार किया है

अद्भुत है ये कृति, सुनते ही शक्ति
रूप उभरता है, स्त्री का।
और शक्ति, शक्ति प्रतीक है सत्ता का।
उस सत्ता का, जो करती है निर्माण
पोशण और विकास, नारी रूप शक्ति का।

नारी का जीवन पथ तमाम कंटकों, उलझनों, बाधाओं व व्यथाओं से भरा पूरा होता है। नारी लाल चूनर व सिंदूरी मांग लेकर मन में प्रेम, अरमान और सतरंगी सपने लेकर अनजान पति गृह में प्रेवश करती है। परंतु वहां उसे उपहार कैसे-कैसे मिलते हैं तिरस्कार, झिड़कियां, सिसकियां, जलती सलाखें और अंत में अग्निस्नान आखिर कब तक? नारी को इस अग्नि पथ का वरण करने को बाध्य होना होगा?

माँ बहन बेटी पत्नी हर रूप में सताई जाती है।
तन-मन-धन सब समर्पण ठगी नारी जाती है।
संवेदनाओं की अनुभूति या त्रासदी जीवन की,
गुनाह करता है पुरुष, सजा भोगती है नारी।
आखिर कब तक?

इस प्रकार विभिन्न प्रकार से सुरभित और सौंदर्यमयी ७४ पुष्प संग्रहित किए अरी कलम तू कुछ तो लिख नामक

रसाप्लावित पुष्पगुच्छ में मनमोहक सुगंध है, हृदय तंत्र को झंकृत करने वाली मादक झंकार है, जीवन के विभिन्न पहलुओं का स्पर्शन है, प्रदूषण की कारा को खंडित करने वाला संधान है, पर्यावरण के प्रति चेतना है, नारी महिमा का प्रतिपादन है, माँ के ममत्व की संघर्षपूर्ण यात्रा है... और करूणा, प्रेम, त्याग के साथ-साथ परोपकार का पावन व्रत अपनाने की सम्यक प्रेरणा है।

अब एक झलक उनकी पुस्तक 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' की उपयोगिता पर

चिंतनशील और समाज हितैशी लोग प्रायः कहा करते हैं कि यदि किसी गृह का कोई पुत्र शिक्षित होता है तो वह मात्र स्वयं ही शिक्षित होता है, जबकि यदि कोई पुत्री शिक्षित होती है तो न केवल वह अपने पूरे परिवार का शिक्षित कर सकती है, अपितु दूसरे परिवार पतिगृह को भी शिक्षित व संस्कारित कर सकती है। एक शिक्षित व संस्कारित नारी अपनी सन्तति के जीवन को श्रेष्ठ संस्कारों द्वारा निखार सकती है, उनकी प्रतिभा को चमका सकती है, जिससे समाज में उनकी एक अलग विशिष्ट पहचान बन सकती है। इसलिए बेटियों का साक्षर होना आवश्यक है। इसके साथ ही उनका संरक्षण भी अत्यावश्यक है। किन्तु बड़ा चिंतनीय व शोचनीय विषय है कि आज हमारा समाज कन्या भ्रूण हत्या जैसे- जघन्य अपराधों का क्रियान्वयन ही समाज में अपने अस्तित्व को बनाए रखने में सहायक मान बैठा है। लिंगानुपात की असमानता का मुख्य कारण भी यही है। आज महती आवश्यकता है इस धारणात्मक विचार में परिवर्तन की कि मात्र बेटा ही परिवार को एक पहचान दे सकता है, अपितु एक बेटी भी परिवार की पहचान बन सकती है। वह भी अपने उपब्धियों व प्रतिभा द्वारा माता पिता का मस्तक गर्वोन्नत कर सकती है।

चिंतक और विचारक साहित्यकार रश्मि अग्रवाल जी ने अपनी पुस्तक बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के माध्यम से समाज की बेटियों के प्रति नकारात्मक सोच को बदलने का सराहनीय व महत्वपूर्ण प्रयास किया है और दिशाहीन समाज के लिए एक नयी राह प्रशस्त की है।

उनके संदेश में कितना गहरा भाव छिपा है-

लेने दो जन्म मुझे भी माँ, बेटे से बढ़ दिखलाऊंगी।
धरा का सुख क्या चीज़ है माँ, अम्बर के तारे लाऊंगी।।

किन्तु मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने इस पुस्तक में गर्भपात (भ्रूण हत्याएँ), सकल प्रजनन दर, मातृत्व मृत्यु दर तथा लिंगानुपात के जो देशभर से आंकड़े जुटाए हैं, उनमें कितना श्रम, कितना समय, कितनी ऊर्जा लगी होगी कितना अध्ययन करना पड़ा होगा उन्हें, कितनी लेखनी चलानी पड़ी होगी उन्हें।

नमन उनकी लेखनी के सतत सद्प्रयास को

अन्त में एक दृष्टि शोधादर्श नाम त्रिमासिक पत्रिका के वृद्धावस्था विशेशांक पर जिसका सम्पादन व संकलन भी रश्मि अग्रवाल जी ने ही किया है।

शोधादर्श (सितंबर-नवंबर २१) का उनके द्वारा लिखित संदर्भ सम्पादकीय आवश्यक है वृद्धों पर चर्चा उनकी संवेदनशीलता व चिंतनपरकता को प्रदर्शित करता है एक अनूठा व अस्पृश्य विषय वृद्धावस्था जिसमें मानव प्रायः निराशा व हताशा के सागर में डुबकियां लगाता रहता है उम्र का ऐसा अंतिम पड़ाव जिसमें मनुष्य को अतीत की स्मृतियां उद्देलित करती रहती हैं। पाश्चात्यानुकरण के चलते प्रायः आजकल वृद्धों को अपनी संतान द्वारा उपेक्षा व तिरस्कार का आखेट बनने को विवश होना पड़ता है एकाकीपन के कांटे उन्हें रेगिस्तान की तरह झुलसाने लगते हैं और वृद्धावस्था उन्हें अभिशाप लगने लगती है बोझ महसूस होने लगती है। किंतु वृद्धावस्था वरदान भी सिद्ध हो सकती है यदि हम पाश्चात्य अवधारणा से सावधान रहते हुए अपनी संतान को प्रारम्भ से ही ऐसे सुसंस्कार दें जो वरिष्ठजनों को निरर्थक न समझ उन्हें देवोपम पूजनीय समझें और साथ ही वृद्धजन भी अपने जीवन को उपहार रूप समझ बच्चों की भावनाओं व अपेक्षाओं का सम्मान करें। उनकी जीवनशैली से सामंजस्य स्थापित करें। उन पर अपने आदेश न थोपें। अपितु अपनी अभिलाशाओं व आवश्यकताओं को भी नियंत्रित करें।

उनका सम्पादकीय लेख वृद्धवयस जीवन में आशाओं और उमंगों का संचार करता है दूरदर्शितापूर्ण उत्कृष्ट सम्पादकीय इस अत्युपयोगी पत्रिका शोधादर्श का प्राण है।

इसी तरह से उनका आलेख वृद्धावस्था चाहे प्यार की भाषा अत्यधिक संवेदनापरक है। मानव जीवन की जर्जरावस्था का यह अंतिम परिवर्तन ऐसी विषम परिस्थितियों से गुजरता है जब शारीरिक क्षमता के क्षीण होने के साथ-साथ मानसिक स्थिति भी कृष हो जाती है। अंग-प्रत्यंग तो शिथिल होने ही लगते हैं, क्रियाकलाप भी कमजोर होते जाते हैं और स्वभाव में भी चिड़चिड़ापन आ जाता है। स्मरण शक्ति भी साथ छोड़ने लगती है।

इस चिंतन परक आलेख में उन्होंने वृद्धावस्था को उमंगों, तरंगों व आशाओं से परिपूर्ण करने के सुझाव भी दिग्दर्शित किये हैं। उत्कृष्ट व प्रशंसनीय विचार प्रवाह है।

रश्मि अग्रवाल जी ने अपने निर्देशन सम्पादन में विभिन्न लेखकों व कवियों के अनेकों लेख, गीत, कहानियां, नाटक आदि महत्वपूर्ण रचनाएं संकलित करके इस वृद्धावस्था विशेशांक को सार्थक व सफल बनाया गया है। जिनमें से प्रमुख रचनाएं हैं

वयोवृद्ध लोगों को हाशिए में क्यों फेंक दिया जाता है? - डॉ. राम बहादुर व्यथित

वृद्धावस्था में मानव बच्चा बन जाता है। - डॉ सतेंद्र शर्मा तरंग

संयुक्त परिवार का महत्व। - डॉ. अनिल शर्मा अनिल

वृद्ध वही जो वृद्धावस्था ओढ़े। - डॉ. सुधाकर आशावादी

वृद्धावस्था अभिशाप भी वरदान भी। - अशोक मधुप

दादा-पोता (कहानी) - अमन कुमार त्यागी

रिहाई (कहानी) - उमाकांत भारती

चल बेटा चल (कविता) - अशोक अंजुम

और भी अनेकों अत्युपयोगी, सारगर्भित व चिंतनपरक रचनाओं से सुसज्जित किया गया है शोधादर्श का यह वृद्धावस्था विशेषांक।

निष्कर्षत : बहुआयामी व विराट व्यक्तित्व की स्वामिनी प्रगल्भ साहित्यकार रश्मि अग्रवाल जी की सतत साहित्य साधना स्तुत्य है। उनकी लेखनी वरेण्य है, उत्प्रेरक है। उनके साहित्यिक यशस्वी जीवन हेतु शताधिक शुभेच्छाएँ एवं हार्दिक बधाई।।

रश्मि अग्रवाल साहित्यिक ऊर्जा का स्त्रोत

डॉ. एस. के. जौहर
वाहिद नगर, नजीबाबाद
९४१२५२८०८०, ७३५१०८०९६

बुलंदियों पर पहुंचना कमाल नहीं होता,
बुलंदियों पर ठहरना कमाल होता है।

इस ठहराव की साक्षी हैं प्रकृति प्रहरी, प्रकृति प्रेमिका, सामाजिक मूल्यों व संस्कृति की ऊर्जावान लेखिका श्रीमती रश्मि अग्रवाल व्यक्तित्व और कृतित्व जब दोनों श्रेष्ठ कोटी के हो तो लेखनी आकाशीय पटल को इंद्रधनुशी बनाने में अपनी छटा बिखेरने लगती है। मुझे याद हैं वो पल जब हम सभी नजीबाबाद वासी झूम उठे थे जब खबर आई थी कि ''पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम'' महामहिम का आशीर्वाद लेकर लौटी हैं।

रश्मि जी ने अपनी लेखनी उम्र के मध्यम पड़ाव के बाद पकड़ी, लेकिन वह पकड़ इतनी मज़बूत थी कि बड़े-बड़े राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उनका स्थान सुरक्षित रखा जाने लगा।

पीछे मुड़ना रश्मि जी के स्वभाव में नहीं थी, माँ सरस्वती ने उन्हें अपनी आगोश में लिया तो लेखन बुलंदियां छूने लगा और उनकी लेखनी का जादू सर चढ़कर बोलने लगा। रश्मि जी के लेखन की एक खूबी यह भी रही कि उन्होंने जो देखा और जो महसूस किया वही लिख रश्मि जी ने अपनी लेखन साधना में रहकर कई कालजयी पुस्तकें लिखकर मानव के अंतःकरण को झकझोर कर दिया। आपकी रचनाएँ देश के बड़े-बड़े काव्य संकलनों में छप चुकी हैं रश्मि जी इसलिए भी साहित्य क्षेत्र में अपना अलग मुकाम रखती हैं क्योंकि उनकी बाल कहानियां, वृद्धावस्था, सामाजिक विषयों और पर्यावरण पर लिखी पुस्तकें चिरकाल तक स्मरणीय रहेंगी।

रश्मि जी का कृतित्व और व्यक्तित्व इतना सहज और सरल है कि उसे शब्दों में बांधना कठिन कार्य है क्योंकि उन्होंने जो कहा जो लिखा वह एक वरिष्ठ लेखक गीतकार और पर्यावरण प्रेमी ही कह सकता है और लिख सकता है।

उत्तरोत्तर वृद्धि की कामना के साथ उनकी उर्जित लेखनी को नमन

बालेश जैन
नहटौर जि. बिजनौर

रश्मि अग्रवाल प्रारंभ से ही तीक्ष्ण बुद्धि की थी

आज की उद्‌ीयमान लेखिका, कवयित्री, समाज सेविका, पर्यावरण विशेषज्ञ और कुशल वक्ता श्रीमती रश्मि अग्रवाल का जन्म जिला बिजनौर के छोटे कस्बे नहटौर में हुआ था। आपके पितामह बाबू श्री चन्द जी अपने समय के नहटौर के एक प्रतिष्ठित धनी मानी और सेवाभावी उदार मन व्यक्ति थे। आपके पूज्य पिता श्री संतोष कुमार जैन भी साहित्यिक अभिरूचि के कवि थे और नगर की साहित्यिक गतिविधियों में बढ़चढ़कर भाग लेते थे। आपके पूज्य चाचा जी श्री सतीश कुमार जैन दिल्ली के जैन समाज के सुप्रसिद्ध व्यक्ति थे श्री सतीश कुमार जी एक सुस्थापित लेखक थे आपकी रचनाएँ देश के पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती थी। इस प्रकार साहित्यिक अभिरूचि के संस्कार रश्मि जी को अपने परिवार से विरासत के रूप में मिले।

श्रीमती रश्मि अग्रवाल प्रारंभ से ही तीक्ष्ण बुद्धि की थी। विद्यालय जीवन में आपको कभी असफलता का मुंह नहीं देखना पड़ा। आपके मन में सदा से ही कुछ विशेष कर गुजरने की इच्छा बलवती रही है। आपका विवाह २० वर्ष की आयु में डॉ. वीरेन्द्र कुमार जी के साथ हुआ। प्रारम्भ में घर गृहस्थी को संभालने में लगी रही। बच्चों के सुस्थापित हो जाने के बाद फिर से कुछ कर गुजरने की इच्छा बलवती हो उठी और अपने लेखन- पर्यावरण तथा समाज सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया जिसमें आपको निरंतर सफलता मिली। रश्मि जी प्रारम्भ से ही अध्यवसायी थी लेखन की ओर बाल्यकाल से ही आपका स्वाभाविक सम्मान था। प्रकृति की मनोहरता पर आप प्रारंभ से लट्टू थी।

रश्मि जी एक मननशील और अनेक विषयों की गंभीर अध्यवसायी है। उनके लेखन से उनके रूचि के विषयों की विभिन्नता और विशालता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। रश्मि जी की भाशा शक्तिशाली और ओजपूर्ण होती है। विषयानुकूल उसमें कहीं सौम्यता और कहीं उग्रता है। उनका प्रत्येक शब्द और शब्द ही नहीं वाक्य भी उनके विचारों और भावों का सच्चा वाहक होता है। भाषा किलष्टता कहीं देखने को नहीं मिलती है। भाषा सरल सुबोध और विशुद्ध होती है। जो सहज ही समझ आती है।

एक कुशल पत्रकार होने के कारण रश्मि जी की अधिकांश रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में प्रकाशित होती हैं। वे कोरी साहित्य सेवी ही नहीं एक लोकसेवी साहित्यकार भी हैं। उनके लेखन में समाज के विभिन्न वर्गों की समस्याओं के साथ समाधान की प्रधानता रहती हे। यही कारण है कि विभिन्न सामाजिक, धार्मिक और शैक्षणिक संस्थान रश्मि जी का जब जब समाज की ज्वलंत समस्याओं पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित करते रहते हैं और उन्हें सम्मानित करते हैं इसी सिलसिले में उन्हें प्रायः ही दूर-दूर की यात्राएं करनी होती है। जो समाज सेवा के निर्मित वे सहर्ष कष्ट उठाकर भी यात्राएं करती रहती हैं। पर्यावरण की विशेषज्ञा है। यह ऐसा विषय है जिसकी ओर जन साधारण का विशेष ध्यान नहीं जाता जबकि पर्यावरण का गहरा संबंध हमारे स्वास्थ्य और जीवन से जुड़ा हुआ है। बिना पर्यावरण की सुरक्षा के हम स्वस्थ और प्रसन्न नहीं रह सकते। उसी प्रकार रश्मि जी पर्यावरण की सुरक्षा का पाठ पढ़ाकर आमजन को स्वस्थ और प्रसन्न करने में लगी हुई हैं।

ज्यादा फ्रांस में मैंने देखा कि घर-घर में फूलों से लदे पौधों की भरमार रहती है। ३ मास के लम्बे समय समय में भी ऐसा घर देखने को नहीं मिला जो पौधों से रहित शहर हो या कस्बे या ग्राम फूलों की बहार सब जगह एक सी थी। शहरों के चारों कोनो में जन साधारण के लिए विशाल पार्क बनाये गये हैं जो बहुत ही अच्छी तरह संरक्षित होते हैं। उन पार्कस की बहुत उच्च स्तर पर देखभाल और साफ-सफाई की जाती है। जहां पर प्रातः भ्रमण का अपना अलग ही आनन्द था। पूरे शहर में कहीं गंदगी का नामो निशान नहीं। शायद यही कारण था कि अस्पतालों और मेडिकल स्टोर्स पर कभी गिनती के कुछ मरीजों से ज्यादा देखने को नहीं मिले। यह सब केवल पर्यावरण की रक्षा के कारण ही संभव हुआ। उसी पर्यावरण की रक्षा के लिए रश्मि जी जी जान से जुटी हुई हैं। ईश्वर उन्हें उनके प्रयत्नों में सफल करे।

अब रश्मि जी ने अपने बहुआयामी दृष्टिकोण के कारण संपादन का कठिन कार्य हाथ में लिया है। यह कार्य सरल नहीं होता है। एक संपादक को देखिये लेखकों से वास्ता रखना होता है, उन्हें समझना और समझाना होता है तब कहीं जाकर संपादक विभिन्न लेखकों की विभिन्न विशयों पर रचनाएं एकत्रित कर पाता है। उन्हें रात-दिन काम करना होता है।

रश्मि जी का पत्रिका प्रकाशन का दुरुह कार्य उनके अदम्य साहस का प्रतीक है। ऐसे समय में जबकि अधिकांश स्तरीय पत्रिकायें दम तोड़ चुकी हैं, बंद हो चुकी हैं तब एक नयी पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ करना एक साहसिक प्रयास है। अपनी पत्रिका के प्रथम अंक में उन्होंने वर्तमान सामाजिक परिलेख में उपेक्षित वृहदजनों की समस्याओं और समाधान पर विशेष ध्यान दिया है। यह वृद्धजनों के लिए बहुत उपयोगी है।

अपने विभिन्न और बहुआयामी सोच और कार्य कलाप के कारण ही रश्मि जी को भारत के महामहिम राष्ट्रपति जी के करकमलों से पुरस्कृत होने का सौभाग्य मिला। विभिन्न संस्थाओं द्वारा दिये गए सम्मानीय पद को भी तो गिनती करना भी मुश्किल है। आशा है रश्मि जी इसी प्रकार साहित्य साधना करते हुए प्रगति पथ पर अग्रसर रहेगी।

चलते-चलते एक राज़ की बात और बता दूँ। रश्मि जी के परिवार को प्रकृत से धन धान्य और सम्मान तो मुक्त हस्तों से मिला ही है। साथ ही शारीरिक सौष्ठव और सुंदरता का अनुपम उपहार भी प्रकृति ने दिल खोलकर दिया है। परिवार के सारे ही सदस्य शारीरिक सौष्ठव व सुंदरता में एक-दूसरे से होड़ लगाते थे। रश्मि जी भी उस होड़ में कभी पीछे नहीं रही हैं।

डॉ० योगेन्द्र प्रसाद
चन्दक
मो० ६५५७५२८७८०

एक संवेदनशील साहित्यकार रश्मि अग्रवाल

मेरे साहित्यिक गुरु एवं मुझे लेखनी पकड़वाने वाले मूर्धन्य विद्वान एवं साहित्यकार स्वः डॉ. मेघा सिंह चौहान कहा करते थे कि साहित्य साधक एक ऐसी भूखी होती है जिसे जितना ग्रहण किया जाये वह उतनी ही बढ़ती जाती है। यह बात नजीबाबाद की वरिष्ठ साहित्य सेवी एवं रचनाकार डॉ. रश्मि अग्रवाल जी के सन्दर्भ में भी मुझे सटीक लगती है क्योंकि जनपद के निरंतर लिखने वाले साहित्य मनीषियों की श्रेणी में उन्हें भी अग्रिम पंक्ति में रखा जा सकता है। यह एक अलग बात है कि मैंने अभी तक उनकी किसी कृति का रसास्वाद नहीं लिया है, जो मेरा दुर्भाग्य है लेकिन उनकी अभी तक लिखित विधाओं पर लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाश में आ चुकी हैं जिनमें कहानी, बाल रचनाएँ, वार्ताएं, आलेख एवं कविता आदि सभी कुछ समाया हुआ है।

जनवरी उन्नीस सौ बावन में जन्मीं डॉ. रश्मि अग्रवाल जी मूलतः एक चिकित्सक हैं और एक चिकित्सक समाज एवं देश की विभिन्न परिस्थितियों से विसंगतियों से एवं उसमें होने वाले परिवर्तनो से निकट से परिचित होता हे और जो व्यक्ति जितना संवदेनशील होता है वह उतना ही सटीक एवं प्रेरणादायक लेखन करने में संक्षम होता है। डॉ. रश्मि जी भी एक ऐसी ही रचनाकार हैं। उन्होंने अपने जीवनकाल में मानव एवं समाज का गहराई से परखा जाना है और पर्यावरण, बागवानी के साथ ही आपको पुष्पों से भी अगाध प्रेम रहा है यही कारण है कि पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम और बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी कृतियां उन्होनें हिन्दी साहित्य को दी। एक चिकित्सक होने के नाते स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने का आह्वान करते हुए योग साधना और स्वास्थ्य जैसी कृतियों द्वारा योग के महत्व को भी प्रतिपादित किया।

इसके साथ ही यह डॉ. रश्मि जी की संवेदनशीलता ही कही जायेगी कि वे समय-समय निर्धन बच्चों के लिए शिक्षा हेतु सहयोग करने वाले कार्यक्रम चलाती रहती हैं। तथा वाणी अखिल भारतीय हिंदी संस्थान, नजीबाबाद द्वारा समय-समय पर साहित्य सेवा, समाज सेवा एवं राष्ट्रसेवा, वृक्षारोपण आदि कार्यों में आयोजन करती रहती हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता तो यही है कि वे साहित्य साधना में निरंतर जुटी रहती हैं अर्थात नित्य ही वे कुछ ने कुछ लिखती अवश्य हैं और सुबह का लगभग एक डेढ़ घंटा उन्होंने इसके लिए निर्धारित किया हुआ है।

डॉ. रश्मि अग्रवाल जी की इस सतत् साहित्य साधना, समाज सेवा, पर्यावरण एवं स्वास्थ्य सेवा, गरीबोत्थान के कार्यों आदि के लिए आपको अभी तक सरकारी, अर्धसरकारी एवं साहित्यिक सामाजिक आदि क्षेत्रों में विभिन्न पुरस्कार। सम्मान आदि मिल चुके हैं जिनमें राष्ट्रभाषा गौरव पुरस्कार, नारी सम्मान, भारती श्री सम्मान, संस्कार सारथी सम्मान, गोपाल रत्न सम्मान, हिन्दी भाषा भूषण सम्मान, ज्ञानरत्न सम्मान, लेखन प्रतिभा सम्मान, पर्यावरण चिंतक सम्मान तथा राधा बल्लभ उपाध्याय स्मृति सम्मान आदि प्रमुख हैं। ओपन डोर साप्ताहिक ने डॉ. रश्मि जी पर विशेषांक निकालने का निर्णय लेकर एक सराहनीय एवं उत्कृष्ट कार्य किया है तथा एक योग्य व्यक्ति को उसका उचित स्थान दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मैं डॉ. रश्मि जी को सुखद एवं दीर्घ जीवन की कामना ईश्वर से करते हुए ओपन डोर के संपादक को भी बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि दोनों ही आगे भी निरंतर साहित्य सेवा में इसी तरह संलग्न रहेंगे।

आलोक त्यागी
नजीबाबाद

एक उभरती हुई छवि

जीवन में अनेक व्यक्तियों से मिलने, बातें करने और अनुभवों को साझा करने का अवसर मिल जाता है। इनमें से समय के साथ कुद स्मृतियाँ घूमिल हो जाती है और कुछ स्मृतियां हमेशा के लिए मन मस्तिष्क पर अंकित हो जाती हैं। श्रीमती रश्मि अग्रवाल से मुलाकात ऐसी थी कि यह ओपन डोर समाचार पत्र एक शोधादर्श पत्रिका के सम्पादक बड़े भाई अमन जी के साथ मैं रश्मि जी के आवास पर कदम रखा तो मन प्रसन्नता से भर गया मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही चिड़ियों की चहचाहट सुनाई दी, विभिन्न प्रकार के पुष्पों से पल्लवित लघु वाटिका मन को हर्षित कर रही थी। चुन-चुन कर एकत्र की गयी प्रत्येक वस्तु बेहद व्यवस्थित थी मैं लम्बे समय तक इस दृष्य को निहारता रहा और गहन सोच में पड़ गया हम बीच मुझे मुनव्वर राणा का शेर याद आया-

नए कमरों में अब चीजें पुरानी कौन रखता है।
परिंदों के लिए प्यालों में पानी कौन रखता है।
एक हम हैं जो सम्भाले है विरासत को वरना।
सलीके से बुजुर्गों की निशानी कौन रखता है।

प्रसन्न मन से हमने घर में प्रवेश किया और पहली मुलाकात में ढ़ेरों बातें मैंने महसूस किया वास्तव में पर्यावरण को स्वच्छ अंग निर्मल बनाने की चाह, समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रोत्साहित करने का ज़ज्बा और जो जिया उसको सच्चाई से लिखने का हौंसला ये सब बातें एक व्यक्ति में समाहित होना दुष्कर है। मैंने रश्मि जी की कई किताबें पढ़ी अच्छी सोच और समाज की सच्चाई और अच्छाई की ओर ले जाने की प्रबल इच्छा नज़र आयी। आपने अपने लेखन में ऐसे विषय चुने जिनकी जरूरत है पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम?, अरी कलम तू कुछ तो लिख, वाणी संस्था को निरंतर गति प्रदान करना विशेश रूप महिलाओं को मंच प्रदान करना आसान नहीं है लेकिन आप सहजता से कर रही हैं।

हाल ही में आपने शोधादर्श पत्रिका के वृद्धावस्था विशेषांक का सम्पादन किया पत्रिका के आवरण पर पिताजी श्री सत्य कुमार त्यागी का फोटो लगाया और आपकी बुजुर्गों के प्रति आस्था और कर्तव्यों से चरितार्थ किया आपने सिद्ध किया कि बहुत बड़े नामचीन व्यक्ति ही नहीं एक गाँव के साधारण विमान में भी सच्चाई होती है।

शोधादर्श के वृद्धावस्था विशेषांक के अनावरण के साथ ही आपने अपनी आगामी पुस्तक वृद्धावस्था (सामाजिक अध्ययन) पर श्री सुधीर राणा के माता-पिता का फोटो आवरण पर चुनकर समाज से उच्छ जिज्ञासा की ओर इंगित किया है और आज उच्च विचारों वाली, स्वच्छ हृदय वाली नारी है आज न केवल नगर नजीबाबाद से बल्कि सम्पूर्ण जगत की एक उभरती हुई छवि है ईश्वर से प्रार्थना है आप दीर्घायु हों।

डॉ. रामगोपाल भारतीय
१२८ शील कुंज, रूड़की रोड़ मेरठ-२५०००१
मो० ०८१२६४८१५१५

पं. रमेश चन्द्र त्रिवेदी
६७७ बी, आवास विकास कालोनी, उन्नाव
पिनकोड- २०९८०१, मो.- ९६२१४६३०४६

समाज सेवा, साहित्य व पर्यावरण की त्रिवेणी : रश्मि अग्रवाल

सरलता, सौम्यता और शालीनता की प्रतिमूर्ति श्रीमती रश्मि अग्रवाल के अभिनंदन ग्रंथ हेतु कुछ लिखते हुए अत्यन्त हर्श एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। श्रीमती अग्रवाल एक ऐसे नारी समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं जो समाज और प्रकृति के प्रति पूर्णतः समर्पित है तथा विषम परिस्थितियों में भी अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत और जागरूक है। उनके इस पवित्र मिशन में उनके पति सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. वीरेन्द्र कुमार अग्रवाल जी का तो विशेष प्रोत्साहन है ही, उनके परिवार का भी भरपूर सहयोग मिल रहा है। साहित्य की दृष्टि से उर्बरा और ग़जल सम्राट एवं दुष्यन्त कुमार की जन्मस्थली नजीबाबाद की निवासी श्रीमती रश्मि अग्रवाल ने अपने नाम को सार्थक करते हुए अपनी बहुमुखी प्रतिक्षा की रश्मियाँ न केवल जनपद बिजनौर अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष में बिखेर कर एक समर्थ लेखिका के रूप में ख्याति अर्जित की है। उन्हें भारत के राष्ट्रपति महोदय द्वारा उनकी पुस्तक पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार २०१५ भी प्रदान किया गया है। अखिल भारतीय हिन्दी संस्थान वाणी सहित श्रीमती रश्मि अग्रवाल अनके साहित्यिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक संस्थाओं के लिए अभूतपूर्व कार्य कर रही हैं तथा देश-विदेश की ४० से भी अधिक प्रशिक्षित संस्थाओं से अनके सम्मान व पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं।

एक कवयित्री और लेखिका के रूप में उनका सृजन हमें उनकी कृतियाँ कहावतों की रोचक कहानियाँ, पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम, योग साधना और स्वास्थ्य, इन्द्रधनुषी कहानियाँ, पर्यावरण प्रश्न और भी हैं, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, रश्मि की बाल कहानियाँ में देखने को मिलता है तो एक समर्थ संपादिका के रूप में वाणी एक, वाणी दो तथा समकालीन महिला साहित्यकार में उनकी दक्षता, क्षमता और योग्यता के दर्शन होते हैं। इतना ही नहीं उन्होंने ३० से अधिक महिलाओं को सशक्त बनाते हुए उनका जीवन, परिवर्तित किया है अनके गरीब बच्चों को निःशुल्क शिक्षा, कमजोर व निर्धन लोगों के लिए निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराके सामाजिक क्षेत्र में भी अनके कीर्तिमान स्थापित किए हैं। उनका प्रकति-प्रेम सर्वविदित है। पर्यावरण संरक्षण के लिए उनके नेतृत्व में अनेक वृक्षारोपण के कार्यक्रम आयोजित किए गये हैं जो उनकी अनवरत यात्रा के स्वर्णिम पड़ाव हैं। उनके अदम्य साहस, प्रबल इच्छाशक्ति और प्रकृति व ईश्वर में गहरी आस्था का ही परिणाम है कि जीवन के भीषणतम समय जब वे अस्वस्थता के कारण वर्षों शय्या कर रहीं, मृत्यु से पल-पल सामना होने के बावजूद संघर्षों के सोपानों को पार करते हुए सभी बाधाओं को परास्त कर न केवल पुनः स्वास्थ्य प्राप्त किया अपितु दोगुने उत्साह से सामाजिक व साहित्यिक क्षेत्र में दिन-रात कार्य कर अभूतपूर्व उपलब्धियाँ अर्जित की। उनका जीवन उन सभी महिलाओं के लिए अनुकरणीय उदाहरण है जो जीवन के विकट संघर्ष का सामना करने के बजाय हार स्वीकार कर लेती हैं।

श्रीमती रश्मि अग्रवाल का प्रकृति के प्रति प्रेम और मानव संस्कृति को बचाने की चिंता आप उनकी पर्यावरण पर आधारित पुस्तकों की समीक्षा अथवा उनका पाठन कर माप सकते हैं जबकि उनके सामाजिक, पारिवारिक व राष्ट्रीय सरोकार आप उनकी कहानियों में तथा कविताओं में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं, महसूस कर सकते हैं।

उनके व्यक्तिगत संदर्भ में तो इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि कोई भी व्यक्ति जो उनसे एक बार मिल लेता है, उनके सरल, सौम्य और निष्छल स्वभाव को सदा के लिए अपने हृदय में सम्मान के आसन पर आसीन करने को विवश होता है। उनके सम्पूर्ण परिवार से मिलकर अपनेपन को अहसास होता है वही किसी मनुष्य की अनमोल धरोहर है अमूल्य निधि है। इसलिए श्रीमती रश्मि अग्रवाल को समाज सेवा, साहित्य और पर्यावरण की त्रिवेणी कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि श्रीमती रश्मि अग्रवाल जी के व्यक्तित्व और कृतित्व की सुगन्ध अनन्त काल तक इस जगत को सुवासित करती रहेगी और ये अक्षय यश को प्राप्त करेंगी। उन्हें दीर्घ स्वस्थ जीवन की असीम मंगल कामनाएँ।

परम पूज्य दिव्यशक्ति शुकीर्ति की उत्तुंग पताका : मा. रश्मि अग्रवाल जी

विश्व संज्ञानार्थ
सुवा जनम सुनि मगन मन, तात हृदय हर्षाय।
सुवा दर्शहित मनहि मन, मन नहि मनहि समाय।।
मातृ, पिता तब सदृगुण आगर।
सुहाश लहेउ कुल कीन उजागर।
सुवा सुलभ, जग-मंगल कारी।
संज्ञा लीन्हि देवि तनुधारी।।
रश्मि नाम जानि, जग दीन्हा।
वैभव सत्य स्ववश करि लीन्ह
परम पूज्य निज कुल की लाली।
जन-जन के मन की हरियाली
सूर्य प्रभा सी कीर्ति तुम्हारी।
ज्योतिर्दा जीवहिं हितकारी।
हृदय ध्वनि-विनय
गुरु, माता-पिता की गुरूत्व शक्ति से सम्पन्न श्री सुरश्मि नाम, लब्ध ज्ञान को अन्तर्मन, अन्तर्द्रष्टि, आत्मचित्त से सफलता की आहती, महाशक्ति, महामाया, गौरी नन्दन व वरदहस्त, माँ वीणा पाणि के मधुराशीश अक्षुण्ण सुयश वैभव का तिसक श्री सुता के श्रीभाल पर साहशांक सा ज्योतिर्मय सुशोभित रहे।

अमर उजाला नजी

न्यूज डायरी

समाजसेवी रश्मि अग्रवाल पर्यावरण मंत्री को पुस्तक सौंपी।

रश्मि अग्रवाल ने केंद्रीय मंत्री को सौंपी पुस्तक

नजीबाबाद। नगर निवासी साहित्यकार रश्मि अग्रवाल ने केंद्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन से भेंटकर उन्हें मालन नदी स्वच्छता अभियान की जानकारी दी। रश्मि अग्रवाल ने पर्यावरण संतुलन जागरूकता की पुस्तक प्रदान की। समाजसेवी मिशन से जुड़ीं लेखिका रश्मि अग्रवाल ने केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री डॉ. हर्षवर्धन से दिल्ली में भेंट की। साहित्यकार रश्मि ने केंद्रीय मंत्री को पर्यावरण प्रश्न और भी हैं... पुस्तक भेंट की। रश्मि ने पर्यावरण असंतुलन के कारणों कचरा, ग्लोबल वार्मिंग, जंगलों के कटान सहित अनेक ज्वलंत मुद्दों पर केंद्रीय मंत्री से चर्चा की। उन्होंने नगर में चलाए जा रहे मालन नदी स्वच्छता अभियान, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और कन्याभ्रूण हत्या रोकने के मिशन की केंद्रीय मंत्री को जानकारी दी। केंद्रीय मंत्री ने पर्यावरण संरक्षण के लिए श्रेष्ठ हरित कार्यों को व्यवहार में लाने तथा पर्यावरण संरक्षण के सरकारी अभियान में जनसहभागिता की जरूरत बताई। उन्होंने रश्मि अग्रवाल द्वारा पर्यावरण जागरूकता के लिए लेखन के प्रयासों की सराहना की।

प्रथम बार आतिथ्य का सही धर्म समझ में आया था

Shyam Prakash Tiwari
Principal
Walia Global Academy,
Najibabad

डॉ० अशोक कुमार गुप्त 'अशोक'
संस्थापक/अध्यक्ष ''बटोही'' साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था

अंजनीसैण से श्री बद्रीनाथ की यात्रा करके सपत्नीक हरिद्वार आ चुका था मैंने उन्हें बताया तो वह आदेशित करके कहा भाई आज तो आपको नजीबाबाद आना ही पड़ेगा मेरा टिकट कानपुर के लिए दूसरे दिन का था मैं नजीबाबाद लगभग ३ बजे दोपहर में पहुँच सका तब तक दोनों लोग मेरी प्रतीक्षा में बैठे थे भोजन साथ ही करना हुआ।

आज प्रथम बार आतिथ्य का सही धर्म समझ में आया था। डॉ. साहब सरल हृदय मृदुभाषी और विशेष गुण अपनी पत्नी के सभी कार्यों में तन्मयता के साथ देने वाले दिखाई पड़े चूंकि मेरी पत्नी भी साथ अस्तु अब हम चारों लोग बातों में इतने तल्लीन हुए कि लगा ही नहीं कि वह प्रथम भेंट है रश्मि जी के अनारत में माँ सरस्वती साक्षात् विद्यमान है मुझे सभागार में अनेक प्रतीक चिह्न, छायाचित्र तथा स्मृति अवदान में चिह्न रखे हुए हैं। आपकी साहित्य साधना अनवरत चलती रहती है।

लम्बी बीमारी के बाद टूटा मनोबल जिसमें समाज जीवन की गति पर विराम सा लगा दिया था तब उनकी जीवटता ने उनके सकारात्मक विचारों को जन्म दिया तथा जीवन की विभिन्न विसंगतियों को कागज पर उकेरने का काम किया। लेखन के प्रिय विशय बने विसंगतियों से खोज गए अर्थ, जिनमें आध्यात्म प्रकृति तथा सामाजिक जाने माने में अनेक मुद्दे। आपके लेखन ने वर्ष २००५ से गति पकड़ी जिसके कारण सृजन हुआ कहावतों की रोचक कहानियां, साहित्यकार, पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम, इन्द्रधनुषी कहानियां, योग साधना और स्वास्थ्य आपकी संपादित कृतियों, वाणी एक, वाणी दो एवं महिला साहित्यकार विशेष चर्चित है।

आपके साहित्य अनुदान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अनेक संस्थाओं में समय-समय पर सम्मानित किया। आप भारत के प्रथम नागरिक भारत के राष्ट्रपति महामहिम डॉ. प्रणव मुखर्जी द्वारा सम्मानित हो चुकी हैं।

समाजिक दायित्व का दायरा विस्तृत होता है जैसे सागर में जितने गहरे जाओ तो मोती पाओगे इसी भाव के साथ आप पर्यावरण संतुलन स्मारक रक्षा एवं महिला स्वावलंबन आप अपनी स्व स्थापित संस्था में माध्यम आखिल भारतीय हिन्दी संस्थान नजीबाबाद के बैनर से वाणी संस्था का परचम फहराया है। मैं उन्हें उनकी कर्मठता, जीवटता के लिए उन्हें बधाई देता हूँ तथा माँ सरस्वती से प्रार्थना करता हूँ कि वह स्वस्थ, सुखी रहकर शतायु हों जिससे साहित्य और समाज को बहुत कुछ मिल सके।

I am indeed very thankful to God as I meet a motherly person with multifaceted personified personality at Najibabad.
She is an Author (President Awardee), A Motivational Speaker, An Environmental Activist, A Philanthropist and a Social Reformer and what not.
She is none other than my my Maa ji Mrs Rashmi Agarwal Ji.
She doesn't require any wishes at my end, rather I am grateful that I continuously receive her blessings and affection.
I pray to God for her good health and long life.

'पर्यावरण : प्रश्न और भी हैं' एक शोध परक पुस्तक

डॉ. कृष्ण गोपाल दीक्षित 'दद्दा जी'
पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर
२०५, पंचवटी (झण्डा चौराहा)
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं
प्रौद्योगिक विश्व विद्यालय,
कानपुर विनायकपुर, कानपुर-२०८०२५

पुस्तक 'पर्यावरण : कितने जागरूक हैं हम' को पढ़कर रश्मि के पर्यावरण प्रेम एवं मानवीय चेतना के प्रति, मानव मन में एक आधारभूत ढाँचा तैयार कर दिया था कि रश्मि कितनी अधिक जागरूक हैं पर्यावरण के प्रति। परंतु इस पुस्तक 'पर्यावरण : प्रश्न और भी हैं' में पर्यावरण के प्रति ज्ञानवर्धक सामग्री देकर रश्मि जी ने जनमानस का उपकार किया है। यह पुस्तक शोध करने वाले विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं अनुकरणीय है।

पर्यावरण को रोजगार से जोड़ना, हवा, पानी, मिट्टी, ग्लोबल वार्मिंग, पॉलीथीन जहरीले होते खाद्य पदार्थ, ऊर्जा के विकल्प, नहीं संभले तो कम पड़ जायेगी धरती आदि विचारणीय बिन्दुओं पर विस्तृत एवं सारगर्भित आलेख-पर्यावरण के प्रति चेतना जगाने का कार्य करते हैं।

शब्द शिल्पी रश्मि की भाशा का प्रवाह पाठक के मन को जोड़े रखता है। एक चैप्टर को दूसरे चैप्टर से जोड़ने में लेखिका ने एक नई विद्या को जन्म दिया है। विशय को आगे जानने व पढ़ने की उत्सुकता प्रत्येक आयु वर्ग के लोगों में सरलता के साथ जुड़ती चली जाती है। विदुशी लेखिका पर्यावरण पर बात करने में सिद्धहस्त तो है ही, सृजन की नवीन परम्परा व ज्ञान की वाहक भी है। मेरी कामना है कि पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु एक विश्व व्यापी अभियान रश्मि जी चलाएँ और निरंतर आगे बढ़ती जाये। मेरा आशीर्वाद सदैव उनके साथ है।

काली रजनी बीत रही है, अब आने दो सुखद उजाला।
खूब लगाओ वृक्ष धरा पर, जो है जीवन का रखवाला।।

प्रकाशन
आपकी किताब आपके द्वार...
ओपन डोर
नजीबाबाद
पुस्तक प्रकाशित कराएं

रश्मि पुंज वो तेरह कविताएँ

डॉ. अवधेश कुमार 'अवध'
मो० ८७८७५७३६४४

सन् २०१८ के दिसम्बर की तेरहवीं तारीख और राजा विक्रमादित्य की नगरी उज्जैन में माँ क्षिप्रा का पावन कूल। बादलों की ओट से भगवान भास्कर की आँख मिचौली में उनके दर्शन की उत्कट आतुरता। श्रद्धेय मौनीबाबा के आश्रम का दुल्हन की भाँति शृंगारिक मंच जिस पर विराजमान साहित्य, कला, साहित्य और संस्कृति के महान पुरोधागण। विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ, भागलपुर का दीक्षांत समारोह। कुलाधिपति मानस शिरोमणि डॉ. सुमन भाई, मुख्य अतिथि डॉ. रामस्वरूप भारती, कुलसचिव डॉ. देवेन्द्र कुशवाहा सहित दर्जनों वरद संतति की पावन उपस्थिति। पाँच सौ सरस्वती साधकों से खचाखच भरा हुआ प्रांगण जिसमें एक एक कर चयनित उत्कृष्ट साधकों को सम्मानोपाधि वितरण का नयनाभिराम कार्यक्रम सुचारू। एक तरफ मैं भी कुर्सी पर बैठकर हर मनोरम दृश्य को दिल में उतारने में संलग्न था। अचानक एक हाथ मेरी ओर बढ़ा जिसमें एक लिफाफा था। मेरे और उस अपरिचित के बीच लिफाफे का बंधन। ऊपर चार आँखें और नीचे दो हाथ जिनमें लिफाफा उधर से इधर को खिसका। जब मेरा उस पर पूर्ण अधिकार हो गया तो वह हाथ वापस चला गया और वो अपरिचित जिसका कुछ परिचय उसकी अनुभव जन्य सौम्यता से मिला तथा शेष लिफाफे में बंद था। छः दशक के विशाल अनुभव से दमकता चेहरा जिसमें साड़ी में लिपटी एक औसत भारतीय नारी। क्षणांश में ओझल। मेरा ध्यान लिफाफे के बाहर पृष्ठ का अवलोकन किया और फिर निमग्न हो गया मंचीय भव्यता में।

आज फिर वह दृश्य आँखों में माँ क्षिप्रा की धवल धार की तरह उमड़ा तो अनायास ही वह लिफाफा अनावृत्त हो गया। जो अनमोल रत्न उसमें से निश्कृत हुआ, उसको लेखनी अपने आगोश में लेकर पल्लवित करने लगी। वाणी अखिल भारतीय हिंदी संस्थान, नजीबाबाद से ६७ वर्षीय कवयित्री सुश्री रश्मि अग्रवाल की १३ कविताएँ। इनमें नारी और नारी के दो रूप माँ और बेटी पर कविताएँ संग्रहित हैं। इंसान, रिश्ते, प्रकृति और जिंदगी को छूने का सफल प्रयास भी सम्मलित है।

हम जब अपने चारों ओर खुले चक्षुओं से अवलोकन करते हैं तो प्रमुखतः तीन सत्ताओं का आभास मिलता है। प्रथम आत्मा जिसमें हमारा समस्त जैव जगत समाहित है, द्वितीय परमात्मा जो परम सत्ता के रूप में सबको संचालित कर रहा है और तृतीय प्रकृति जिसमें समस्त सचर-अचर समाये हुए हैं। आत्मा का सम्पूर्ण भावायाम, परम सत्ता की समग्र विशेषताएँ और प्रकृति का अनन्त औदार्य जब समाहित होकर एक जैविक पिंड बनाता है तो उसे कहते हैं नारी। नारी जिसने कई रूप लेकर रिश्तों की नींव डाली है। यह स्वयं में जिंदगी का मूल और इंसानियत की सशक्त पैरोकार है।

कवयित्री रश्मि अग्रवाल की नारी विविध रिश्तों को जानती है। दूसरों की इच्छाओं को ढोती हुई अन्तर्विरोधों में पिस रही है। उसका समस्त जीवन अहर्निश काम करते हुए बीतता है। प्रथाओं की बेड़ियाँ उसको हर क्षण पग बाधा बनकर आगे बढ़ने से रोकती हैं। उसको सदैव दूसरों के सवालों से जूझना पड़ता है लेकिन उसके सवालों का जबाव किसी के पास नहीं है। माँ ही नारी का मूल रूप है। किंतु पुरुष उसे भोग्या के रूप में देखना चाहता है जो पारिवारिक विघटन का सर्व प्रमुख कारण भी है। बेटी ही होती है माँ की अगली पीढ़ी जो किसी और के घर की बहू बनती है संतति संवाहिका का एकाधिकार कार्य सम्पादित करती है। उत्तर प्रदेश के नहटौर में पैदा हुई रश्मि जी ने लिंगीय विशमता और उसके दुखद परिणामों को अपनी आँखों से देख है जो बेटी पर सृजन करते हुए परिलक्षित होता है। बेटी को न केवल सर्वोत्तम फूल के रूप में अलंकृत करती हैं बल्कि चुनौती देकर कहती हैं कि यदि भूमि बंजर हो जाये तो बीज अकेला कुछ नहीं कर सकता। एक भ्रूण कन्या माँ से विनती करती है कि हे माँ मुझे भी दुनिया में आने दो। बेटी की व्यथा कथा इसके द्वारा समझा जा सकता है कि एक चुटकी सिंदूर लगने के बाद वह परायी हो जाती है। सबकुछ उसको भूलकर बहू हो जाना होता है।

माँ के बारे में कुछ कह पाना लेखनी के वश में नहीं फिर भी भाव प्रकट किए बिना रहा नहीं जा सकता। रचनाकार एक बेटी बनकर माँ को समझाती है कि हे माँ, तुम स्वयं को सिद्ध मत करो तुम तो स्वयं सिद्धा हो। तुम्हारे मातृत्व के सहारे हम कोई भी सीमा छू आते हैं या लाँघ भी आते हैं। तुमसे ही सकल संसार है। माँ के हजारों रूप हैं। सरस्वती, दुर्गा और जननी माँ ही है जो संतान के लिए आवश्यकतानुसार हजारों रूप धारण कर लेती है।

संसार उपभोक्ता बाजार बना हुआ है। कृय विकृय को छोड़कर कुछ भी शेष नहीं है। पैसा से सूर्योदय होता है और पौसा से ही चन्द्रोदय। वक्त के अभाव में रिश्ते पीछे बहुत पीछे छूट गए हैं। इंसान ने बाजार बनाकर रिश्तों की बलि दे दी। इन रिश्तों को बचाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इंसान ने रिश्तों के साथ-साथ प्रकृति को भी नहीं बख्शा। जिंदगी को इतना जटिल बना डाला कि जिंदगी दूर होने लगी जिंदगी से। जीवनदायी पेड़ों का गुहार भी इंसान के पत्थर उर को पिघला न सकता। कवयित्री पूरी बेबाकी से कहती हैं कि हम जब गलत बोते हैं तो उसका परिणाम गलत ही होता है फिर हम अपनी गलती को भूलकर सभी को शत्रु मान लेते हैं।

नारी सशक्तिकरण, प्रकृति संरक्षण और सामाजिक चेतना के प्रति समर्पित हैं सुश्री रश्मि जी। गद्य और काव्य की विविध विधाओं में इनकी आठ पुस्तकें प्रकाशित हैं। तीन पुस्तकों का सफल संपादन और दो पत्रिकाओं में सक्रिय सम्पादकीय भागीदारी है। सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं से दर्जनों उल्लेखनीय सम्मान से आप सम्मानित हैं। राष्ट्रपति के कर कमलों द्वारा भी सम्मानित होने का गौरव प्राप्त है। स्वास्थ्य शिविर लगवाना, महिलाओं को रोजगार देना और पर्यावरण के प्रति जनचेतना विकसित करना इनके प्रमुख कार्य हैं।

जिन तेरह कविताओं का अनमोल खजाना मुझे प्राप्त हुआ इनमें नारी विमर्श, प्रकृति, रिश्ते और इंसान पर विशेश सृजन है। गीत, गजल, अतुकान्त एवं तुकान्त रचनाएँ भी हैं। 'सुनें पेड़ की गुहार' में भाव विरोधाभास परिलक्षित है। 'बेटी तो सर्वोत्तम फूल' बेहर सरस गीत है। 'तुम व्यर्थ नहीं हो माँ' तथा 'प्रश्न हैं हजारों' बहुत ही विचारणीय रचनाएँ हैं। तेरह रचनाओं के लघु उपहार को देखकर समग्र रचनाओं की सारगर्भिता का सुखद व सहज आभास होने लगा है। हृदय पटल से सुश्री रश्मि अग्रवाल जी और उनकी स्तुत्य लेखनी का आभार।

ओमप्रकाश झा
(वरिष्ठ समाजसेवी)
मामौन दरवाजा, जानकी बाग के पास मऊ रोड़,
अम्बेडकर तिराहा, जिला–टीकमगढ़–472001 (म0 प्र0)
मो0 6260849832, 8516872326
Email- omprakashjha2208@gmail.com

डॉ. दयाराम मौर्य-रत्न
सृजना कुटीर, अजीतनगर,
प्रतापगढ़- २३०००११ उत्तर प्रदेश
चलभाश- ९४१५६२८७९६

लेखिका को उसमें केवल माँ का रूप ही दिखता है

नारी कई रूपों को चित्रित करते हुए राश्ट्रपति द्वारा पुरुस्कृत लेखिका आदरणीया रश्मि अग्रवाल जी ने अपनी रचनाओं से माँ बेटी नारी सभी के रूप अनेक जैसी-उत्कृष्ट रचनाओं के माध्यम से अपनी बात वेवाक ढंग से प्रस्तुत की ''आखिर कब तक'' में नारी को अपनी इच्छाओं का पिटारा लिए गृहस्थी रूपी पट्टे पर हस्ताक्षर करती दिखाया है, हर जगह नारी ठगी जा रही है। ''स्त्री के रूप-स्वरूप'' में लेखिका को उसमें केवल माँ का रूप ही दिखता है। मगर पुरुष ने उस शक्ति को विभक्त कर नारी और शक्ति कर दिया जिस सहचरी और भोग्या बना दिया ''बेटी है अनमोल'' वास्तव में बाबुल की फुलवारी ''अष्टक्षेत्रीय समाज भूषण, की एक कली है बेटी और संसार में बेटी अनमोल है। वही बेटी आगे चलकर वंशवेल बढ़ाती है। ''बेटी बचाओ'' में बेटी की अस्त विनय को सशक्त तरीके से निरूपित करते हुए लेखिका ने बड़े ही आर्तभाव से बेटी को कहते राष्ट्रीय भाषा स्वाभिमान न्यास हुए दिखाया है। वह विनय करती है कि मुझे जन्म देकर मेरा हक मुझे दे मथुरा द्वारा ''राष्ट्रीय हिन्दी दो माँ मैं भी संसार को देखना, पढ़ना, समझना, खेलना, बहना चाहती हूँ ''माँ के रूप अनेक'' में रश्मि जी ने बेहतरी ढंग से माँ के हर व्यवहार पर अपनी कलम चलाई है जो काबिले तारीफ है। वास्तव में माँ ऐसी ही होती है। ''प्रश्न है हजारों'' में नारी के हर उस पहलू पर विचार करने का प्रश्न हजारों हैं बेहतरीन रचना है मनुष्य को इस पर विचार करना चाहिए। आखिरी नारी की भी कुछ अपेक्षाएं हैं। इस प्रकार रश्मि जी ने अपनी कलम से बेहतरीन सृजन को प्रबुद्ध वर्ग को पढ़ने हेतु आकृष्ट किया है। रचनाएँ बेहतरीन हैं। आने वाले समय में पाठक जरूर पढ़ेंगे और सोचेंगे। उच्च स्तरीय लेखन है। शब्द सरल होने से पाठकों को शीघ्र ही समझ में आकर अर्थ करने में दिक्कत नहीं होगी।

'माँ तुम व्यर्थ नहीं हो' जैसे शब्दों से माँ को कहते हुए आदरणीय रश्मि जी ने माँ को अपना सुरक्षा कवच निरूपित करते हुए माँ खुद असुरक्षित रहती है अपना स्वयं का कोई स्वाभिमान अभिमान नहीं है लेकिन संतान स्वाभिमान बने यही धारणा माँ में समाहित है। रिश्ते फल फूलों से लालव पेड़ सदा झुक जाता हैं इसी प्रकार रिश्ते निभाने चाहिए। झुकने से ही रिश्ते निभते हैं। प्रेम स्नेह उदारता जैसे गुणों से ही रिश्ते पनपते हैं। अहंकार से रिश्ते नष्ट हो जाते हैं। जिन्दगी जैसी रचना लिखकर पाठक को आईना दिखाती है कि वास्तव में जिन्दगी क्या है उतार चढ़ाव सुख दुःख का सागर है जिन्दगी इंसान को पल भर वक्त नहीं भागमभाग वाली जिंदगी को सबसे कारण बताया है। इसमें आदमी के पास किसी से बात करने का वक्त नहीं है। माँ के रूप अनेक इस रचना में रश्मि जी बेहतरीन लेखन कर माँ के सही रूप को निरूपित किया है। सूने पेड़ की गुहार में मानव की निर्दयता को बखूबी संकेत से बताकर रचनाकार ने पेड़ की आवाज बनकर उसकी शंका को निरूपित किया है। पेड़ अपने आपको बहुत ही भयभीत लाचार असहाय समझकर शंकित है कि कब निर्दयी काटने आ जाए आनन्द सभी चाहते हैं हर प्राणी आनन्द चाहता है। वह ये भूल जाता है कि हमने शूल की शूल बोये हैं तो फूल कहां मिलेंगे। चारों ओर विष ही विष है अमृत की चाहना है तो कैसे संभव है। प्रेम से ही प्रेम मिलता है। इसलिए आनन्द तभी मिल सकता है जब हम आनन्द बांटे। यह कल्पना व्यर्थ है। यदि आनन्द चाहते हो तो आनन्द बांटो।

इस प्रकार रचनाकार रश्मि जी ने छोटी रचनाओं के माध्यम से अपनी बात को पाठकों तक पहुंचाने का सुन्दर प्रयास किया है। पुस्तक न लिखकर छोटे-छोटे आकार में यानि सागर में गागर जैसा काम कर अपनी बात पहुंचाने का नायाब तरीका निकाला जो सराहनीय है। बाकी शब्द रचना सुन्दर है। भाव एवं अर्थ सरल जो पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने हेतु ठीक है। पुन : रश्मि जी को हार्दिक बधाई और अनन्त शुभकामनाएं।

लेखिका, कवयित्री एवं कहानीकार रश्मि अग्रवाल के प्रति काव्य-शुभकामना

ज्ञान 'रश्मि' देदीप्य हैं-है व्यक्तित्व विशाल।
चिंतक-विदुशी-लेखिका आभामय है भाल।।
विविध विद्या की सृजक हैं कविता-कथा अनूप।
भाषाशैली, भाव की अजब सृजेता भूप।।
वाणी में है मधुरता सहज-सरल व्यवहार।
मृदु स्वर से आदर मिले-मिले सुमन का हार।।
सेवा जीवन लक्ष्य है मानवता है धर्म।
क्लेश मिटाना जीव का बोध तत्व का मर्म।।
सन बावन की पंचतिथि प्रथम माह अवतार।
अग्रवाल कुल-वंश है जमींदार परिवार।।
'विद्या रानी' मात हैं पिता धन्य 'संतोश'।
प्रखर रश्मि के जन्म से हुआ काव्य उद्घोष।।
धरती पावन पूज्य है नगर ख्यात नहटौर।
शहर नजीबाबाद अब कर्मभूमि का ठौर।।
सहयोगी पति योग्य हैं कहलाते 'वीरेन्द्र'।
प्रोत्साहन करते सदा मान-कीर्ति के केन्द्र।।
नारी गौरव रश्मि हे सूर्य-धरा-आकाश।
ओज किरण के पुंज का फैले तीव्र प्रकाश।।
यश तेरा बढ़ता रहे करना नित्य प्रयत्न।
'रत्न' हृदय की कामना बनो यशस्वी रत्न।।

₹ 200 RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
शोधादर्श
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका
दिसंबर 2022-फरवरी 2023
प्रो. ऋषभ देव शर्मा विशेषांक

लेख भेजें-
shodhadarsh2018@gmail.com

डॉ. राम बहादुर 'व्यथित'
वरिष्ठ लेखक एवं समीक्षक
विजय वाटिका कोठी नंबर ३
सिविल लाइंस बदायूं २४३६०१
९८३७६१८७१५

हिंदी साहित्याकाश का दीप्तिमान नक्षत्र

रश्मि अग्रवाल.. हिंदी साहित्याकाश में झिलमिलाता एक दीप्तिमान नक्षत्र.. प्रखर शब्द- शिल्पी.. सृजन में ठोस और मौलिक चिंतन की झलक.. सामाजिक सरोकारों से जुड़ी निःस्वार्थ समाज सेविका... अखिल भारतीय साहित्यिक संस्था 'वाणी' के अध्यक्ष के रूप में हिंदी साहित्य, कला और संसति के उन्नयन के लिए निरंतर प्रयास-रत.. सृजन में पीड़ा के छलकते आंसू..आंसू.. वृद्ध आश्रम की चौखट पर सिर पटक रहे.. ममता के लिए भटक रहे.. वृद्ध माता पिता के आंसू.. कहीं उदास और बंजर पड़ी धरती के आंसू.. कहीं कुल्हाड़ी की मार से आहत पर्यावरण के आंसू.. और इन्हीं की एक गुंथीं हुई दिव्य मौक्तिक-माला का नाम है... रश्मि अग्रवाल! रश्मि अग्रवाल का चिंतन बहुआयामी है। वे एक सिद्धहस्त सम्पादक भी हैं, मौलिक चिंतन देने वाली सुप्रसिद्ध लेखिका भी हैं और नारी के कोमल भावों को अपनी कविता में पिरोने वाली सरस कवयित्री भी हैं।

श्रेष्ठ कवयित्री के रूप में- उनकी नई कविता की सरस बानगी देखनी है तो उनकी काव्यकृति- 'अरी कलम! तू कुछ तो लिख' दृष्टव्य हैं। रश्मि अग्रवाल उच्च कोटि की कवयित्री हैं। 'जगमग दीप ज्योति' और 'सत्य चक्र' आदि प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में उनकी नई कविताएं प्रकाशित होती रही हैं।

जागरूक लेखिका के रूप में- रश्मि अग्रवाल सामाजिक सरोकारों से जुड़ी प्रखर चिंतक और श्रेष्ठ लेखिका हैं। उनके लेखों में जन जन के हृदय से जुड़े हुए प्रतिबिंब दिखाई देते हैं। उनके लेखों में शब्दजाल नहीं है। वे ऐसा मौलिक चिंतन प्रस्तुत करती हैं जो पाठक के मानस पटल पर अमिट छाप छोड़ जाता है।

पर्यावरणविद् के रूप में- रश्मि अग्रवाल पर्यावरण विशेषज्ञ हैं। उन्हें पर्यावरण - प्रदूषण की गहन चिंता है। रश्मि जी ने पर्यावरण का सूक्ष्म अध्ययन करके देश के प्रत्येक प्रांत में हो रहे पर्यावरण प्रदूषण पर गहन शोध प्रस्तुत किया है। उस शोध प्रबंध का नाम है- 'पर्यावरण : कितने जागरूक हैं हम?' प्रबुद्ध लेखिका ने इस ग्रंथ में शताधिक आंकड़े प्रस्तुत करके पर्यावरण की रक्षा करने के लिए संपूर्ण देश का आह्वान किया है- जन-जन को पर्यावरण के प्रति जागरूक होने के लिए सुंदर शब्दों में झकझोरा है। इसीलिए इस शोध प्रबंध को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. प्रणव मुखर्जी ने अपने कर कमलों से पुरस्त करके इस ग्रंथ को अमर बना दिया। पर्यावरण से संबंधित रश्मि जी के अन्य ग्रंथ है- 'पर्यावरण : प्रश्न और भी हैं' तथा 'पर्यावरण : उपेक्षा और अपेक्षा'। लेखिका का अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ है- 'जीवन का आधार : जल' जिसमें समस्त देशवासियों का आह्वान किया है और चेतावनी भी दी है कि यदि हम इसी प्रकार जल का अपव्यय करते रहे तो आज से १०० वर्ष बाद मनुष्य एक-एक बूंद पानी को तरसेगा। लेखिका ने पर्यावरण - प्रदूषण पर केवल चिंता व्यक्त नहीं की है बल्कि पर्यावरण- सुरक्षा के लिए हर ठोस और संभव प्रयत्न करने हेतु कारगर उपाय भी दर्शाए हैं।

'सफल कहानीकार के रूप में'- रश्मि अग्रवाल एक सफल कहानीकार हैं। उनका प्रथम कहानी संग्रह है- 'इंद्रधनुषी कहानियां' इस संग्रह में जीवन के बहुरंगी प्रश्नों को उकेर कर कहानीकार ने अत्यंत रोचक, हृदय स्पर्शी और सरस कहानियां प्रस्तुत की है। लेखिका का दूसरा कहानी- संग्रह है 'रश्मि की बाल कहानियां' इस संग्रह की प्रमुख विशेषता है- प्रत्येक कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है, जो बालकों को जीवन में आगे बढ़ने की सुंदर प्रेरणा देती है। यह कहानियां इतनी लोकप्रिय हुई की हिंदी के बाल साहित्य में रश्मि जी का स्थान एक बाल कहानीकार के रूप में स्थापित हो गया हैं।

योग साधिका के रूप में- रश्मि अग्रवाल जी योग, प्राणायाम और सूर्य नमस्कार को स्वस्थ जीवन के लिए अनिवार्य मानती हैं। वे अष्टांग योग की मर्मज्ञ हैं। उनके ग्रंथ 'योग- साधना और स्वास्थ्य' में अष्टांग योग की साधना का उपदेश देते हुए लेखिका ने बहुत सूक्ष्मता से प्रत्येक योगासन का चित्र देते हुए उससे होने वाले लाभों की जानकारी भी दी है। योग एवं स्वास्थ्य विज्ञान की दृष्टि से यह ग्रंथ अत्यंत उपयोगी और सारपूर्ण है। पाठक इस ग्रंथ का अध्ययन और मनन करके योग द्वारा अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर सकता है।

वृद्ध जनो के घावों पर मरहम लगाने वाली चिकित्सक रश्मि जी की एक बहुत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक उपलब्धि है- 'शोधादर्श' पत्रिका के 'वृद्धावस्था विशेषांक' का शानदार संपादन। प्रबुद्ध संपादक रश्मि जी ने केवल स्वदेश के ही नहीं, विदेश के तमाम प्रसिद्ध और परिपक्व लेखक- लेखिकाओं से फोन पर व्यक्तिगत संपर्क करके उनसे वृद्धजनों की विकराल समस्याओं पर चिंतन परक सामग्री एकत्र की है। देश विदेश के वरिष्ठ लेखक लेखिकाओं ने मार्मिक और सार पूर्ण लेख, कविताएं और लघु कथाएं प्रस्तुत करके वृद्ध माता- पिता के जीवन की मार्मिक झांकी प्रस्तुत की है, जिसे पढ़कर आंखों से अश्रु धारा प्रवाहित हो उठती है। रश्मि अग्रवाल के अथक परिश्रम और साधना ने 'शोधादर्श' के वृद्धावस्था, विशेषांक को एक ऐतिहासिक अंक बना दिया। २० जुलाई, २०२२ को रश्मि अग्रवाल की एक शानदार और ऐतिहासिक कृति 'वृद्धावस्था : सामाजिक अध्ययन' प्रकाशित होने जा रही है, जो वृद्ध माता-पिता के जख्मों पर मरहम का काम करेगी। उनकी गहन समस्याओं पर महत्वपूर्ण चिंतन प्रस्तुत करके लेखिका ने एक अछूते विषय को उजागर करके हिंदी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया है।

इंटरव्यू एक्सपर्ट के रूप में- रश्मि अग्रवाल जी इंटरव्यू एक्सपर्ट के रूप में विख्यात हो चुकी हैं। मोबाइल-दर्शकों को ज्ञात होगा कि जीवन की गहन समस्याओं पर चिंतन करते हुए रश्मि जी ने देश के १५ वरिष्ठ और शीर्षस्थ विद्वानों एवं अधिकारियों का अत्यंत रोचक, लोमहर्षक और स्मरणीय इंटरव्यू प्रस्तुत किया है। एक-एक इंटरव्यू जीवन की एक-एक गहन समस्या पर एक संपूर्ण शब्द चित्र है।

वस्तुतः रश्मि अग्रवाल जी देश की प्रख्यात लेखिका, सरस कवयित्री और उच्च कोटि की पर्यावरण-विशेषज्ञ हैं। मैं परम आदरणीय बहन रश्मि अग्रवाल का शत-शत अभिनंदन करता हूं। 'लेखक प्रोत्साहन योजना' के अंतर्गत प्रकाशित विशेषांक 'ऊर्जावान लेखक : रश्मि अग्रवाल' के संपादक श्रद्धेय डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल' का अभिनंदन करते हुए मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूं। बहन रश्मि अग्रवाल के लिए मेरी मंगलकामनाएं-

रश्मि! तुम्हारी किरने हैं बिखर रहीं जग में अविरल।
देवि! तुम्हारी यशः कीर्ति, रहे व्याप्त भूतल प्रतिपल

अरूण नामदेव
एफ. २४ स्वास्तिक ग्रीन सिटी
शहडोल (म० प्र०) ४८४००१
मो. ९६६९४०८८२७

ऊर्जा और प्रकाश की कवयित्री : रश्मि अग्रवाल

कवयित्री रश्मि अग्रवाल बहुमुखी प्रतिभा की धनी सामाजिक सरोकारों से जुड़ी दिशा दृष्टि सम्पन्न संवेदनशील रचनाकार हैं। वर्तमान हिन्दी साहित्य में जो सृजनात्मक कार्य रश्मि अग्रवाल द्वारा किया जा रहा है वह अनुकरणीय है और विरले ही देखने को मिलता है। आप अपने सार्थक और समर्थ लेखन के माध्यम से जनजागरण के साथ-साथ हिन्दी को बढ़ावा देते हुए नवोदित युवा लेखकों को प्रोत्साहन प्रदान करने का कार्य भी कर रहीं हैं। रश्मि अग्रवाल की अब तक दर्जन भर से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनमें से कहावतों की रोचक कहानियाँ, पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम, योग साधना और स्वास्थ्य, इन्द्रधनुषी कहानियाँ, पर्यावरण प्रश्न और भी हैं, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, रश्मि की बाल कहानियाँ, जिओ जीवन भरपूर, जीवन का आधार जल आदि प्रमुख हैं। हिन्दी लेखन की विभिन्न विधाओं यथा कविता, कहानी, आलेख, वार्ता, गीत, साक्षातकार्य, संस्मरण, आत्मकथा, स्तम्भ लेखन के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों, विद्रुपताओं को दूर करने के प्रयास निरंतर जारी हैं।

आप की सामाजिक सरोकारों से जुड़ी चिंतनप्रधान संवेदनशील रचनायें निरंतर देशभर के प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

रश्मि अग्रवाल जी उन निष्ठावान लेखिकाओं में से एक हैं जो व्यापक समाज में कार्य करते हुए भारत के अन्दर व्यास वेदना, करूणा, व्यथा आदि को गहराई से अनुभूति करते हुए इन तमाम विसंगतियों को दूर कर स्वस्थ मानसिकता वाले समाज निर्माण हेतु प्रतिबद्ध हैं। आपके समाज सुधार के कार्य चाहे वह महिला उत्पीड़न हो, बालिकाओं के प्रतिनकारात्मक दृष्टिकोण हो या समाज में वरिष्ठ नागरिकों (वृद्धावस्था) वर्तमान स्थिति हो इन सब समस्याओं का गहन विश्लेषण करते हुए उन्हें इन अंधकार को दूर करने वाली दृष्टि देने का प्रयास निरंतर जारी है।

रश्मि जी का सम्पूर्ण लेखन सम्पूर्ण साहित्यिक अवदान ''सत्यम् शिवं सुन्दरम'' का प्रतिरूप है। इनकी अधिकांश रचनाएँ प्रगतिशील विचारधारा की पोशक हैं क्योंकि इनमें कहीं न कहीं लोक कल्याण की भावना निहित है इनकी रचनाएँ चाहे वह कविता हो कहानी हो गद्यलेखन हो चेतना विकसित करने का भी कार्य करती हैं।

रश्मि अग्रवाल के लेखन कला और रचना कौशल को देखते हुए देश में ही नहीं विदेशों में भी उन्हें अनेकानेक उपलब्धियों सम्मानों और पुरस्कारों से विभूषित किया गया है उन्हें अभी तक लगभग ५० सम्मानों और पुरस्कारों से सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त है जो उनकी प्रज्ञा प्रतिभा और सतत् रचनाशील होने का परिचायक है।

कहावतों और लोकोक्तियों पर लिखी गई रश्मि जी की पुस्तक ''कहावतों की रोचक कहानियाँ'' लोक में प्रचलित मुहावरों और लोकोक्तियों के महत्व को प्रतिपादित करती है। कहावतें जो हम बातों बातों में कहते रहते हैं। कहावतें जो हमारे बातचीत का अहम हिस्सा है, देखने में बहुत छोटी होती हैं लेकिन इनका मतलब बहुत गहरा गूढ़ और सटीक होता है। पुस्तक में इन्हें बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया जो सर्वगृह है।

पर्यावरण वे समस्त भौतिक और जैविक कारक जो प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण पर केन्द्रित इनकी दो पुस्तकें, पहली ''पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम'' और दूसरी पर्यावरण प्रश्न और भी हैं'' पर्यावरण के प्रति उनकी गहन चिंता, चिंतन और संवेदना को रेखांकित करती हैं। साथ ही उसके महत्व को प्रतिपादित करते हुए उसके संरक्षण की ओर लोक का ध्यान आकर्षित करती हैं।

रश्मि जी की पुस्तक ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' में बालिकाओं को संरक्षण और सशक्त करने की दिशा में सकारात्मक पहल की गई है। भारत की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है पर सबसे अधिक दुर्भाग्य की बात ये है कि बढ़ती जनसंख्या के बावजूद लड़कियों का अनुपात घटता जा रहा है जो गहन चिंता और चिंतन का विषय है। इससे निजात पाने के लिए बालिका और बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक सामाजिक आंदोलन की महती आवश्यकता है। रश्मि जी की प्रस्तुत पुस्तक ऐसे ही मूल्यों को बढ़ावा देते हुए जागरूकता पैदा करने की दिशा में सार्थक पहल करती है।

''रश्मि की बाल कहानियाँ बाल चिंतन, कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता का विकास करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। वर्तमान समय के बाल साहित्य का सृजन बहुत कम किया जा रहा है। ऐसे समय में रश्मि अग्रवाल द्वारा बाल साहित्य का सृजन चाहे वह कविता कहानी या किसी भी विधा में किया जा रहा हो निश्चय ही स्तुत्य प्रयास है। क्योंकि बाल साहित्य से बच्चों में सकारात्मक ऊर्जा आती है और देश-समाज के लिए कुछ करने का भाव पैदा होता है। अच्छा बाल साहित्य बच्चे की संवेदना का विस्तार करता है उसे अधिक समझदार और जिम्मेदार बनाता है साथ ही उनमें सकारात्मक संवाद की क्षमता विकसित करता है।

रश्मि जी से मेरा पहला परिचय फेसबुक में मेरे द्वारा निरंतर की जा रही कविताओं की पोस्टिंग के माध्यम से हुआ। मेरी पोस्ट पर रश्मि जी की जो भी प्रतिक्रियाएँ आती थीं वह रचना के केन्द्रीय भाव को समेटे हुए चिंतन प्रधान सारगर्भित होती थीं। उनकी रचनानुकूल प्रतिक्रियाओं से प्रभावित होकर उनसे दूरभाष पर संपर्क किया। जो साहित्य सृजन की अवधारणा पर केन्द्रित रही जो अभी भी जारी है। उन्होंने अपनी कुछ पुस्तकें यथा- पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम, इन्द्रधनुषी कहानियाँ, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ आदि भेजीं जिनका अध्ययन मेरे द्वारा मेरी दिल्ली से शिकागो (यूएस ए) की १३ घंटे की नॉनस्टाप हवाई यात्रा के दौरान प्लेन में ही कर लिया गया था।

अगर हम रश्मि अग्रवाल के कृतित्व व्यक्तित्व और उनके समूचे रचनात्मक अवदान का सिंहावलोकन करें तो पाते हैं कि सारे हिन्दी जगत को अपने सारगर्भित लोक कल्याणकारी लोकोउपयोगी गंध की सुवास से अविभूत करने में समर्थ है। सार्थक संदेश भरी कविताएँ कहानियों के साथ समयबद्ध गद्य का वैभव आपके रचनात्मकता की विशिष्ट पहचान है। इस दिशा में रश्मि जी हर पल हर क्षण एक कदम और आगे बढ़ें यही कामना है।

जनपद बिजनौर का गौरव,,,,,,, आदरणीया श्रीमती रश्मि अग्रवाल जी,,,,,,

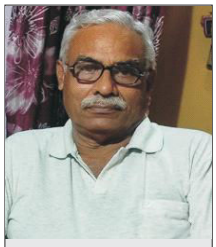

रमेश माहेश्वरी राजहंस
बिजनौर

घर गृहस्थी की व्यस्तता के बाबजूद,,,, समाज सेवा की धुन, पर्यावरण का चिन्तन और न जाने कितने लोक उपकार के संकल्पों को पूरा करने के भागीरथ प्रयास में निरन्तर रत रहने वाली विदुषी महिला नजीबाबाद निवासी श्रीमती रश्मि अग्रवाल जी पूरे जनपद ही नहीं वरन् उत्तर प्रदेश की पहचान के रूप में जानी जाती हैं, जो कि गौरव का विषय है।

साहित्य साधिका के रूप में मृदु भाषिणी,सरल स्वभाव की स्वामिनी श्रीमती रश्मि जी के जीवन साथी डॉ. श्री वीरेन्द्र अग्रवाल जी अपने समय के सुयोग्य चिकित्सक के रूप में जाने जाते हैं। अपनी विरासत को आगे बढ़ाते हुए उनके सुयोग्य पुत्र डॉ. संदीप अग्रवाल एवं पुत्रवधू डॉ श्रीमती राखी चिकित्सा सेवा के माध्यम से जन सेवा में रत है।

डॉक्टर्स के इस खूबसूरत परिवार में श्रीमती रश्मि अग्रवाल जी को यदि साहित्य की डॉक्टर कहा जाए, तो शायद अतिशयोक्ति न होगी।

अपनी प्रतिभा, मिलनसार प्रवृति के आधार पर उन्होंने समाज में अपना स्थान बनाया है। माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा उन्हें सम्मानित किया जाना, पूरे जनपद एवं साहित्य समाज के लिए गर्व का विषय है।

पर्यावरण जैसे विषय को उन्होंने गम्भीरता से लिया है तथा पुस्तक के माध्यम से एवम् समाचार पत्रों में समय समय पर अपने आलेखों से सामान्य जन मानस को इस सम्बन्ध में सचेत किया है। श्रीमती रश्मि जी का प्रति प्रेम भी किसी से छिपा नहीं है, प्रति प्रेम का अद्भुत दर्शन उनके निवास पर देखने को मिलता है, जो कि सर्वथा प्रशंसनीय अनुकरणीय है।

डॉ. अनिल चौधरी
बिजनौर

ज्ञान प्रकाश 'पीयूश' आर. इ. एस.
पूर्व प्रिंसिपल,
१/२५८, मस्जिद वाली गली,
तेलियान मोहल्ला, नजदीक सदर बाजार सिरसा-१२५०५५
सम्पर्क : ०९४१४५३७९०२, ०७०१५५४३२७६
Email- gppeeyush@gmail.com

रश्मि में रश्मि की तरह ही चमक

किसी का व्यक्तित्व बिना किसी व्यक्तिगत भेंट के आंकना मुश्किल काम है लेकिन पारखी आँखें ये सब परख ही लेती हैं। मुझे याद नहीं आता कि मेरी भेंट आदरणीया श्रीमती रश्मि जी से कहीं व्यक्तिगत रूप में हुई है। लेकिन मैं यह अवश्य कह सकता हूँ, लिख सकता हूँ कि मैंने रश्मि जी को बड़े करीब से देखा है, जाना है परंतु यह सब संभव हो सका है उनकी लेखनी के माध्यम से। मैंने उनकी रचनाएँ पढ़ी, उनके साक्षात्कार देखे/सुनें जिनमें नारी के साथ-साथ समस्त समाज की पीड़ा, खुशी दोनों दिखाई देते हैं। बिना किसी भेदभाव के उनकी समाज सेवा उनके व्यक्तित्व से अवगत कराती है।

उनकी सोच इस समाज को उत्कर्शता की ओर ले जाने वाली है। उनकी रचनाएँ, लेख, आलेख, समाज सेवा, सब इस बात की गवाह हैं। वो एक ओर छोटे बच्चों/बच्चियों के विशय में सोचती हैं तो कहीं दूसरी ओर वृद्ध, लाचार, गरीब एवं महिला वर्ग की ओर सोचती हैं। सोचती ही नहीं बल्कि पीड़ितों की सहायता करते हुए भी उन्हें देखा जा सकता है। उनका यही साहस समाज के लिए प्रेरणा का काम करता है। उसके लिए वे बधाई की पात्र हैं।

अनेकों पुरस्कारों एवं अलंकारों से सजी आदर की पात्र बहन रश्मि जी के अनेक पहलुओं पर गंभीरता से सोचा जाए तो नित नये आयाम व्यापित होंगे।

इस सुन्दर कार्य के लिए भाई अमन त्यागी जी को भी बहुत-बहुत बधाई कि उन्होंने रश्मि जी पर यह अंक निकालकर एक हीरे से सभी पाठकों को रूबरू कराया।

अंत में रश्मि जी की दो पंक्तियों के माध्यम से आपकी बात को विराम देता हूँ।

आओ मिलकर के जगत में कुछ रंग बिखराएँ
इस नये क्षितिज पर सेवा व प्यार के रंग फैलाएँ।।

ढ़ैर सारी शुभकामनाओं के साथ।

रश्मि अग्रवाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

वाणी अखिल भारतीय हिंदी संस्थान, नजीबाबाद की संस्थापक विविध मुखी प्रतिभा सम्पन्न, लब्ध प्रतिश्ठित यशस्वी साहित्यकार रश्मि अग्रवाल किसी परिचय की मोहताज नहीं है। आप हैं। आप उच्च कोटि की महिला रचनाकार और धुरंधर समाज सेविका हैं। आपने कविता, कहानी, आलेख, गीत आदि विविध विधाओं में मौलिक एवं संपादित एक दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखकर साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान किया है। वार्ताकार के रूप में आप सुविख्यात हैं और स्तंभ लेखन में आप का कोई सानी नहीं है।

सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और राष्ट्रहित एवं उपयोगिता के विषयों पर आपने उच्च कोटि के साहित्य का सृजन किया है। पर्यावरण, योग, स्वास्थ्य, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, जीवन का आधार जल, जीओ जीवन भरपूर आदि और उनकी तरफ आपने देश के महामहिम राष्ट्रपति व प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्थाओं का ध्यान आकृष्ट करने का श्लाघनीय प्रयास किया और आप सफल रहीं।

२०१५ में 'पर्यावरण : कितने जागरूक हैं हम' कृति पर 'राजभाषा गौरव पुरस्कार' महामहिम राष्ट्रपति के कर-कमलों से प्राप्त हुआ। २०१८ में आपके साहित्यिक अवदान पर 'विद्यावाचस्पति' की उपाधि विक्रमशिला विद्यापीठ भागलपुर, बिहार से व २०१९ में 'ज्ञान रत्न' उपाधि पर्यावरण लेखन हेतु वीर भाषा हिन्दी साहित्य पीठ मुरादाबाद द्वारा प्राप्त हुई। इनके अतिरिक्त अन्य प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्थाओं द्वारा २००९ से वर्तमान तक ढ़ेरों पुरस्कारों की वर्षा आपके साहित्यिक अवदान पर अविरल होती रही हैं।

आपकी रचनाएँ राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित होती रहती हैं।

१२ दिसम्बर २०१५ अमर उजाला ने आपके व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए लिखा 'सोच ने बदला रश्मि का जीवन'

'कमजोरी को हथियार बनाया और चल पड़ी समाज को बदलने रश्मि अग्रवाल व १४ मार्च २०१५ दैनिक जागरण ने 'कुहासे के कैनवास पर उम्मीद का हस्ताक्षर' हैडिंग से लिखा रश्मि अग्रवाल ने न केवल खुद के लिए जिंदादिली की इबारत लिखी बल्कि निराशा और उम्मीद खो चुके लोगों के मन में उम्मीद की किरण जगाई तथा प्रेरक कहानी ने 'संघर्ष ने बदला रश्मि का जीवन। चिराग व अन्य पत्रिकाओं ने भी रश्मि अग्रवाल के प्रेरक व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है। बात उस समय की है जब लेखिका को गठिया ने घेरा था, ट्राई साइकिल पर चलने को मज़बूर थी, पर आपने हिम्मत नहीं हारी। सकारात्मक सोच और आशावादी विचारों से आपने अपने जीवन को बदल डाला।

आज आप समाजोपयोगी साहित्य सृजन के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़ कर भाग ले रही हैं। नारी सशक्तिकरण अभियान, महिलाओं को सशक्त व स्वावलंबी बनाने, स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन करने, पर्यावरण पर कार्यशालाएँ, लेखन एवं पौधारोपण करवाने आदि के प्रेरणादायी राष्ट्रहित के कार्यों में नियोजित हैं और उनके पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन, सहसंपादक तथा संरक्षक आदि का कार्य बड़ी कुशलता से संभाले हुए हैं।

आकाशवाणी केन्द्र नजीबाबाद से आपकी वार्ता व रचनाओं का सतत् प्रसारण होता रहता है। आप सकारात्मक सोच व आशावादी दृष्टिकोण से ओतप्रोत, अंर्तदृष्टि सम्पन्न, सृजन की अनन्त सम्भावना व असीमित ऊर्जा से युक्त सफल साहित्यकार एवं कर्मठ समाज सेविका हैं। आपके उज्ज्वल भविष्य एवं दीर्घायु की हम कामना करते हैं आप इसी प्रकार सत्यं, शिवं सुंदरं की भावना से अनुप्रमाणित साहित्य के सृजन में निरंतर संलग्न रहें।

समाचार पत्रों में

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

नजीबाबाद की साहित्यकार रश्मि नेपाल में सम्मानित

दैनिक जनवाणी मेरठ, रविवार, 19 मई 2017

रश्मि सेवा भारती गौरव सम्मान से सम्मानित

राष्ट्रपति से सम्मानित हो चुकी हैं रश्मि अग्रवाल

...रों को पैरों पर खड़ा करने की मुहिम

बनी रहती है मधुरता

रश्मि अग्रवाल, होममेकर, नजीबाबाद (उप्र.)

मेरे विचार से रिश्तों की मधुरता बनाए रखने के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि हम एक-दूसरे को अपने ढंग से जीने की आज़ादी दें। हमें समय के साथ अपनी सोच बदलनी चाहिए। पुराने समय में लोग अपने रिश्तों को लेकर काफ़ी पज़ेसिव होते थे। वे जाने-अनजाने दूसरों के निजी जीवन में हस्तक्षेप करते थे। इसी वजह से उनके रिश्तों में कड़वाहट आती थी, पर वे इसका कारण नहीं समझ पाते थे। इसीलिए चाहे पारिवारिक हो या सामाजिक हर रिश्ते की सहजता बनाए रखने के लिए दूसरों को पर्सनल स्पेस देना बहुत ज़रूरी है। इससे हमारे संबंधों में लंबे समय तक मधुरता बनी रहती है।

दैनिक जनवाणी मेरठ, सोमवार, 22 मई, 2017

हिन्दी भूषण सम्मान से सम्मानित रश्मि

साहित्य सेवाओं के लिए किया गया सम्मानित संस्थाओं ने भी उनकी उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया

वालिया ग्लोबल एकेडमी में दो दिवसीय वार्षिक खेल समारोह शुरू

5 दिसम्बर

दैनिक जनवाणी मेरठ, गुरुवार, 2 नवम्बर 2017

जरूरतमंदों की सेवा ही उद्देश्यः रश्मि

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान में भागीदारी का आह्वान

अमर उजाला

मेरठ, शनिवार, 16 सितंबर 2017 — 7

रमा जैन गर्ल्स कॉलेज की छात्राओं को शपथ दिलाती रश्मि अग्रवाल, डायरेक्टर व प्राचार्या।

छात्राओं ने नदियों के संरक्षण की शपथ ली

प्रभारी जिला सूचना अधिकारी मुसरत अली का फूलमालाओं से स्वागत करते पब्लिक इमोशन के प्रबंध संपादक नवेद अनवर।

अमर उजाला

महिलाओं ने मनाया दीप उत्सव

राष्ट्रपति से सम्मान पाकर किया गौ...

हिन्दुस्तान मेरठ • रविवार • 05 जनवरी 2019 • 04

दवा से नाता तोड़ो, सफ़ाई से जोड़ो

...के नेपाल समारोह में मिला सम्मान

चिंगारी

बिजनौर : सोमवार, 22 मई, 2...

रश्मि अग्रवाल 'हिन्दी कुलभूषण'

नारी की चेतना का ज्योति कलश है वाणी संस्थान

दैनिक जागरण मेरठ, 4 जनवरी 2019 — 11

www.jagran.com

103 रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण

दैनिक जनवाणी

मोबाइल का प्रयोग

रेडिएशन किरणों से होने वाले नुकसान को बताया

दैनिक जनवाणी मेरठ, गुरुवार, 18 फरवरी 2016

आम बजट: किसानों को मिलें सुविधाएं

दवाओं पर लाइसेंस फीस न बढ़े, आयकर छूट सीमा बढ़नी चाहिए

डॉ. राधा वल्लभ स्मृति सम्मान

दैनिक जनवाणी

हिन्दी भाषा सेवा कार्यों के लिए रश्मि अग्रवाल सम्मानित

दैनिक जनवाणी मेरठ, बुधवार, 18 अक्टूबर 2017

पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना हमारा कर्तव्य

बाल सदन मान्टेसरी स्कूल में हुआ कार्यक्रम

सम्मानित होने के बाद दायित्व और बढ़ा : रश्मि

दैनिक जनवाणी

आधी दुनिया नहीं, अब ये सारा जहां हमारा...

नारियों ने समाज का बढ़ाया मान

...में सम्मानित

नजीबाबाद। साहित्यकार व समाजसेवी रश्मि अग्रवाल को बदायूं में अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान समारोह 2016 के लिए सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. राम स्नेही लाल शर्मा एवं विशिष्ट अतिथि शिवानन्द आदि ने सम्मानित किया।

बेटियां ही लाती है घर में उजालाः रश्मि अग्रवाल

अमर उजाला ब्यूरो

मुरादाबाद।

उत्तर प्रदेश सरकार और अमर उजाला के साझा अभियान नारी सम्मान के तहत बुधवार को पंचायत भवन सभागार में संगोष्ठी एवं नारी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कला, खेल, शिक्षा के क्षेत्र में मुकाम बनाने वाली महिलाओं को सम्मानित किया गया।

पंचायत भवन सभागार में हुए कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना के साथ हुई। मुख्य अतिथि डीआईजी ओमकार सिंह ने कहा कि महिलाएं समाज का अहम हिस्सा हैं। उनका सुरक्षा और सम्मान सभी का पहला कर्तव्य है। लेकिन महिलाओं की सुरक्षा के लिए केवल सरकार और पुलिस के भरोसे नहीं रहा जा सकता। हम सभी को जिम्मेदारी उठानी पड़ेगी।

आवाज उठानी पड़ेगी, घरों का माहौल बदलना होगा और हमें उन्हें मजबूत बनाना होगा। बाहर भी हम महिलाओं के साथ गलत होते हुए देखें तो विरोध करें। इसके साथ ही उन्होंने महिलाओं की सुरक्षा के लिए कानूनी प्रावधानों की जानकारी दी।

मुरादाबाद। नहटौर की रहने वाली रश्मि अग्रवाल कला और साहित्य के क्षेत्र में एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। आज यह नाम किसी की पहचान का मोहताज नहीं है। उनकी लिखी कहानियां और कविताएं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। इसके साथ ही आकाशवाणी पर भी उनके कार्यक्रम प्रसारित हुए हैं। कला के साथ ही वे सामाजिक कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सम्मानित होने के बाद उन्होंने कहा कि बेटी घर की रौनक हैं। बताया कि 2001 में वे विकलांगता के द्वार पर खड़ी थी। व्हीलचेयर के सहारे जीवन चल रहा था। तब उन्होंने कलम को अपना हथियार बनाया। मेहनत कर स्वास्थ्य को भी ठीक किया। सामाजिक संस्थाओं से जुड़ी। निशुल्क शिक्षा के लिए कैंप लगाए, पर्यावरण के लिए कार्य किया। संस्था वाणी अखिल भारतीय हिंदी संस्थान नजीबाबाद उन महिलाओं के लिए स्थापित की जो घर में कैद रहकर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता खोज रही हैं। अगर हम उन्हें शिक्षित करेंगे तो समाज शिक्षित होगा। उनके माता पिता, पति ने हमेशा सहयोग किया। जिसका नतीजा ये रहा कि वे अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकीं और समाज को कुछ दिया। पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ कला और समाज की सेवा करके दिखाया कि महिलाएं किसी से कमजोर नहीं वे चाहें तो समाज को नई दिशा दिखा सकती हैं।

महिलाओं को सुरक्षा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। इसमें रानी लक्ष्मीबाई प्रोत्साहन योजना शुरू की है। इसके तहत पीड़ित महिला को न केवल न्याय दिलाया जाता है बल्कि उनकी आर्थिक मदद भी की जाती है। सबसे पहले जरूरी है अगर कुछ गलत हो तो उसका प्रतिकार करें और रिपोर्ट जरूर दर्ज कराएं।

जिलाधिकारी जुहैर बिन सगीर ने बताया कि प्रशासन सदैव आपके सहयोग में खड़ा है। कला क्षेत्र से रश्मि अग्रवाल (बिजनौर), खेल से तान्या चौधरी सांगवान (अमरोहा), सामाजिक कार्यों के लिए संगीता भार्गव (चंदौसी), बहादुरी के लिए आसमां बी, उद्यमिता में चित्रलेखा अग्रवाल, शिक्षा के लिए डा. शहनाज रहमान (रामपुर) को सम्मानित किया गया। जबकि राकेश देवी को बहादुरी के क्षेत्र में सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

नारी सम्मान

पुलिस और जनता के बीच संवाद जरूरी

पुलिस जन संवाद गोष्ठी में आईजी ने जनता से सीधे किया संवाद

विशेष सम्मान से नवाजी गईं महिलाएं

हिन्दुस्तान

पौधारोपण के साथ हरियाली का संकल्प

...र्धा के बीच लोह मनवाती महिलाएं

मेरे शब्दकोश में असंभव शब्द नहीं है

अमर उजाला

मेरठ | रविवार, 6 जनवरी 2019

नजीबाबाद में रश्मि अग्रवाल को सम्मानित करते टीम। अमर उजाला

पर्यावरण जागरूकता मिशन के लिए रश्मि सम्मानित

नजीबाबाद। पर्यावरण जागरूकता मिशन से जुड़ी समाजसेवी एवं लेखिका रश्मि अग्रवाल को डीएम ने किया सम्मानित।

सम्मानित होने के बाद दायित्व और बढ़ा : रश्मि

हिन्दी दिवस पर राष्ट्रपति से मिले सम्मान से नगर हुआ गौरवान्वित, नगर की साहित्यिक संस्थाओं ने किया सम्मानित

सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण केंद्र शुरू

अमर उजाला

नारी सशक्तिकरण हेतु ... के लिए सुगठित

बिजनौर जागरण

राष्ट्रपति ने रश्मि को किया सम्मानित

सेवा भारती ने ग्राम ... पहुंच कर समस्याएं

नारी की चेतना का ज्योति कलश है वाणी संस्थान

अमर उजाला

मेरठ सोमवार, 22 मई 2017

रश्मि अग्रवाल का सम्मान

नजीबाबाद (ब्यूरो)। साहित्यकार एवं समाजसेवी रश्मि अग्रवाल को उनके समग्र, सरल लेखन और सामाजिक गतिविधियों के लिए हिंदी भूषण सम्मान प्रदान किया गया। मुरादाबाद में आयोजित साहित्यिक समारोह में उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया। अंतरराष्ट्रीय गोविंद हिंदी साहित्य समिति की ओर से आरएसडी एकेडमी मुरादाबाद में साहित्यिक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि एमएलसी डॉ. जयपाल सिंह व्यस्त, विशिष्ट अतिथि

रश्मि बांट रहीं संस्कारों की शिक्षा

हिन्दुस्तान

सेवा भारती ने जानी अलीपुरा की समस्याएं

मेरठ | शुक्रवार, 4 जनवरी 2019

स्वास्थ्य शिविर में मरीजों की जांच करते चिकित्सक। अमर उजाला

स्वास्थ्य शिविर आयोजित

नजीबाबाद। सेवा भारती के अध्यक्ष डॉ. एके जौहर एवं सेवा भारती मातृ मंडल की अध्यक्ष रश्मि अग्रवाल के निर्देशन में गांव अलीपुरा में होम्योपैथी एवं एलोपैथी का निशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया। चिकित्सकों ने बुखार, चर्म रोग, खांसी-जुकाम सहित कई बीमारियों से पीड़ित 103 रोगियों की जांच कर उन्हें निशुल्क दवाई दी।

बताया सद्गुणों का महत्व

कन्या भ्रूण हत्या को जागरूकता जरूरी

महिला दिवस मनाया

नारी तो ... है, गांधी, प्रताप व

बिजनौर टाइम्स

रश्मि अग्रवाल मेरठ में प्रकृति प्रहरी सम्मान से अलंकृत

अमर उजाला चांदपुर

अलीपुरा गांव में गहराया पेयजल संकट

पुरुष महिला समाज की महत्वपूर्ण कड़ी

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता पर बल

दैनिक जनवाणी बुधवार, 27 जून, 2018

www.janwani.in

पर्यावरण बचाना हम सबकी जिम्मेदारी : एसडीएम

जनवाणी संवाददाता, नजीबाबाद

नमो भारत फाउंडेशन के तत्वावधान में पर्यावरण, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति समाज को जागरूक करने के उद्देश्य से आयोजित तीन दिवसीय कार्यक्रम के समापन पर मुख्य अतिथि एसडीएम डा. पंकज कुमार वर्मा ने कहा कि जनता को पर्यावरण, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के लिए केवल सरकार पर भी निर्भर नहीं रहना चाहिए।

नजीबाबाद में पर्यावरण गोष्ठी को संबोधित करते एसडीएम। छाया : जनवाणी

हल्ला बोल कार्यक्रम की सफलता के लिए किया गांवों का रुख

पानी के साथ खरीदना पड़ेगा शुद्ध हवा का डिब्बा

मेरठ | बृहस्पतिवार, 3 जनवरी 2019

सेवा भारती सिलाई केंद्र पर तैयार वस्त्र दिखाती अध्यक्ष। अमर उजाला

महिलाओं को मिलेगा निशुल्क प्रशिक्षण

नजीबाबाद। सेवा भारती महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत अकबरपुर चौगावां में स्वावलंबन के लिए महिलाओं को निशुल्क सिलाई प्रशिक्षण उपलब्ध कराएगी।

ने के लिए सशक्त मंच जरूरी

नजीबाबाद में वाणी हिन्दी संस्थान की ओर से सम्मानित

दैनिक जनवाणी

महिलाओं ने पर्यावरण पर प्रस्तुत की अपनी-अपनी काव्य रचनाएं

मेरठ, 22 अक्टूबर 2015 दैनिक जागरण | 15

बेटी करती है दो परिवार शिक्षित

नारी सशक्तीकरण

नमो देव्यै महादेव्यै

अमर उजाला

सोच ने बदला रश्मि का जीवन

हिन्दुस्तान • मेरठ • शनिवार • 11 जून 2012 • 06

रचनात्मक लेखन के लिए किया गया सम्मानित

रश्मि को सारथी सम्मान से नवाजा

मेरठ • बुधवार • 24 दिसम्बर 2014 • हिन्

पत्रिका में प्रकाशित लेख की सराहना

नजीबाबाद। समाज कल्याण बोर्ड से प्रकाशित पत्रिका समाज कल्याण में नजीबाबाद निवासी रश्मि अग्रवाल की कृति 'वृद्धों की दशा एवं दिशा' प्रकाशित होने पर सराहना की गई। साथ ही, 36 कवयित्री की कविताओं को संग्रह में शामिल जाने पर सम्मानित किया गया। मंगलवार को एक सादे सम... में रश्मि अग्रवाल ने समाज कल... बोर्ड की ओर से प्रकाशित होने...

पत्रिका में अंतर्रा... उनके लेख को ... लिए संपादक मंडल का ... व्यक्त किया। उनके आले... की दशा दिशा में युवा एवं ... बीच सामंजस्य स्थापित क...

पुस्तकों में शामिल करने की मांग

केंद्र सरकार ने चयनित कीं रश्मि अग्रवाल की पुस्तकें

एसपी ने किया साहित्यकार रश्मि को सम्मानित

दैनिक जनवाणी

रश्मि अग्रवाल का मेरठ में सम्मान

नारियों ने समाज का ब...

अमर उजाला

उमा अग्रवाल
वारस कॉम्पलेक्स नजीबाबाद

वार्तालाप से बहुत कुछ सीख

आंटी जी आज मैंने आप दोनों के इस वार्तालाप से बहुत कुछ सीख बहुत ही सही लगा आपका प्रश्न करने का और अमन कुमार जी का उत्तर देने का तरीका आपकी इस ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी से जीवन के अनेक मूल्यों पर गहराई से हुई मेरी पहचान आश्चर्य हुआ कि इतनी बातों की ओर तो कभी भी नहीं गया मेरा ध्यान जैसे- हम कुछ अच्छा करते हैं तो अज्ञानतावश खुद को ही उसका श्रेय दे जाते हैं जबकि हमें सिखाने वाले तो हमारे आत्मीजन, गुरू, ईश्वर यहां तक कि पेड़-पौधें भी इस श्रेणी में आते हैं क्या फर्क पड़ता है, कब बचपन और जवानी बीती और कब आ गई वृद्धावस्था लेखन कार्य हो या कोई और अपने कर्म में लगे रहो, बस इमानदारी हो उसका रास्ता अच्छे से समझा, क्या होती है व्यवहारिकता की परिभाषा आपकी इन प्रश्नोत्तरी से बहुत कुछ सीखने को मिलता है आंटी जी, सुनकर मन में जगती है नई आशा दिल से कह रही हूँ नहीं कर रही हूँ चाटुकारिता आज मुझे लगा कि मैंने अपने समय का सही सदुपयोग किया, सुनकर आप दोनों की ये वार्ता।

सुशीला गोयल
मनी ज्वैलर्स
बाजार कल्लू गंज
नजीबाबाद

आपसे भी खूबसूरत आपके कृतित्व

रश्मि अग्रवाल जी नजीबाबाद की एक सफल, प्रशंसनीय व अनुकरणीय व्यक्ति का नाम है। आपने हमारे शहर का नाम रोशन किया है साहित्य के क्षेत्र में जो कार्य कर रही हैं निश्चय ही वह प्रशंसा के योग्य है।

वाणी हिन्दी संस्थान की स्थापना कर आपने सामान्य महिलाओं को एक ऐसा मंच दिया है कि वे अपने आप को एक वक्ता के रूप में प्रस्तुत कर सकी। गुण वो सभी में कुछ न कुछ होते हैं लेकिन उन्हें प्रकट कराने का माध्यम बहुत मायने रखता है वह सब आपके प्रयासों से ही सम्भव हुआ।

रश्मि जी के विषय में तो मैं बस यही कहूंगी कि
सुन्दर चेहरा आपका आकर्षक व्यक्तित्व
आपसे भी खूबसूरत आपके कृतित्व।

हिमानी भारद्वाज
ज्वालापुर

मेरी गुरु रश्मि मैम

मेरी गुरु रश्मि मैम जिनकी मैं बहुत बड़ी फैन, सीधी-साधी, भोली-भाली किताबों की वो सबसे अच्छी हमजोली, मेरी सच्ची दोस्त भी मेरी गुरु माँ भी उनकी हर पोस्ट पर जाऊं बलिहारी, खिल जाती मेरे मन की हरियाली, मेरी हिंदी ठीक कराई दिया मात्राओं का ज्ञान, ऐसी सच्ची गुरु हम सबकी शान, वही वाणी के ग्रुप की पहचान, पर्यावरण से वो जानी जाती सरल भाव से पहचानी जाती, ऐसी गुरु को मेरा हाथ जोड़कर प्रणाम, ऐसी सादगी की मूरत है, जिनकी बोली में मीठापन है, रहती हरदम गतिशील वे, सबके मन को हर्षाती है, छोटे बड़ों का भेद न देखती देती बराबर सबको सम्मान है साहित्य जगत में इतिहास रचाया दूर तक नजीबाबाद परचम लहराया, मुझे नकारात्मक से सकारात्मक बनाया, प्यार और आशीर्वाद से जीवन का मतलब समझाया, ऐसी गुरु को पाकर धन्य हूँ, मुझे तुच्छ को भी अपनाया, ऐसी परम आदरणीय गुरु को हाथ जोड़कर करती हूँ मैं अभिनंदन।

सुमति कुमार जैन
प्रधान संपादक
'जगमग दीप ज्योति'
महावीर मार्ग अलवर

शुभकामना संदेश

बहुमुखी प्रतिभा की धनी, भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा सम्मानित श्रीमती रश्मि अग्रवाल पर्यावरण के प्रति विशेष रूप से कार्य करने वाली विदूषी महिला हैं। इस क्षेत्र में उनकी पूर्व की एक कृति महामहिम महोदय श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा सम्मानित की गई, अब इनकी नवीन कृति 'पर्यावरण प्रश्न और भी हैं' का प्रकाशन हुआ है। जिसमें पर्यावरण के हर क्षेत्र वायु, जल, मृदा, वनस्पति, पेड़-पौधे, नदियों, पहाड़, जीव जंतु आदि पर विशेष रूप से चर्चा की गई है। आज जब सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण सम्बन्धी ज्वलंत समस्या से जूझ रहा है यह पुस्तक 'मील का पत्थर' बनी है। किसी भी राष्ट्र के विकास और समृद्धि के लिए प्रदूषण मुक्त पर्यावरण की भूमिका अहम होती है। इसके लिए कार्यरत श्रीमती रश्मि अग्रवाल जी की मैं सराहना करता हूँ। आशा करता हूँ कि भविष्य में इस विषय पर और अधिक लिखते हुए जन जन में इस विषय की चेतना जागृत करें।

नरेश राजवंशी
रूड़की उत्तराखण्ड

रश्मि अग्रवाल : मान्यवर महोदय

इस धरती पर सबकुछ है यदि अभाव है तो केवल अपनेपन का इसी अपनेपन की खातिर जीवन भर व्यक्ति तरसता रहता है औरों से तो क्या कहें वह स्वयं से भी दूर हो जाता है इस अपनेपन की धरोहर यदि कहीं दृष्टिगत होती है तो वह मेरी छोटी बहन रश्मि अग्रवाल के व्यक्तित्व में निहित है।

मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह है कि शिष्टाचार का परिपोषण यदि कहीं होता है तो वह रश्मि अग्रवाल जी के व्यक्तित्व में। बहन रश्मि हृदय पक्ष से बहुत सोचती है। इसीलिए इनका स्नेह अपनापन लिए निष्कपट एवं निश्छल होता है आज के दौर में जहाँ मंच माला माइक और मौका मिलते ही कुछ लोग स्वयं को महान साहित्यकार की श्रेणी में रख लेते हैं वही सबकुछ होते हुए भी इन्हें कभी दंभ की परछाई ने भी नहीं छुआ आज सब लोग चाहते हैं किस साहित्य हमारे लिए जिए ऐसे में रश्मि जी साहित्य के लिए समर्पित है दूसरों को सम्मान किस प्रकार दिया जाता है यह तो कोई इनसे सीखे सरलता और सहृदयता इनकी पूंजी है आज जहाँ साहित्यकारों की कोई कमी नहीं है वही साहित्यिकता के दर्शन आपकी लेखनी में दिखाई देते हैं साहित्यिक संबंधों की संवेदनाओं को सहेज कर रखना भी आपका ही काम है मैं गौरवान्वित हूँ कि मुझे मेरी छोटी बहन के रूप में रश्मि अग्रवाल जी मिली मैंने इनकी पुस्तक अरी लेखनी कुछ तो लिख

इस प्रकार हठपूर्वक लेखनी का मानवीकरण कर देना अपने आप में एक नई बात है जो आपके अंदर छिपे हुए छायावाद की अनुपम छाया का आभास देता है।

आज नव रश्मियां नव प्राण देकर स्थापित हो साहित्यिक क्षितिज पर।

न पूछो जिंदगी कैसे बसर होती है आने की किसी को न खबर होती है।

यह बुढ़ापा है इसकी न उम्र होती है

कुछ कविताएं 'अरी क़लम! तू कुछ तो लिख' से

नववर्ष

विगत वर्ष के आँचल से,
अनेक उपलब्धियाँ समेटे,
नया वर्ष ...
देशवासियों के दामन में,
नई उमंगे/आशाएँ/विश्वास जगाएगा,
और बीते कल से,
आने वाले कल के,
अन्तर का एहसास कराएगा,
और यही एहसास
पहला पत्थर होगा।
सुखद भविष्य के आधार का,
विश्व बन्धुत्व की भावना का,
सद्भावना का और प्यार का।

हे प्रभु!
मेरी इस प्रार्थना को स्वीकारो,
बस कह दो,
तथास्तु!
तथास्तु!!
तथास्तु!!!

अरी क़लम! तू कुछ तो लिख

अरी क़लम !
तू ...
कुछ तो लिख।

लिखने का मन करता मेरा
इसमें क्या जाता है तेरा?
चारों ओर दिखाई देती,
मुझको घोर तबाही,
विषय सामने, काग़ज़ भी,
और पास में स्याही भी,
ऐसे में चुप रहना मेरी,
और नहीं लिख पाना तेरी,
कायरता है।

सच पूछो तो,
भीतर का उजियारा,
बाहर के अँधियारे को,
तुहराता है ।

अन्तर्चक्षु खोल, देख ...
दूर-दूर तक,
सबकी चादर गन्दी-मैली,
और न जाने कैसी धुन्ध,
दिल दिमाग़ तक फैली।

जिसको देखो वो ही
पीछे हट जाता ...
औरों की तो छोड़,
स्वयं की चादर
धोने से क़तराता,
मौनव्रत खुलने की
जिसमें छटपटाहट हो,
जिस मन को ना चैन
किसी भी करवट हो,
क़लम मेरा सन्देश तू
उस तक पहुँचा देना
और
कवि स्वर शँख बनाकर
यह ब्रह्माण्ड गुँजा देना!
यह ब्रह्माण्ड गुँजा देना!!

माँ और मैं

माँ !
एक सूत्र के द्वारा तुमसे,
जब जुड़ी मैं तुम्हारी कोख में
तब तुम बाहर से सहलातीं, बतियातीं
मैं अन्दर से सब समझ लेती, सुन लेती
कुछ कही, कुछ अनकही बातें।

तुम्हारे स्पर्श की भाषा,
मैं पढ़ना सीख गई थी,
जिस दिन तुमने मुझे जन्म दिया।
उस दिन,
तुम्हारे ममतामई स्पर्श को महसूस किया-
और जब आँख खुली मेरी,
मैंने देखा साक्षात् वात्सल्य की देवी को।

फिर ...
एक-एक दिन,
एक-एक रात,
ममता की बरसात,
बाहों का झूला,
गोदी का पलना,
नरम बिछौना
मेरी दिनचर्या बन गई थी
और तू ...?
तू मेरी परिचर्या में जुट गई थी।

माँ!
आज तू नहीं है मेरे पास
मगर मैं महसूसती हूँ तुझे,
और स्वयं को अपनी कोख में।
मैं भी तेरी डगर पर चल रही हूँ ।
देख माँ!
मैं भी तेरी ही तरह माँ बन रही हूँ।

फूल का जीवन

शस्य श्यामला धरती,
सबका ही दुःख हरती।
इसलिए तो ...
पतझड़ मुझको कभी ना भाता,
भाता हरियाली से नाता।
खिली-अधखिली कलियाँ होतीं,
जब अपने यौवन पर...
कोई पत्तों की गोद में हँसती,
कोई पत्तों के ऊपर,
कोई जब खिल फूल हुई,
हमसे तब एक भूल हुई ।
रूप-सुगन्ध के वशीभूत हो,
हमने तोड़ा दम से ...
एक फूल खिला,
जो तेज़ हवा से लड़कर जीता-
और उपवन महकाया,
एक हार गया और गिरा ज़मीं पर,
जल्दी ही मुरझा गया।
मैं छुई-मुई सी,
खड़ी-खड़ी सब देख रही थी,
सोच रही थी, मन ही मन ...
जग को सुरभित करने वाला
फूल ....
तेरा-भी क्या जीवन?

महल

महल!
हों ताश के,
हों पत्थरों के,
या कि सपनों के।

सब...
वक़्त के झकोरों में,
पत्तों की तरह
फड़फड़ा कर,
टूट कर,
गिर जाते हैं,
बदल जाते हैं,
मिट्टी में।

और हम?
प्रौढ़ होकर भी,

बच्चों की मानिन्द,
उनका मिट्टी होना,
देखते रहते हैं!
देखते रहते हैं!!
देखते रहते हैं!!!

जीवन

जीवन जिसने पाया!
उसने ...
मृत्यु को भी पाया है।
इस सत्यता को,
किसने झुठलाया है?

जो जैसा है,
वो वैसा...
कदापि रह नहीं सकता।
धूप को जैसे
छाँव कह नहीं सकता।

मैं?
तुम??
सकल संसार???
यदि चाहे
कि ये हरे पत्ते
काले/सफ़ेद/लाल,
या नीले/पीले हो जाएँ।

असम्भव है
बालक?
निश्चय ही कल युवा होगा,
और युवा?
युवा निश्चय ही
कल प्रौढ़ होगा।

परन्तु
कोई भी प्रौढ़,
प्रौढ़ता त्याग कर
युवा नहीं हो सकता
और कोई भी युवा
बालक नहीं हो सकता
इसलिए
असम्भव को चाहो मत
और
सम्भव को गँवाओ मत।।

ज़िन्दगी

लाचारी है,
बेक़रारी है,
मक्कारी है,
ग़मख़्वारी है,
दरबारी है,
तरफ़दारी है,
अच्छा चल, तू ही बता?
किस-किस पे वारी है, ज़िंदगी!

मैंने कुछ यूँ समझी है, ज़िंदगी!
शीशे सी टूटकर बिखरी,
पुराने स्वेटर सी उधड़ी,
या फिर...
तू मुकम्मल किताब जैसी है,
मेरे महबूब के रुमाल जैसी है,

मुझे हर पल एहसास है?
तू भी कितनी मेरे पास है?
जानती हूँ
मौत तेरी तक़दीर है,
मैंने देखी तेरी यही तस्वीर है!
हाँ, देखी तेरी तस्वीर है!!

पत्थर भी अर्थ ले लेते हैं

जीवन को,
और स्वयं को
विस्मय की आँखों से देखें
जैसे...
देखता है एक छोटा बालक,
वह बालक जिसे नहीं है कुछ ज्ञात।

बालक जानना चाहता है जगत को,
और बूढ़ा सिखाना चाहता है जगत को,
एक अनुभव करना चाहता है
दूसरा अनुभव कराना चाहता है,
मगर जगत
अनुभव नहीं एहसास है,
खुली किताब का अध्याय है।
जगत को बालक की तरह देखें
एक ग़ैर अनुभवी की भांति देखें
उस तरह जो नहीं जानता।
एक पुष्प भी अद्भुत अर्थ ले-लेता,
एक घास की पत्ती भी,
पानी की लहर भी,
हवा का झोंका भी,
आकाश में विचरती बदलियाँ भी
स्त्री-पुरुष की आँखें भी,
राह किनारे पड़ा पत्थर भी
एक बड़ा अर्थ,
ले-लेता है
जानते हैं क्यों?
क्योंकि-
जब हमें ज्ञात ही नहीं
तब हम झाँकते,
खोजते हैं।
उस खोज में और उस झाँकने में,
हमारे पास कोई उत्तर नहीं,
सिर्फ़ प्रश्न हैं?
सिर्फ़ जिज्ञासा है,
सिर्फ़ छानबीन है।
जबकि,
हमारे प्राणों के अन्तःस्थल से
जिसका हम साक्षात्कार करते,
उसका सम्पर्क हो जाता है
और जीवन का सम्पर्क,
केवल उनसे होता है,
जिनके मस्तिष्क खुले होते हैं
वही पत्थरों में भी अर्थ निकाल लेते हैं
हाँ...
वही अर्थ निकाल लेते हैं।।

यदि तुमने देखा होता

तुम नहीं!
जानते हो?
क्यों?
तुम्हारे जीवन में,
कोई रस नहीं
क्यों??
जीवन!
इतना उबा हुआ,
रुका-रुका सा है?

क्योंकि-
तुम बस मानते हो,
कि जीवन के सम्बन्ध में,
सब-कुछ जानते हो।

इसी कारण...
न कभी चकित होते,
न कभी विस्मित होते,
जबकि जीवन खिलता है,
विस्मय के भाव से।

तुमने खो दी विस्मित होने की क्षमता,
अपने ही ज्ञान के कारण,
तुम!
कर लेते हो, हर चीज़ की व्याख्या
जैसे कि तुम, सूर्यास्त को देख,
आदतवश कहते,
कितनी सुन्दर सूर्यास्त छवि है?
मुझे लगता कि ....
ज्यों कोई कह रहा हो
वाह, कितनी सुन्दर अर्थी है।

तुम सूर्यास्त की ओर देखते भी नहीं,
उसे हृदय में प्रवेश करने देते भी नहीं,
तुम्हें कोई विस्मय नहीं, अनुभव नहीं,
आश्चर्यचकित नहीं, हतप्रभ नहीं।

वो मेरा चढ़ता सूरज ही था,
जो अब अस्त हो रहा है,
निभाया साथ दिनभर,

रात होते ही सो रहा है।

अब तुम क्या समझोगे?
सूर्यास्त एक एहसास है,
अरे निर्लज्ज उससे पूछ,
सूर्यास्त का मतलब,
जिसने धवल चाँदनी...
है ओढ़ रखी।

चुनौतियाँ

चुनौतियाँ!
स्वीकार करो,
हर अज्ञात की।
वह जो दूर किनारा
दिखाई नहीं पड़ता,
उसकी खोज भी,
चुनौती होगी।
क्योंकि...
खोज में ही भीतर,
कोई केन्द्र होगा।
खण्ड-खण्ड न होगा।
चुनौती...!
प्रक्रिया है एक होने की।
जो चुनौती स्वीकारता नहीं
उसके जीवन में,
कोई तेज़ भी होता नहीं,
धार नहीं होती,
जैसे भोथरी तलवार भी,
सब्ज़ी नहीं काटती।
चुनौतियाँ...!
प्रतिभा को निखार देती है,
धार देती है,
उभार देती है।।

सुनें पेड़ की गुहार

कम बोलती है प्रकृति,
लेकिन जब बोलती है ...
पर्याप्त बोलती है।
सब ही तो बोल देती है।
सुबह फूल खिलता है,
साँझ गिर जाता है,
भोर बाद उगा सूर्य,
साँझ अस्त हो जाता है।
आसमान चूमता,
धरती पर खड़ा,
हरियाली का द्योतक पेड़,
उदास, बेबस और लाचार,
लगता साज़िश का शिकार,
घुट-घुट कर, जीते हुए...
असमय पत्तियाँ गिराते हुए...
नदी, पर्वत की गाथा सुनाते हुए...
उपभोगवाद के यान पर सवार,
मच रहा है भीषण चीत्कार।
आइये, सभी ...
मिलकर करें सोच विचार,
और सुनें पेड़ की गुहार।।

कृत्रिम दुनिया

जहाँ लोहे, सीमेंट की,
दुनिया दिखाई देती है,
वहाँ बस आदमी के,
हस्ताक्षर मिलते हैं,
घर से दफ़्तर,
दफ़्तर से घर,
एक से दूसरे मकान तक,
भागते रहते हैं लोग,
चारों तरफ़ भीड़ ही भीड़,
लगा पागलपन का रोग।

कृत्रिम दुनिया में,
सब है ठहरा हुआ,
इस ठहराव में ...
मशीन बना वह जी रहा है,
जाने किसका दामन सी रहा है,
एक दुनिया जो
आदमी ने नहीं बनाई थी,
हर एक चीज़
उसमें सुघड़ लगाई थी,
जान थी, जहान था
घर ही मकान था,
लेकिन आज!
सबकुछ साँचे से बना है,
अब घर नहीं,
बस मकान सजा है।
क्यों अतिक्रमण-
कर इतराते हैं?
नियन्ता नहीं अपना-
राज बताते हैं,
जो ग़लत दिखता है,
मिटा जाते हैं।

आनन्द चाहते हैं सभी

आनन्द चाहते हैं सभी,
लेकिन मिलता कहाँ है?
वपनते हैं विष ...
अमृत मिलता कहाँ हैं ?
बनावटी पौधों पर असली,
फूल खिलता कहाँ है?
कपड़े की क्रीज़ बचाने में,
दिल मिलता कहाँ हैं?

अगर आनन्द चाहना है,
अगर दिल मिलाना है,
अगर अमृत चखना है,
अगर फूल खिलाना है,
तब...
मत करो भूल पर भूल,
भूल जाओ दर्दे शूल,
त्याग में आनन्द मनाओ,
परहित में आनन्द मनाओ।
क्योंकि-
कुछ और नहीं है बात,
हम ग़लत लगा देते हैं बाड़,
अपने कर्म नहीं नज़र आते हैं,
बस हमें शत्रु ही नज़र आते हैं।।

आओ प्रकृति परायण बन जाएँ

मानव ने एक दुनिया,
कृत्रिम बना ली।
प्रकृति के विपरीत,
अनचाहे परिवर्तन,
नए-नए परिवेश।
सीमेंट के रास्ते,
गगनचुम्बी इमारतें,
ई-कचरा,
तेज़ाबी वर्षा,
जहरीली खाद,
प्रदूषित जल,
प्लास्टिक का बोलबाला
रासायनिक बहिस्राव
विकास और सुविधाओं के नाम
बोझ से ज़ख़्मी हुए,
पगडण्डियों के पाँव।
आओ चलें...
कहीं देर ना हो जाए?
क्यों न हम सम्भल जाएँ?
पर्यावरण की लटों को सुलझाएँ,
प्रदूषण रहित वातावरण बनाएँ
आओ,
प्रकृति परायण बन जाएँ।।

व्यक्ति

व्यक्ति!
जब प्रसन्न, प्रफुल्लित होता है।
तब...
उसकी देह से,
एक गन्ध है आती,
जो बड़ी सौन्धी है होती।
जैसे पहली वर्षा के बाद
कच्ची मिट्टी से आती है।
क्योंकि तब ...
पृथ्वी प्रसन्न व तृप्त होती है।
किन्तु वैसी गन्ध,
खो चुके हो,
अब शरीरों से,
आती है दुर्गन्ध।

और
उसे छिपाने के लिए,
प्रयोग होने लगी है,
क्रत्रिम सुगन्ध।
जो है, सामने आ जाने दो,
अन्यथा छिपाते हो क्यों?
अन्यथा दबाते हो क्यों??

दीया

भारत की समृद्धि का दीया।
अनेक थपेड़ों,
आक्रांताओं की कर अवहेलना,
जल रहा है।
श्रमिक के स्नेह श्रम,
कृषक के पसीने,
जवान के बलिदान,
नारी की शक्ति,
युवा के इरादे,
और जन-जन के विश्वास से।
अमावस की रात्रि को भेदकर,
अविरल भूमण्डल को प्रकाशित कर,
त्याग और बलिदानी आत्मविश्वास से।
बाती!
न जाने किस ज़माने की,
तेल सोखे हुए है,
सीमा की लघुता का,
बन्धन काट रही,
और प्रज्ज्वलित दीया,
मौन दीपोत्सव मना रहा।

लो भाई, दीवाली आई

ख़ुशी से उछल कूद कर,
लो भाई, दीवाली आई,
बैठे थे साल से सोच कर।

हज़ारों ख़्वाब,
किसी ने कैश लिया,
किसी ने करी उधारी।
लो भाई, दीवाली आई।

घर अपना लीप कर,
मूँजी अपनी पीट कर,
गन्ना अपना सींच कर,
ख़ाली जेब भींच कर,
खर्च ने आवाज़ लगाई
लो भाई, दीवाली आई।

खील मिठाई, बताशे
फुलझड़ी, चर्ख़ी, पटाख़े,
चिराग़ बिक रहे गिनती में
भगवान खड़े पंक्ति में
ग़रीब की आस जगाई
लो भाई, दीवाली आई।

जला चिराग़,
कोड़ी खनखनाई
जुआरी में जान आई,
चोरों की बुहनी कराई
लो भाई, दीवाली आई।

प्यारा है दीवाली का त्यौहार,
ये भी तो समझ मेरे यार,
इसमें कोई जीत गया,
कोई गया हार,
सबने अपनी बोली लगाई,
लो भाई, दीवाली आई।

कंकड़-पत्थरों में उलझ कर रह जाओगे

आँख बन्द करोगे,
बाज़ार के...
विस्तार हो जाएँगे।
मौन बैठना चाहोगे,
विचारों की भीड़,
आक्रमण कर देगी।

लड़ना मत,
दूर खड़े रहना।
जैसे-
कोई राह किनारे खड़ा हो।

न कुछ लेना,
न कुछ देना,
न अपना,
न बेगाना,
बस घड़ी दो घड़ी ऐसे हो जाना।
जैसे-
तुम हो ही नहीं इस संसार में।

जरा सोचना?
कि प्रभाव से जो भी मिलता,
वह सब नकली है ...
स्वभाव से जो मिले वो असली है।
क्योंकि-
तुम्हारे भीतर खदान है।

उसे ढूँढो,
और गहरे में,
और गहरे में जाओ,
जहाँ हो सिर्फ़,
हीरे-मोती और कुछ भी नहीं।

अगर अपने अन्तर्मन में नहीं जाओगे।
तो समझ लेना, बस ....
कंकड़-पत्थरों में उलझ कर रह जाओगे।।

एक फूल खिला

एक फूल खिला,
वह-
किसी के लिए नहीं खिला।
और किसी बाज़ार में ...
बिकने के लिए भी नहीं खिला।
राह से गुज़रे कोई,
और उसकी सुगन्ध ले,
इसलिए भी नहीं खिला,
कोई गोल्ड मेडल उसे मिले,
महावीर चक्र मिले,
पद्मश्री मिले,
इसलिए भी नहीं खिला।

फूल बस खिला,
क्योंकि खिलना आनन्द है,
खिलना ही खिलने का उद्देश्य है।
इसलिए ऐसा भी कह सकते हैं,
कि फूल निरुद्देश्य खिला,
और जब कोई निरुद्देश्य खिलेगा-
तब ही पूरा खिल सकता है।
क्योंकि जहाँ उद्देश्य है,
वहाँ अटकाव हो जाएगा
इसलिए फूल खिल पाता है।।

परी ने ओढ़ा आवरण

परी...।
परी ने ओढ़ा आवरण
आवरण ''पर्यावरण''।
ये कैसा वातावरण?
कैसा आकाश??
धूल, धुआँ चारों ओर,
कैसे लूँ मैं सांस?
लगी जब परी को प्यास
दौड़ी नहर, नदी, नल की ओर
ओह...!
ये कैसा जल?
मिट्टी, धूल, किटाणु आसपास।
परी चली शहर की ओर
भव्य इमारत शोर ही शोर।
परी को लगी जब भूख
दौड़ी खेतों की ओर
आह...!
ये कैसा अन्न?
पॉलीबैग, विदेशी खाद,
मिलावट ही मिलावट,
नहीं आ रहा कोई स्वाद।
क्या खाऊँ?
क्या बनाऊँ??
क्या बताऊँ मैं बात???
इससे तो अच्छा था,

दादी-नानी का ज़माना
कहीं भी आना,
और कहीं भी जाना,
शुद्ध हवा और निर्मल पानी,
सौन्धी मिट्टी,
अम्बुआ की डार,
शुद्ध भोजन देशी खाद,
अब ना जानें कहाँ,
खो गया वो ज़माना।।

राज़ जीवन का

राज़...!
जीवन का,
कभी जाना है?
देखा है आँधी को आते हुए,
झुका देती है जो प्रकृति की धरोहर को,
पर बड़े वृक्ष अकड़ खड़े रह जाते,
मुलायम घास के तिनके झुक जाते।
क्षण भर पश्चात् आँधी थम जाती
तब...
बड़े वृक्ष हो चुके होते हैं धराशाई,
जड़े उखड़ चुकी होती हैं
पर घास...
घास के तिनके मन्द-मन्द मुस्कुराते दिखते हैं।
पूछो-
घास के तिनकों से,
राज़ जीवन का,
जिनको झुका न सकी बड़ी आँधी भी।
पूछो-
उन वृक्षों से,
क्या भूल थी उनकी?
जो लड़ न सके झँझावात से
उत्तर-
उन्होंने झँझावात को माना दुश्मन
और युद्ध लिया मोल
पर तिनके झुक गए मित्र स्वागत में
और रास्ता दिया आँधी के स्वभाव को देख।
बस-
यही राज़ है जीवन का,
घास के तिनके सा,
जो समझ गए वो खिलाड़ी,
जो ना समझे वो हैं अनाड़ी।।

क्यों नहीं भातीं?

आँचल को सँभालती,
सिर को ढापती,
नून, तेल, लकड़ी का...
जमा खर्च रखती।

सर्दी हो या गरमी,
हवा हो या पानी
भागती-दौड़ती,
बच्चों को सम्भालती।
घरनुमा बिल में,
ये औरतें।
अब नीतियाँ बनाती,
ख़्वाबों के पंखों से,
आसमान छूती,
पुलसिया वर्दी में दमख़म दिखाती,
ये लड़कियाँ।

हॉकी हो या क्रिकेट,
गाड़ी हो या यान...
सभी में अपना परचम लहराती,
सारे तोड़कर मिथक,
जब सामने आती।
तब क्यों नहीं भाती?
ये लड़कियाँ।।

प्रश्न हैं हज़ारों

कभी हारी,
कभी भारी।
प्रकृति का,
सृजन है नारी।

अनेक विचार,
अनेक ख़्वाब,
प्रश्न हैं हज़ार???
दिन भर खट-पट,
झगड़ा और जंजाल,
घड़ी की टिक-टिक,
काम ही काम,
लाल चुनर,
सिंदूरी माँग।

समर्पण और सेवा,
फ़रेब और धोखा?

अपने भीतर झाँका,
स्वयं को आँका।

उजड़े जीवन पथ पर,
विवश नारी,
सर्वथा बाध्य,
उत्तर माँग रही
किसने लिख दी,
मेरी जीवन गाथा?
परम्पराओं, प्रथाओं के नाम।

प्रश्न हैं हज़ारों ...
उत्तर नहीं किसी के पास।
क्योंकि,
मूक, बधिर है ये समाज।।

रूप-स्वरूप स्त्री का

अद्भुत है ये कृति,
सुनते ही शक्ति,
रूप उभरता है स्त्री का,
और शक्ति,
शक्ति प्रतीक है सत्ता का।
उस सत्ता का,
जो करती है निर्माण,
पोषण और विकास,
नारी रूप शक्ति का,
या सृजनकर्ता का,
बहुआयामी प्रतिभा का।
पुरुष ने शक्ति को,
स्त्री का वो रूप दिया,
जिसे कहते हैं,
सहचरी और भोग्या,
जानते हैं,
क्या हुआ परिणाम?
परिवारों में विघटन,
रूप हुआ बदरंग।
और यह सत्य भी,
कहाँ ख़त्म हुआ,
कि स्त्री केवल,
दिखती है माँ ।

आख़िर कब तक?

सूर्य सी उष्णता,
चन्द्र सी शीतलता,
देवालय सी पवित्रता,
त्याग, तपस्या, सेवा-प्रेम,
की है नारी प्रतिमा।

माँ, बहन, बेटी, पत्नि...
हर रूप में सताई जाती है।
तन, मन, धन, सब समर्पण,
ठगी नारी जाती है।
संवेदनाओं की अनुभूति,
या त्रासदी जीवन की,
गुनाह करता है पुरुष,
सज़ा भोगती है नारी।
आख़िर कब तक?
दूसरों की ...
इच्छाओं का टोकरा,
लादे फिरती रहेगी,
गृहस्थी के पट्टे पर,
हस्ताक्षर कराती हुई,
अन्तर्विरोध में पिसती रहेगी,
आख़िर कब तक,
पिसती ही रहेगी?

वे सभी सूत्र

युग बदला,
समाज बदला,
और बदली परम्परा।
इस बदलते परिवेश में,
बदली है अवधारणा।
परिणामतः उछाल आया
नारी उत्पीड़न का बाज़ार?
उफ़्फ़!
शोषण का गहराता साया।
हर समय,
हर जगह...
वासनाओं से दमित,
कुरीतियों से अभिशप्त,
पतियों से प्रताड़ित,
अशिक्षा, अँधविश्वास,
से निकलने को आतुर,
चारों ओर शिकारी चातुर।
अश्लीलता भारी,
आज भी बेचारी।
किन्तु अब ...
इतिहास बदलने की ठानी,
उसने समाज बदलने की ठानी।
बात इतनी सी जानी,
नहीं चलने देनी मनमानी।
उसे अब अपनी,
अस्मिता है बचानी।
तो ...
अब नई शुरुआत होगी।
पुरुषवादी समाज का मूल,
नारीवादी सोच होगी।

फ़ौजी हो तुम

फ़ौजी हो तुम,
है तुम्हारा अर्थ,
नहीं हो व्यर्थ।
सिद्ध हो तुम,
फ़ौजी हो तुम,
तुम्हारे कारण हैं हम।
संकट नहीं हैं कम,
धूप छाँव में पहरा देते,
सर्दी गर्मी में तने रहते।
हमारी ढाल हो तुम,
फ़ौजी हो तुम,
ऊँचा हो रहा तिरंगा,
बजा दिया है डंका।
डरते नहीं डराते हो,
दुश्मन मार भगाते हो,
सुरक्षा दीवार हो तुम।
फ़ौजी हो तुम।
तुम संयमित हो,
तुम नियमित हो,
तुम मर्यादित हो,
तुम समर्पित हो,
स्वाभिमान हो तुम,
फ़ौजी हो तुम।

लौटकर आऊँगा

वह जो था ...
रंगों का सैलाब,
अगणित ...
तरंगों का ख़्वाब,
चढ़ती-उतरती,
उम्मीदों का जश्न,
रंगीले,
उन्मादों का एहसास
जब तुमने ...
सजाई थी ...
सुर्ख सिन्दूर से ...
मेरी माँग,
तब-
उफनती,
अनुभूतियों का शिखर,
इतराती-इठलाती,
भावनाओं का संगम,
शोख़ हवाओं में,
झूमता तन...
न जाने कब?
तुममें सिमट गया था,
और तब ...
हुआ था, अनन्त आशाओं,
अभिलाषाओं का संचार।
जब तुमने कहा था,
प्रिये!
अब जाने दो,
आऊँगा ...
ज़रूर-लौटकर,
एक और ...
युद्ध जीत कर,
तब लिखूँगा,
तुम्हारी चुनर पर...
निबन्ध प्रीत का,
तब तुम ...
जश्न मनाना,
एक और जीत का,
परचम लहराना,
अपने उन्माद का,
दीया जलाना,
न बुझने वाला,
एक और जीत का।
अब लौटे तो ...
नहीं तुम्हें याद रहा,
वादा चुनर पे,
निबन्ध लिखने का।
किन्तु लौटे हो...
एक अचरज लिए हाथ,
तिरंगा चुनर लिए साथ।
तुमने जो अनायास लिख दिया है,
मेरी चुनर पे उपन्यास लिख दिया है।

धर्म

इतने धर्म धरा पर
कहाँ से आए हैं?
ईश्वर ने भेजा,
या फिर ...
हमने बनाएँ हैं?
सोचो-विचारो!

यदि भगवान ने इनको भेजा,
तो फिर इतनी दूरी क्यों?
हम आपस में झगड़ें,
धर्मों की मजबूरी क्यों?

अल्लाह से पूछो
मन्दिर क्यों तोड़े जाते हैं?
भगवान से पूछो
मस्जिद क्यों ढहाई जाती हैं,

बावजूद इसके
सब समझते हैं,
रब से है सबका नाता।
उसकी मर्ज़ी बिन
एक पत्ता नहीं हिल पाता।

फिर भी ...
अपनी-अपनी परिभाषा है
समझने और समझाने की जिज्ञासा है।
कुछ कहते जीव ना मारो,
भगवान बड़ा दयालु है।
कुछ जीवों की कुर्बानी देते
कहते अल्लाह की मर्ज़ी है,
अब कौन जाने
अल्लाह-भगवान की बातें
यहाँ तो इन्सान की ही
मर्ज़ी है या ख़ुदग़र्ज़ी है।

क्या हैरान नहीं होगा,
अल्लाह या भगवान,
उसने तो बनाए सिर्फ़ इन्सान,
मगर सारे धर्मों का प्रणेता,
बन गया ख़ुद इन्सान।

अपने-अपने स्वार्थ में,
ईश्वर को दोष ना देना,
सारा स्वार्थ हमारा है,
उसको हिन्दू भी प्यारा है,
मुसलमान भी प्यारा है।।

कैसी होती है माँ?

पूछ रही थी स्वयं से,
स्वयं पर ही झुँझलाती हुई,
स्वयं को समझाती हुई।
कि.....
कैसी होती है माँ?
क़तरा-क़तरा लहू से सींच पाल कर,
देह का रेशा-रेशा काँट-छाँट कर,
जीवन्त रूप देती है एक आकृति को,
चूड़ी वाले हाथों,
मज़बूत कन्धों का नाम,
स्वर लहरी की झंकार,
रणचण्डी का अवतार,
रिश्तों का इतिहास।
अडिग, अडोल, अटल चट्टान,
एक अदद और निश्चित पहचान,
होती है अन्तहीन विस्तार माँ,
बच्चों का प्यारा संसार माँ।

माँ क्या चीज़ है?
ये पूछो उन बच्चों से,
जिनकी माँ नहीं होती,
या ...
जिनकी, माँ ही नहीं होती।

मेरी पहचान

सुनो!
मन है कुछ कहने का,
तुमको पाने का।

तुम कहते हो,
हर चिर-परिचित से,
जीवन संगिनी है ये,
क्या यही पहचान है मेरी,
जो सदियों से चली आ रही।

अब तो उम्र की लकीरें,
दिखने लगीं माथे पर,
फिर भी वही मुस्कान,
वही गर्व है मेरे होठों पर।
फिर भी ...
बातों-बातों में कह जाते हो,
मैं तुम्हारी प्रेरणा की,
राह पर चलता हूँ,
लौटता हूँ साँझ को जब थक-हारकर,
भूल जाता हूँ सब कुछ,
तुम्हारी धड़कनों के एहसास से,
इतना ही नहीं,
जब तुम अपने होठों पर मन्द मुस्कान लिए,
धीरे से मेरे पास ...
और पास चले आते हो
तब भी कह देते हो....
पत्नि नहीं तुम मेरी हमराज़ हो,
मैं सुर, तुम मेरी आवाज़ हो।
जानते हो ...
शर्म से मेरा चेहरा लाल हो जाता है,
प्रफुल्लित मन हरा हो जाता है,
जब प्रीत तुम मुझ पर लुटाते हो,
तब मैं सब हार जाती,
और तुम जीत जाते हो।

सुन रहे हो ना...!
तुम पति ही नहीं मेरी पहचान हो।

क़लम थाम लेती हूँ मैं,
लिख देती हूँ इच्छाएँ, आकाँक्षाएँ,
जीवन के काग़ज़ पर।
साथ मेरा देते रहना यूँ ही,
मेरे हमराज़ बनकर।

बस एक काम अब कर देना,
स्वतन्त्र मेरी पहचान लिख देना,
एक ऐसी पहचान ...
जिसमें तुम्हारे नाम के साथ,
हो मेरा नाम,
जैसे मेरे नाम के साथ,
होता है तुम्हारा नाम।

उसका जीवन

औरत!
समय की आँधी, तूफ़ान,
और बारिशों से बचाकर,
जीवन भर।
दूसरों की राहें,
आलोकित करने को,
आवेशों में उठती-गिरती,
टूटती-सम्भलती।
अपनी सुरक्षा और छत के लिए,
दूसरों के इशारों पर नाचती,
गृहस्थी के पट्टे पर,
हस्ताक्षर कराती है।

कभी-कभी वो अपनी,
इच्छा और आकाँक्षाओं को,
अपने जीवन का,
अभिन्न अंग मानकर,
मधुर और कटु अनुभवों को,
शब्दों में पिरोने की चेष्टा करती है,
लेकिन अभाव/पीड़ा/उपेक्षा/अपेक्षाओं से,
उसके जीवन में अवरोध खड़े हो जाते।
उसका जीवन किश्ती बन जाता,
कि किश्ती किस रूप में, कितनी दूर तक,
धाराओं में बहती जाएगी।
वह हर प्रश्न का उत्तर भी चाहती है,
कि कब तक उसकी साध,
अधूरी....अधूरी रहेगी?
वह दूसरों के हाथों का खिलौना बन,
उनकी इच्छाओं का टोकरा,
लादे फिरती रहेगी,
उत्तर में बस,
है उसका ऐसा ही जीवन,
इसके अतिरिक्त,
कुछ भी नहीं।
कुछ भी तो नहीं।।

रूठा न करो

मेरे अहाते में खड़ा,
वो बरगद का पेड़,
सर्दी, गरमी, तेज़।
हवाओं से लड़ता हुआ,
कभी फलता, कभी फूलता,
कभी शांत, कभी फड़फड़ाता,
अधखिले अंकुरों के बीच,
पत्ते गिराता।
कभी हँसता कभी हँसाता,
कभी अपने पास बुलाता,
समझ उसकी मूक भाषा?
उसके निकट जाते,
उसे सहलाते, धीरे से बतियाते,
और उसकी छाँव तले उससे,
अपना रिश्ता समझाते।

तुम, तुम....!
हो एक वरदान,
हमारी शान,
धूप/बारिश,
तपती दोपहरी में...
परिन्दों की जान हो।
सुनो...!
तुम्हारी सरसराहट से,
खिंची चली आती हूँ,
और तुम्हारे कुम्हलाने का -
अर्थ समझ जाती हूँ,
कब क्या भाता है, तुम्हें?
जान जाती हूँ।

सुनो!
रूठा न करो
क्योंकि तुम!
मेरी ही नहीं इस धरा की शान हो,
सिर्फ़ वृक्ष नहीं प्रकृति की आन हो।
प्रण लेती हूँ मैं,
तुम्हें-
ऐसा रक्षासूत्र बाँधूँगी।
कि तुम।
चारों दिशाओं में,
परचम लहराओ,
और प्रदूषण रहित,

वातावरण बनाओ।।

ऐ मानव

सावधान, ऐ मानव!
मर्यादाएँ टूट रही,
आधुनिक आवरण में,
इक्कीसवीं सदी का,
बिगुल बज रहा।
अमर्यादित जीवन शैली में,
खान-पान, रहन-सहन,
चिर-परिचित, सभी में,
मिलावट की बू आ रही,
इतना ही नहीं, नदी, कुएँ, सरोवर, नाले,
बह रहे हैं मर्यादा से इतर,
बीच रहते हुए किनारों के,
बाहर का रास्ता अपना रहे।
आज कौन क्या कर रहा?
कैसे कर रहा? क्यों कर रहा है?
समझ नहीं आ रहा, बस आसमाँ छूने को,
जी चाह रहा।
साथ-साथ रहकर, अकेले चल रहे,
तंग होती जा रही, अपनेपन की सीमाएँ,
पैसा गढ़ रहा है, सारी परिभाषाएँ।
सिखा रहा नई ज़ुबान, नई मर्यादाएँ,
सावधान! मर्यादाएँ जब ...
भंग होती हैं, तब प्रश्न चिह्न...?
लग जाता है।

मेरी पहचान

मेरी पहचान,
मेरी इच्छाओं,
आकाँक्षाओं की शान।
ईंट-पत्थर का नहीं,
सपनों से भरा अरमान।
आधार मेरे जीवन का,
नित-नए आयामों का
एक निश्चित है पहचान।

नादान थी मैं तब
इसने सम्भाला मुझको
हँसना-रुलाना, मुस्कुराना,
सिखाया मुझको
इसकी छत ही नहीं,
हमराज़ दरों-दीवार है,
मेरा प्यारा घर-द्वार है।
थाम कर हाथ मेरा
आज भी, खड़ा है निर्विकार।

कभी-कभी जब झर जाता पलस्तर,
जोड़ देती, अपने जज़्बातों से
सिर्फ़ घर नहीं, मेरा संसार है
इसी पर टिका मेरा परिवार है।।

कैसा प्रतिदान?

नारी!
धरातल पर गतिमान
त्रिकोणों/आयतों/कुण्डली की मानिन्द
चकारकर... उठती
गिरती, सम्भलती
नवपरिभाषाएँ गढ़ती,
ओढ़ती,
बिछाती, सोचती, विचारती,
परिकल्पनाएँ, सृष्टि सृजन की।
महाशक्ति, गोमुख जीवन गंगा की
तीर्थ/जप/तप/योग
मन्त्रों में श्रेष्ठ, प्रकृति का उपहार,
जिसकी कल्पना बिन,
अधूरा है सृजन।
उसे प्रताड़ित होते देख
खड़ा हो जाता प्रश्न
कि समाज ...
अस्मिता को झकझोरता हुआ
दे रहा कैसा प्रतिदान?
आख़िर कब?कैसे?
उपनामों का सजाए ताज
तिल-तिल घुटती रहेगी,
पल-पल जलती रहेगी
जीती/जागती/दबी
तस्वीर की मानिन्द।
नरी ही पिसती रहेगी।।

लेखिका 'निधि मिथिल' का उपन्यास 'अम्मा' बेहद मार्मिक और सामाजिक ताने-बाने से भरपूर है। जिसे हम आम पाठक के लिए धारावाहिक रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। लीजिए उपस्थित है अम्मा का तीसरा भाग

पहले भाग से आगे.....

पाठ-७

जब अम्मा चंदा के घर पहुँचे तो देखा, सामने ही चंदा के पिता बैठे थे।

अम्मा को देखते ही उठते हुए उन्होंने बोला- 'आओ अम्मा, आज कैसे रास्ता भूल गई?

'अरे पहले बैठने तो दे बंसी।'- अम्मा बोली।

'बैठो अम्मा, आराम से बैठो।'- बंसी बोला।

'आज मैं तुझसे चंदा का हाथ माँगने आई हूँ, मेरे गोपाल के लिए।'- अम्मा बोली।

अम्मा की बात सुनकर बंसी के चेहरे का भाव बदल गया।

'चुप क्यो है कुछ बोल बंसी।'- अम्मा ने कहा।

'क्या कहूँ, अम्मा यह नामुमकिन है।'- बंसी बोला।

'पर क्यों, मेरे गोपाल में कुछ कमी है?' - अम्मा ने पूछा।

अम्मा किसी लड़की का दूसरा ब्याह भी होता है क्या?' - बंसी ने पूछा।

बंसी की बात सुनकर अम्मा पर मानो बिजली गिर गई हो।

'क्या कह रहा है, बंसी दूसरा ब्याह।'- अम्मा बोली।

'हाँ अम्मा, कल ही उसके ससुराल वाले आकर उसे ले गए।'- बंसी बोला।

'उसके तो ६ साल पहले ही फेरे पड़ गए थे।'- बंसी बोला।

'कितना तमाशा किया कलमुँही ने, जैसे-तैसे जबरदस्ती भेजा मैने उसे।'- बंसी बोला।

'देख बंसी उसे गाली मत दे- लड़की जात है।'- अम्मा बोली।

'माफ कर अम्मा, आदत से मजबूर हूँ।'- बंसी बोला।

अम्मा कुछ नहीं बोली और उठकर बाहर आ गई।

'मेरे गोपाल की एक भी खुशी तुझसे देखी नहीं जाती क्या भगवान।'- अम्मा दुखी स्वर मे बोली।

'हे सरोज, मुझे माफ कर दे।'- अम्मा बोली।

'मैय्या, ओ मैय्या, कहाँ खो गई?' - गोपाल ने पुकारा।

अम्मा ने देखा तो गोपाल की आँखों मे भी आसूँ थे। पास ही समीर खड़ा था।

'कहीं नहीं बेटा, जहाँ तू खो गया था वहीं तेरी मैय्या भी।'- अम्मा बोली। गोपाल समझ गया।

'बस मैय्या, मेरे लिए तू ही सब कुछ है।'- गोपाल बोला।

गोपाल बहुत चुप-चुप था। उसे अपनी मैय्या से बिछड़ने का बहुत दुःख था।

'समीर दो-तीन दिन और रुक जाते।'-गोपाल बोला।

'बस इतनी ही छुट्टी मिली थी गोपाल।'- समीर बोला।

सुबह सुबह अम्मा जल्दी उठकर नहा धोकर तैयार हो गई। उसे गोपाल की बहुत चिंता सता रही थी।

'देख गोपाल तू अपना ख्याल रखना। समय पर खाना, मेरी चिंता बिल्कुल मत करना। देर रात तक मत घूमना और..।' अम्मा बोली जा रही थी।

'नहीं मैय्या, तू चिंता मत कर। तू खुश रह, अपना ख्याल रखना, मैं अब छोटा बच्चा थोड़ा ही हूँ। कब से इंतजार कर रही थीं, तू अपने बहू व पोते के पास जाने के लिए, अब जा और खुश रह।' गोपाल रुँआसे से स्वर में बोला।

थोड़ी ही देर में अम्मा और समीर शहर के लिए रवाना हो गए।

गोपाल बहुत देर तक वहीं खड़ा देखता रहा जब तक दोनों आँखों से ओझल हो गए। अम्मा अपना घर, आँगन, गाँव छोड़ चुकी थी।

पाठ-८

कुछ ही घंटों में अम्मा ने अपने-आपको शहर की भीड़ में पाया। चारों तरफ गड़ियों का शोर तो कहीं आदमियों का शोर। अम्मा को यह सब देखकर काफी परेशानी हो रही

थी। उसे गाँव की शान्ति याद आने लगी। तभी रिक्शा एक घर के सामने आकर रुक गया।
'आओ, अम्मा, घर आ गया।'- समीर बोला। अम्मा जैसे ही नीचे उतरी तो देखा अच्छा खासा बड़ा सा बंगला था।
'अच्छा होगा अगर शोभा घर में हो अम्मा को अच्छा लगेगा'- समीर ने मन ही मन सोचा।
तभी समीर ने सामान उतारा। समीर ने रिक्शे वाले को पैसे दिए।
'चलो अम्मा, अंदर।'- समीर बोला। अम्मा समीर के पीछे चल दी। समीर ने घंटी बजाई। जैसे ही दरवाजा खुला सामने विक्की खड़ा था।
'अरे पापा द ग्रेट अ सरप्राईज'।- विक्की बोला।
'बेटा दादी के पैर पड़ो।'
'विक्की ने झट से दादी के पैर पड़े।'
अम्मा ने विक्की को गले से लगा लिया।
अम्मा के आँसू छलक आए।
अपने पोते को देखकर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।
'बिल्कुल तेरे बाबूजी की झलक है।' - अम्मा बोली।
'सच्ची दादी, मैं दादा की तरह दिखता हूँ ना?' - विक्की ने पूछा।
'हाँ बेटा।'-अम्मा बोली।
'दादाजी बहुत हैंडसम होंगे।'- विक्की बोला।
'नहीं बेटा, वे किसी से कम नहीं थे।'- अम्मा बोली।
विक्की जोर से हँसा- ...अरे दादी हैंडसम मतलब सुंदर होता है।'
अम्मा भी हँसते हुए बोली- 'मुझे ये अंग्रेजी के शब्द नहीं आते।'
'चलो दादी, अब आराम से बैठो, मैं पानी लेकर आता हूँ।'- विक्की कहकर अंदर चला गया।
'अरे समीर, तूने तो इसका नाम विक्रमादित्य रखा था ये विक्की कहाँ से हो गया?' - अम्मा ने पूछा।
'अम्मा शहरों में छोटे नामों से ही पुकारा जाता है। आजकल यही फैशन है।'- समीर बोला।
'बहू नहीं दिख रही है।'-अम्मा ने पूछा।
तभी विक्की पानी ले आया और बोला- 'मम्मी बाहर गई है।'
'अरे उसे क्या मालूम हम आज आ ही रहे हैं।'- समीर अम्मा के चेहरे के भाव पढ़ते हुए बोल पड़ा।
'हाँ उसे क्या मालूम?' - अम्मा बोली।
'चलो अम्मा, मुँह हाथ धो लो।' - समीर बोला।
तभी समीर ने विक्की को अम्मा का सामान उठाने के लिए इशारा किया।
विक्की सामान उठाकर अंदर कमरे में ले गया। अम्मा पीछे-पीछे आ गई।
'बहुत संदर कमरा है, दीवारें कितनी अच्छी है बेटा।' -अम्मा बोली।
'क्यो दादी गाँव में ऐसी दीवारें नहीं हैं क्या?' - विक्की ने पूछा।
'कहाँ बेटा, वहाँ तो मिट्टी के घर होते हैं।'- अम्मा बोली।
'तू तो बचपन में गाँव आया था वह भी सिर्फ दो घण्टे के लिए, तुझे क्या याद रहेगा गाँव, वहाँ की दीवारें।'- अम्मा बोली।
'दादी, छुट्टियों में मम्मी-पापा बाहर घुमाने ले जाते थे, इसलिए गाँव आना नहीं होता था।'- विक्की बोला।
तभी दरवाजे की घण्टी बजी।
'मम्मी आ गई शायद।'- विक्की बोला।
विक्की दरवाजा खोलने चला गया।
'मम्मी कितनी देर कर दी?दादी और पापा आ गए हैं।'- विक्की बोला।
'पता है, तुम्हारे पापा ने सारा मूड ऑफ कर दिया। अच्छी खासी रमी में जीत रही थी फोन करके बुला लिया।'- शोभा गुस्से में बोली।
'पापा कहाँ हैं?' - शोभा ने पूछा।
'अपने कमरे में।'-विक्की ने जवाब दिया। तभी शोभा अपने कमरे की तरफ मुड़ी।
'अरे समीर, इतनी जल्दी क्या था कि फोन करके बुलाया, मैं तो आने ही वाली थीं।'-शोभा बोली।
'अरे-सॉरी बाबा, इतने दिन बाद पति से इसी तरह मिलते हैं क्या?- समीर हँसते हुए बोला।
'अच्छा ये बताओं एक दिन का बोला और तीन दिन क्यों लगा दिए?' - शोभा ने पूछा।
'क्या करता, जाते ही थोड़े न दुकान का सौदा करता।'- समीर ने समझाते हुए कहा।
'तो क्या सौदा हो गया?' - शोभा खुशी से बोली।
'हाँ।'- समीर बोला।
'चलो ये अच्छा हुआ।'- शोभा बोली।
'अपनी मदन इनलॉ से मिली क्या?' - समीर ने पूछा।
तभी बाहर से आवाज आई- 'समीर बेटा।'
'आया अम्मा।'- समीर बाहर चला गया।
'बहू आ गई क्या?' - अम्मा ने पूछा।
'हाँ अम्मा, मुँह हाथ धोकर आ रही है।'- समीर ने कहा।
थोड़ी ही देर में शोभा कपड़े बदलकर आ गई- ?'नमस्ते सासूजी'- अम्मा के पैर पड़कर बोली।
'सदा सुहागिन रहो।'- अम्मा ने आशीर्वाद दिया।
'कितनी दुबली हो गई हो।'- अम्मा ने पूछा।
'मोआ होना भी तो अच्छा नहीं है।'- शोभा ने जवाब दिया।
'चलो मैं आपके लिए चाय-नाश्ता बनाती हूँ।'- शोभा कहकर किचन में चली गई।
तभी समीर पीछे आ गया। 'शोभा अगर तुम अम्मा बोलती तो ज्यादा अच्छा लगा।'- समीर धीरे से बोला।
'अम्मा कितना लो ग्रेडेड शब्द है।'- शोभा बोली।
धीरे बोलो अम्मा सुन लेगी तो उसे बुरा लगेगा।'- समीर बोला।
समीर चुपचाप बाहर आ गया। देखा विक्की अम्मा से बातें कर रहा है।
थोड़ी ही देर में शोभा चाय-नाश्ता लेकर आ गई। सभी नाश्ता करने बैठ गए।
'अगर आपको, खाने में कुछ अलग चाहिए तो मुझे बता देना।'- शोभा अम्मा की तरफ देखकर बोली।
'बिटिया, बुढ़ापे में तो वैसे भी कुछ नहीं खाया जाता जो बनेगा थोड़ा-सा खा लूँगी।'- अम्मा बोली।
'पर दादी कुछ ना कुछ तो होगा जो आपको अच्छा लगता होगा?' विक्की ने पूछा।
'अरे बेटा खाने की उमर तुम्हारी है, अब तो दाँत भी साथ नहीं देते।'- अम्मा बोली।
'विक्की, तुम पढ़ाई में ध्यान दो, आखिरी साल है।'- शोभा बीच में बोली।
'हाँ मम्मा, थोड़ी देर दादी से बातें करके पढ़ने जाता हूँ।'- विक्की बोला।
शोभा चाय पीकर चली गई। विक्की पढ़ाई करने चला गया। समीर अम्मा के पास आकर बैठ गया।
'पता नहीं, गोपाल कैसा होगा?' -अम्मा बोली।
अब बच्चा तो है नहीं, ठीक ही होगा।'- समीर ने जवाब दिया।
'उसका मेरे सिवा है ही कौन।'-अम्मा बोली।
'और उसे मेरे बगैर रहने की भी आदत नहीं।'- अम्मा आगे बोली।
समीर चुपचाप सुनता रहा।
अम्मा, कल से मेरा ऑफिस शुरु हो जाएगा।'- समीर बोला।
'हाँ बेटा, खूब मन लगाकर काम करना, खूब तरक्की कर, आज तेरे बाबूजी तेरा ठाट-बाट देखते तो कितना गर्व करते।'- अम्मा बोली।
तभी शोभा आ गई।
'बिटिया क्या कर ही हो?' - अम्मा ने पूछा।
खाने की तैयारी - शोभा बोली और किचन में चली गयी।
'मैं कुछ मदद करूँ?' - अम्मा ने पूछा।
'आपको क्या पता कहां क्या रखा है?' - शोभा बोली।
'समीर और विक्की की खाने की आदतें भी तो आपको पता नहीं।' - शोभा बोली।
'टीवी ऑन कर देती हूँ आप टीवी देखो।' - फिर शोभा ने टीवी ऑनकर दिया।
'विक्की कहाँ है?' - अम्मा ने पूछा।
'क्लास गया है।'- शोभा बोली।
अम्मा सोफे पर बैठ गई। टीवी देखने में भी मन नहीं लग रहा था।
काफी बेचैनी सी हो रही थी। तभी समीर आ गया तो अम्मा को अच्छा लगा। थोड़ी देर दोनो ने टीवी देखा फिर खाना खाने चले गए। ऐसे ही पूरा दिन निकल गया।

पाठ-६

अगले दिन अम्मा की सुबह पाँच बजे नींद खुल गई। बाहर अभी भी अंधेरा था। मुहँ हाथ धोकर किचन में गई। चाय बनाने के लिए तभी हाथ पतीला छूट गया। आवाज सुनकर शोभा दौड़कर किचन में आई।
'ओफ्फो सासुजी, सुबह-सुबह क्या शोर मचा रखा है?-शोभा बोली
समीर की नींद खुल जाएगी तो बहुत गुस्सा होंगे।- शोभा बोली।
'बिटिया, वो चाय बना रही थीं।'- अम्मा बोली
'मुझे रात को बताना था कि आपको इतनी सुबह चाय चाहिए।'- शोभा बोली।
'तुम मुझे दे दो और जाकर सो जाओ।'-अम्मा बोली।
'अब क्या नींद आएगी, आप जाओं में चाय बना देती हूँ।'- शोभा बोली।
अम्मा बाहर आकर बैठ गयी। थोड़ी ही देर में शोभा चाय बनाकर ले आई।
आठ बजे समीर और विक्की दोनों उठ गए।
उठते ही समीर ने शोभा से पूछा- 'अम्मा कब उठी?'
'कब उठी क्या सुबह सुबह डिस्टर्ब कर दिया।'- शोभा बोली।
'क्यों क्या हुआ?' -समीर ने पूछा।
'अरे, सुबह पाँच बजे किचन में पतीला गिरा दिया मुझे लगा कौन घुस गया, जाकर देखा तो तुम्हारी अम्मा थी।'- शोभा बोली।
खैर छोड़ो नाश्ते में क्या है आज मैडम।'- समीर ने शोभा से मुस्कुराते हुए पूछा।
'आलू के पराठे।'- शोभा बोली।
'वाह चलो नहाकर आता हूँ मुझे देर हो रही है।'-समीर बोला।
'हाँ चलो जल्दी नहाकर आओ।'- शोभा बोली।
'अच्छा सुनो, मैं सोच रहा हूँ आज लौटते वक्त अम्मा के लिए दो साड़ियाँ ले आऊँ'- समीर बोला।
'क्यों क्या उनके पास साड़ी नहीं है।'- शोभा ने पूछा।
'हैं तो पर एक-दो जगह से फटी है।'-समीर बोला।
'रहने दो फालतू खर्च क्यों करते हो मेरे पास पड़ी हैं दो

साड़ियाँ, मैं उन्हें दे दूँगी।'- शोभा बोली।
'ठीकहै,यह भी ठीक रहेगा।'- समीर कहकर नहाने चला गया।
'नाश्ता कर समीर अम्मा के कमरे में गया। अम्मा मैं ऑफिस जा रहा हूँ कुछ चाहिए तो लौटते वक्त ले आऊँगा।'-समीर अम्मा से बोला।
'कुछ नहीं बेटा।'-अम्मा बोली।
थोड़ी ही देर में समीर ऑफिस चला गया। शोभा ने अम्मा व विक्की को भी नाश्ता दिया। विक्की नाश्ता करके कॉलेज चला गया और अम्मा अपने कमरे में। कुछ देर बाद शोभा दो साड़ी लेकर अम्मा के कमरे में आई।
'सासूजी, ये लीजिए, आज से ये साड़िया ही पहनना, वो फटी हुई नहीं, किसी ने देखा तो क्या बोलेगा।'- शोभा बोली।
अम्मा कुछ नहीं बोली। शोभा साड़ी रखकर चली गई। थोड़ी देर में फिर शोभा आई और बोली-'मैं बाजार जा रही हूँ आप अंदर से दरवाजा लगा लो जब घण्टी बाजाऊंगी तभी खोलना।'
'ठीक है।'- अम्मा बोली।
शोभा के जाने के बाद अम्मा ने दरवाजा लगा लिया। अंदर आकर उसे रोना आ गया। उसे गोपाल की याद आ रही थी। यहाँ कुछ भी अपना नहीं लग रहा था। उसे अपना गाँव याद आ रहा था। यह सब समीर को भी कैसे बोलती उसे दुख होगा यही सोचती रही।
कुछ देर में बेल बजी, अम्मा ने दरवाजा खोला तो देखा शोभा हाथ में काफी सामान लेकर खड़ी थी।
'सासूजी मेरी मदद कीजिए, ये सामान किचन में रख दीजिए।'- शोभा बोली।
अम्मा ने थोड़ा सा सामान लिया और किचन में रख दिया।
'बहू!' - अम्मा बोली।
'हाँ।'- शोभा ने जवाब दिया।
यहाँ आसपास मंदिर है क्या?' - अम्मा ने पूछा।
'हाँ, यहाँ घर के पीछे ही है।'-शोभा ने जवाब दिया।
'अच्छा हुआ, मैं थोड़ी देर जाकर आती हूँ।'- अम्मा बोली।
रुकिए बाहर चलकर मैं दिखा देती हूँ। नहीं तो रास्ता भूल गई तो आपके बेटे को लगेगा मैंने आप पर ध्यान नहीं दिया।'- शोभा बोली।

पाठ-१०

कुछ देर में ही अम्मा घर के पीछे वाले मंदिर में पहुंच गई। बहुत बड़ा मंदिर था। सामने ही सुंदर कृष्ण भगवान की मूर्ति थी। जैसे ही अम्मा की नजर कृष्ण भगवान की मूर्ति पर पड़ी उनकी आँखे भर आई।
'हे प्रभु, न जाने मेरा गोपाल कैसा होगा।'- अम्मा ने मन ही मन पूछा। जो ठीक से खाना खाता भी है कि नहीं, कितनी कठोर मैय्या हूँ मैं। अपने कान्हा की कि उसे अकेले छोड़कर यहाँ आ गई।
'मेरे गोपाल की रक्षा करना, कृष्ण।'- अम्मा हाथ जोड़कर बोली।
'अम्मा जी, प्रसाद लीजिए।'- तभी पंडित जी ने आवाज लगाई। अम्मा ने हाथ बढ़ाकर प्रसार ले लिया। प्रसाद लेकर अम्मा वहीं बाहर चबूतरे पर बैठ गई। चारों तरफ नजर दौड़ाई। बहुत सारी गाड़ियाँ आ-जा रही थीं। सभी लोग अपने-अपने कामों में व्यस्त थे। किसी को किसी के लिए फुर्सत नहीं थी। सामने ही चाय की दुकान थी। उसी दुकान के बगल में एक लड़का नारियल बेच रहा था।
अम्मा चुपचाप बैठ सब देख रही थी कि तभी पीछे से आवाज आई- 'माँ जी नारियल पानी पीएंगी क्या?पीकर देखिए, बहुत मीठा है और केवल ५ रुपए में।'
अम्मा ने मुड़कर देखा तो वही लड़का जो नारियल पानी बेच रहा था उसके पास खड़ा है।
'नहीं बेटा, मेरे पास तो एक रूपया भी नहीं है।'- अम्मा ने जवाब दिया।
'आपको पहले कभी इस मंदिर में नहीं देखा, क्या आप कहीं बाहर से आई हैं।'- लड़के ने पूछा।
'हाँ बेटा, पहली बार शहर आई हूँ।'- अम्मा बोली।
'कहाँ किसके पास।' -लड़के ने पूछा।
'अपने बेटे के पास, बैंक में बहुत बड़ा अफसर है, वहीं मुझे गाँव से यहाँ लाया है।'- अम्मा बोली।
'अरे वही न जो पीछे वाले बंगले मे रहते हैं-विक्की भैया के पिता जी।'- लड़के ने कहा।
'तू कैसे जानता है उन्हें?' - अम्मा ने उत्सुकता से पूछा।
'माँ जी, विक्की भैय्या अक्सर आते हैं। नारियल पानी पीने और मैं चार साल का था तबसे यहाँ हूँ।'- लड़के ने अम्मा को बताया।
'मैं आस-पास के सभी लोगों को जानता हूँ।'- लड़का आगे बोला।
एक बात तो बताओ, तुम्हारा नाम क्या है?' - अम्मा ने बड़े प्यार से पूछा।
'मेरा नाम गुड्डू है।'-वह बोला।
'माता-पिता कहाँ है तुम्हारे?' -अम्मा ने पूछा।
'नहीं मालूम, कभी देखा नहीं उनको, मैं तो पास ही अनाथ आश्रम में रहता हूँ। मुझे पता चला कि जब मैं सात-आठ महीने का था तब कोई मुझे आश्रम के बाहर छोड़ गया था।
'बेचारा बच्चा।'- अम्मा ने मन ही मन सोचा।
'अच्छा माँ जी लीजिए नारियल पानी पीजिए।'- गुड्डू बोला।
'पर बेआ मेरे पास तो पैसे है ही नहीं।'- अम्मा बोली।
'आप भी कैसी बात करती हैं माँ जी, बेटा कहती हैं और पैसे की बात करती हैं। अब लीजिए और आराम से बैठकर नारियल पानी पी लीजिए।'-गुड्डू ने बड़े प्यार से कहा।
गुड्डू ने नारियल अम्मा के हाथ में पकड़ा दिया।
अम्मा ने पानी पी लिया।
'बहुत मीठा है बेटा।'- अम्मा बोली।
'आपको अच्छा लगा मेरे लिए यही बहुत है।'- गुड्डू खुश होते हुए बोला।
'कितना छोटा है पर दिल कितना बड़ा है।'- अम्मा ने मन में सोचा।
'अब चलती हूँ बेटा, नहीं तो बहू को चिंता लगेगी।'-अम्मा उठते हुए बोली।
'फिर आइएगा माँ जी।'- गुड्डू बोला।
'कल आऊँगी बेटा।'- अम्मा बोली।
'बहुत सालों बाद किसी ने बेटा बोला है।'- गुड्डू भावुक होकर बोला।
अम्मा ने उसके सिर पर हाथ घुमाया और घर की ओर चल दी। घर पहुँचकर देखा तो दरवाजा बंद था। अम्मा ने घंटी बजाई और खड़ी रही, कोई नहीं आया। अम्मा ने फिर से दो बार घंटी बजाई, तब भी कोई नहीं आया फिर जैसे ही घंटी बजाई, शोभा ने दरवाजा खोला और बोली-'ओफ्फो सासुजी, अंदर वालों को एक बार में घंटी की आवाज सुनाई दे जाती है, सब्जी काट रही थीं जरा सब्र तो किया होता।
अम्मा को शोभा का स्वर कुछ अच्छा नहीं लगा। वह चुपचाप अंदर कमरे में जाकर बैठ गई।
'और हाँ आपको मैने कल जो साड़ियाँ दी थी वो ही पहना करो, ये फटी हुई क्यों पहनी है, लोग देखेगें तो समीर का नाम खराब होगा।'- शोभा बोली।
अम्मा ने साड़ी बदल ली। साड़ी बदलकर पाठ किया और थोड़ी देर बाद लेट गई। लेटते ही अम्मा को नींद आ गई।
'दादी, दादी, उठो चलो खाना खाते हैं।'- विक्की की आवाज सुनकर अम्मा की नींद खुल गई।
'कब आया मेरा बच्चा।'-अम्मा ने बड़े प्यार से पूछा।
'बस अभी आया हूँ।'-विक्की बोला।
'चलो दादी उठो न बहुत जोरो की भूख लगी है।'- विक्की जिद करते हुए बोला।
जैसे ही अम्मा खड़ी हुई विक्की ने पूछा- 'अरे दादी यह कौन सी साड़ी पहन रखी है?'
'क्यो बेटा, पंसद नहीं आई ना शोभा ने कल ही दी है मुझे पहनने के लिए।'- अम्मा ने बताया।
दादी की बात सुन विक्की शोभा के पास गया और बोला- 'मम्मी, आपको कुछ लगता नहीं है, २० दिन पहले ही तो बोली थी कि वह साड़ी आप बर्तन वाली बाई को दोगी और वही साड़ी आपने दादी को दे दी है।'
'विक्की, बहुत मुँह चलता है तुम्हारा, बड़ों के बीच में नहीं बोलते और जरा धीमे बोलना सीखो।'- शोभा गुस्से में बोली।
'मम्मा, यह ठीक नहीं है।'- विक्की गुस्से में कमरे से बाहर निकल आया।
विक्की दादी के पास आकर बैठ गया। थोड़ी ही देर में शोभा ने बताया खाना लग गया है।
'चल विक्की तुझे भूख लगी थी ना, चल खाना खा ले।'
'चलो दादी।'- विक्की बोला। दोनो खाना खाने बैठ गए।
'अच्छा दादी, एक बात तो बताओ, आपको सबसे ज्यादा खाने में क्या पंसद है?' -विक्की ने पूछा।
'बेटा अब तो बुढ़ापे में जो कुछ होता है थोड़ा सा खा लेती हूँ।'- अम्मा ने जवाब दिया।
'अच्छा दादी, अब तो बताओं आप कहाँ तक पढ़ी हो?' -विक्की ने पूछा।
विक्की की बात सुनकर अम्मा हँस पड़ी।
'बताओ न दादी, क्या आप स्कूल गई हो?'- विक्की ने फिर पूछा।
'हाँ बेटा, मैं पाँचवीं तक पढ़ी हूँ, पहले तो इतना भी नहीं पढ़ती थीं लड़कियाँ। वह तो मैं सात भाइयों में अकेली बहन थीं, इसलिए लाड़ली थीं, सो थोड़ा बहुत पढ़ ली।'- अम्मा ने बताया।
'बाप रे,दादी आप आठ भाई बहन थे।'- विक्की आश्चर्य से बोला।
'हाँ बेटा, पहले तो इतने ही बच्चे होते थे, अब तो एक या दो।'- अम्मा बोली।
'विक्की जल्दी खाना खाओ, बातें बाद में कर लेना।'- शोभा ने किचन से आवाज लगाई।
'चलों बेटा, पहले खाना खा ले फिर कमरे में चलकर बातें करेगें।'- अम्मा बोली।
खाना खाकर दोनो कमरे में आ गए।
'बेटा, तू कॉलेज नहीं गया?'- अम्मा ने पूछा।
'नहीं दादी, दोपहर तीन बजेसे क्लास है।'-विक्की ने बताया।
'अच्छा दादी यह तो बताओं पापा गाँव में पढ़ हैं ना?' -विक्कीने पूछा।
'बेटा, समीर गाँव में १०वीं क्लास करने के बाद शहर आया था, फिर कभी गाँव नहीं लौटा।'-अम्मा बोली।

श्लेष अगले अंक में.....

ओपन डोर राष्ट्रभक्ति गीत पढ़ें और निर्णय करें

कविगण अपनी रचनाओं को शामिल न करें, जबकि पाठक को जो भी रचनाएं अच्छी लगें उनके बारे में तीन रचनाएं एवं उनके लेखक का नाम प्राथमिकता के क्रम में नीचे लिखें-

७ जुलाई, २०२२ अंक में प्रकाशित

१. प्रतियोगिता में शामिल राष्ट्रभक्ति गीत में से कौन-सा गीत आपको अच्छा लगा? किन्हीं तीन राष्ट्रभक्ति गीत के शीर्षक एवं कवि का नाम लिखें-

	राष्ट्रभक्ति गीत का शीर्षक	कवि का नाम
१.	.....	.....
२.	.....	.....
३.	.....	.....

हस्ताक्षर निर्णयकर्ता

नोट- सभी कवियों को यह क्रम बनाकर भेजना अनिवार्य है। यदि कोई कवि अपना निर्णय नहीं देता है तो उसे 'ओपन डोर' साप्ताहिक की 'राष्ट्रभक्ति गीत प्रतियोगिता' से बाहर मान लिया जाएगा। बराबरी की स्थिति में संपादक मंडल का निर्णय सभी को मानना होगा। आप अपने निर्णय प्रारूप का फोटो खींचकर मोबा. 9897742814 पर वाट्स एप करें।

निर्णयकर्ता का नाम व पता

प्रथम विजेता को ११००/-, प्रमाण-पत्र द्वितीय विजेता को ५०१/-, प्रमाण-पत्र तृतीय विजेता को २५१/-, प्रमाण-पत्र

सभी प्रतिभागियों को प्रतिभाग प्रमाण-पत्र

'ओपन डोर' साप्ताहिक के नियमित ग्राहक बनें

Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

समयावधि	रुपए डाक खर्च सहित	पीडीएफ/प्रिंट अंक	सभी विशेषांक
वार्षिक	- १०००	४८/३८	४
द्विवार्षिक	- १६००	६६/७६	८
पंचवार्षिक	- ४८००	२४०/१६०	२०

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

आगामी आयोजन

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
₹ 200 वर्ष : 4 अंक : 3 जून-अगस्त, 2022
शोधादर्श
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की पत्रिका **'शोधादर्श'** (त्रैमासिक) में **साहित्य, मानविकी आदि विषयों** पर शोधपरक लेखों का प्रकाशन होता है, जिससे शोध प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है और उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों के साथ ज्ञानपिपासु पाठकों के ज्ञान में भी वृद्धि होती है। पत्रिका का आगामी अंक 'आजादी का अमृत महोत्सव' को ध्यान में रखते हुए **'जनपद बिजनौर'** विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाना है। जिसमें जनपद बिजनौर का इतिहास, साहित्य, भूगोल, प्रतिभा, स्वास्थ्य, शिक्षा, पत्रकारिता, उद्योग, राजनीति, संस्कृति एवं समाजसेवा आदि विषय समाहित रहेंगे। जिसमें आप अपने विभाग, निकाय, संस्थान, मंत्रालय, प्रतिष्ठान, उत्पाद, उत्कृष्ट सेवाओं आदि की विशिष्टताओं तथा उनकी प्रगति से संबंधित विज्ञापन देकर उनका प्रचार प्रसार जन–जन तक

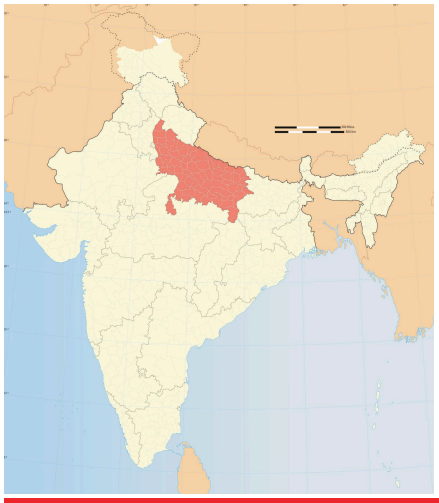

जून–अगस्त 2022 (बिजनौर विशेषांक) में संभावित सामग्री

- जनपद बिजनौर का भौगोलिक परिचय
- जनपद बिजनौर का इतिहास
- स्वतंत्रता आंदोलन एवं जनपद के स्वतंत्रता सेनानी
- जनपद बिजनौर का साहित्य एवं साहित्यकार
- जनपद बिजनौर की राजनीति एवं राजनेता
- जनपद बिजनौर की पत्रकारिता एवं पत्रकार
- जनपद बिजनौर में समाजसेवी एवं सामाजिक संस्थाएं
- जनपद बिजनौर में शिक्षा एवं विद्यालय
- जनपद बिजनौर में स्वास्थ्य सेवाएं
- जनपद बिजनौर में सहकारिता
- जनपद बिजनौर में महिला सशक्तीकरण
- जनपद बिजनौर के लोकगीत
- जनपद बिजनौर और सिने जगत
- जनपद बिजनौर और खेल जगत
- जनपद बिजनौर में कृषि
- जनपद बिजनौर के उद्योग धंधे
- जनपद बिजनौर की संस्कृति
- जनपद बिजनौर के प्रसिद्ध मेले
- जनपद बिजनौर के ऐतिहासिक एवं पौराणिक स्थल
- जनपद बिजनौर का नगरीय विकास
- जनपद बिजनौर का ग्रामीण विकास
- जनपद बिजनौर की नदियाँ
- जनपद बिजनौर में वन एवं पर्यावरण आदि
- अन्य ऐसे विषय जो आवश्यक समझे जाएंगे

जून–अगस्त 2022
बिजनौर विशेषांक

सितम्बर–नवम्बर 2022
दुष्यंत कुमार त्यागी विशेषांक

दिसंबर 2022–फरवरी 2023
प्रो. ऋषभ देव शर्मा विशेषांक

अपने शोध लेख समयानुसार

shodhadarsh2018@gmail.com
पर भेजने का कष्ट करें।
अधिक जानकारी के लिए
9897742814 पर सम्पर्क करे

शोध लेखों की त्रैमासिक पत्रिका 'शोधार्दश' की सदस्यता लेकर प्रकाशन और पढ़ने का लाभ उठाएं। प्रकाशनोपरांत पत्रिका आपके पंजीकृत पते पर रजिस्टर्ड पार्सल से पहुंच जाएगी।

वार्षिक सदस्य – 1000 रुपए
पांच वर्ष – 4500 रुपए

Name - Shodhadarsh
Bank - Indian oversees bank
Branch - Najibabad
Account no - 368602000000186
IFSC - IOBA0003686

ऑनलाइन सदस्यता के लिए फार्म भरें
https://forms.gle/B4T6AKwXxRePSNsz9

शोधादर्श में प्रकाशित विज्ञापन रेट

क्रम	विज्ञापन स्थान संपूर्ण पृष्ठ	मूल्य रुपए में	विज्ञापन स्थान आधा पृष्ठ	मूल्य रुपए	विज्ञापन स्थान चौथाई पृष्ठ	मूल्य रुपए
1	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	26,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	13,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	7,000.00
2	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	22,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	11,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	6,000.00
3	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	20,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	10,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	5,000.00
4	श्वेत श्याम पृष्ठ	10,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	5,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	2,500.00

मकैनिकल डाटा– 10.75x8.5 inch, कवर–आर्ट पेपर कलर प्रिंटिंग, अंदर पेपर–मैफलिथो श्वेत–श्याम प्रिंटिंग, आवश्यक होने पर अंदर के कुछ पृष्ठ रंगीन भी प्रकाशित होते हैं। प्रिंटिंग एरिया–9.75x7 inch (नोट- पत्रिका के आकार, छपाई और उपयोगी काग़ज़ में बदलाव आवश्यकतानुसार संभव है)

प्रकाशनाधीन

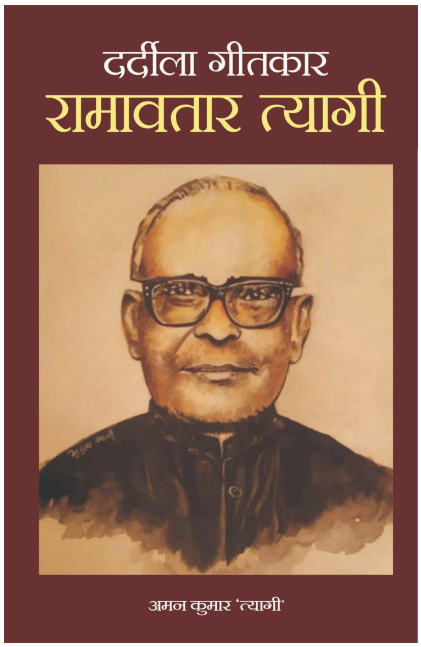

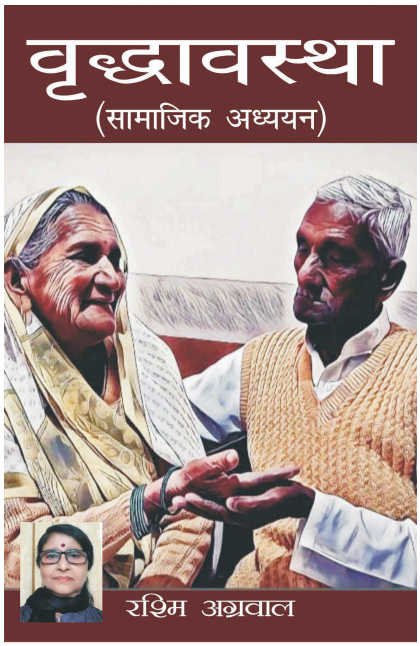

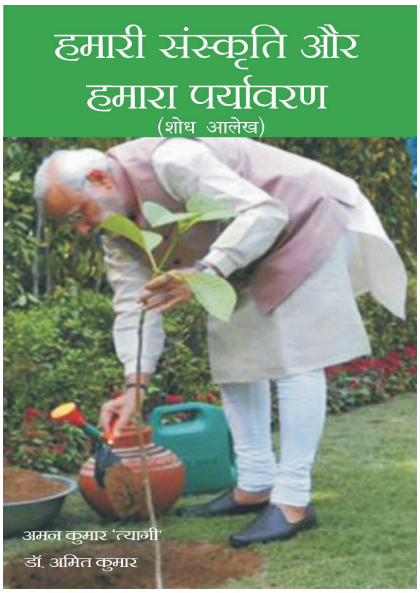

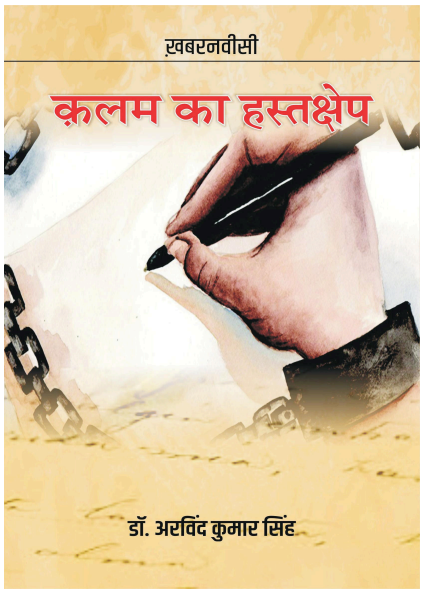

स्थापना 14 फरवरी, 2021 Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703
रजिस्टर्ड 08 जुलाई, 2021

YouTube OPEN DOOR NEWS ओपन डोर Blog-opendoorweekly.blogspot.com

आपकी किताब आपके द्वार...
प्रकाशन
ओपन डोर
नजीबाबाद

समाचारपत्र भी
पुस्तकें भी

खुले दिमाग़ के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814